CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

35/141

श्रीगीतगोविन्द आम्नाय-ग्रन्थालय,
करौंदी
वाराणसी-5

आम्नाय-ग्रन्थालय,
करौंदी
वाराणसी-5

...ालय
...राणसी-५
.../41

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1.1

आम्नाय-ग्रन्थालय,
[illegible], काशी
[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

Presented To Dr. Ku. Prem Lata ji

* श्रीराधाकुंजविहारिणे नमः *

त्सारस्वतकुलाब्धि कौस्तुभ जगद्गुरुश्रीजयदेव महाप्रभु

प्रणीतं तद्वंशज योगिराज श्रीरामराय गोस्वामि

कृत व्रजभाषा पदावलीयुतं

श्रीगीतगोविन्दम्

35141

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदा
वाराणसी-5

ह ग्रन्थ श्रीमन्माध्वगौडेश्वराचार्य गो० श्रीयमुनावल्लभजी
की कृपापात्र भक्तिमूर्ति श्रीसिराजदेवी (चि० चेतन
की माँ) ने अपने स्व० पति श्रीयुगलकिशोरजी
कथूरिया अमृतसर की स्मृति में
छपवाया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0..In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक—
श्रीसिराजबाई
अमृतसर

संशोधक—
आचार्य श्रीदेव[illegible]नन्दन शा० एम० ए०, साहित्य रत्न

चतुर्थावृत्ति —१०००
श्रीकृष्णचैतन्य जयन्ती सं० २०३१

आम्नाय-ग्रन्थालय,
परशु. द्वि, करौंदी
वाराणसी-5

न्योछावर ३) रु०

मुद्रक :
श्री प्रेम हरी प्रेस, वृन्दावन

★

प्राप्ति स्थान—
डा० बी० एन० गोस्वामी
गोविन्द मेडीकल स्टोर, मल्लीगंज
श्रीधाम वृन्दावन

अन्य पते—
श्रीजयदेव गीतगोविन्द मन्दिर
श्रीजयदेव समाधि वाड़ी,
दुसायत, श्रीधाम वृन्दावन
श्रीयुगलकिशोरजी कथूरिया
[illegible]४ नं० प्रकाशचन्द रोड, अमृतसर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

श्रीजयदेव कालीन भारत में बंगाल और पंजाब का

❀ इतिहास ❀

कल्याण मासिक पत्र वर्ष ३३ अङ्क १० से ७ अङ्कों में छपा यह लेख है।

जिस समय पंजाब में महमूद गजनवी के वंशजों का सिंध पर अरब जाति का, दिल्ली में तोमर वंश का, अजमेर में चौहान, कन्नौज में राठौर, गुजरात में बघेले, बुन्देलखण्ड में चन्देले, विहार में पाल और बंगाल में सेन वंश का शासन था।

उसी समय हिन्दुओं की फूट के कारण महमूद गजनवी ने सत्रह बार भारत को लूटा। अनेकों देवालय नष्ट किए उनके देवताओ को नदी तलावों में डाल दिया। एक सौ पचास वर्ष तक इसी का वंश राज करता रहा, किन्तु गजनी और हिरात की पहाड़ियों में गोर लोगों का भी राज्य था। बारहवीं सदी में गियासुद्दीन गोरी ने गजनी का राज ले लिया और उसके छोटे भाई मुहम्मदगोरी ने भारत में मुस्लिम राज की स्थापना की।

विक्रम सं० १२३१ में मुहम्मद गोरी ने सवसे प्रथम मुलतान लिया, १२३५ में पेशावर १२३८ मे सिंध और १२४२ में महमूद के वंशज खुशरोमलिक को जीतकर लाहौर ले लिया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उस समय श्रीजयदेव महाप्रभु के पुत्र श्रीकृष्णदेव प्रभु लाहौर में थे, आपने सिद्धान्त-शतक में वर्णन किया है।

(श्लोकाः)

क्वविप्लवस्य समयः क्व च कृष्णतत्त्वं,
ह्यातङ्किते लवपुरे यवनान्धकारात् ॥
सारस्वत द्विज सभापति कृष्णदेवः ।
कौसल्य गोत्र जयदेव सुतश्चकार ॥१॥

श्रीरोहिणी तनूजेन कृष्णदेवेन वर्णितम् ।
सिद्धान्तशतकं ज्ञात्वा भ्रममोहौगमिष्यतः ॥२॥

तस्मिन् विप्लव दुःखिते जनपदे मातुः कृपा प्रेषितः ।
पद्मासेवित पाद-पद्म-पितरं द्रष्टुं व्रजे निर्जने ॥

तत्र ब्राह्मण मोहनोऽवददहो जानामि पद्माप्रियं ।
श्रीवृन्दावन गह्वरे हरिपदे चान्तर्हितः सप्रियः ॥

दुःखे दुःखमतीव लब्धमनिशं धैर्येण संरक्षिते ।
आयातो व्रजतोऽसुखी लवपुरे संक्रन्दमानो गृहे ॥
मात्रा ब्राह्मणभोजनादिनियमा ज्ञातिप्रिया साधिता ।
राधामाधव मन्दिरेऽवसमहं गीतं पठन् व्याकुलः ॥४॥
स्वपितुर्जयदेवस्य जन्मोत्सवदिनेऽकरोत् ।
सिद्धान्त शतकं कृष्णो द्विवेदादित्य विक्रमे ॥५॥

अर्थात् यवनों के अन्धेर से अशान्त वातावरण कहाँ और शान्ति के समय सेव्य श्रीकृष्ण तत्त्व कहाँ, फिर भी सारस्वत ब्राह्मणों के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सभापति एवं कौसल्य गोत्रोत्पन्न श्रीजयदेव पुत्र कृष्णदेव ने यह ग्रन्थ बनाया ।।१।।

श्रीरोहिणी माता से उत्पन्न हुए श्रीकृष्णदेव गो० वर्णित सिद्धान्त को जानने से भ्रम मोह दूर हो जायगे ।।२।।

अब कुछ बीती सुनाते हैं कि—विप्लव से व्याकुल दुःखित देश में माता श्रीरोहिणीजी ने आज्ञा दी—कृष्ण ! तुम व्रजको जाओ, वहां निर्जन श्रीवृन्दावन में श्रीपिताजी अवश्य मिलेंगे । व्रज वृन्दावन में श्रीपद्माजी उनके चरणों की सेवा करती होंगी–तुम दर्शन करना मैं भी आ जाऊँगी, यह सव सुनकर बड़ी कठिनता से श्रीवृन्दावन गया, किन्तु वहाँ कोई भी परिचय कहीं नहीं मिला । हाँ एक दिन अति दीन अवस्था में दुःखी हुआ ब्रह्महृद पर बैठा था कि एक मोहन नाम के ब्राह्मण मिले मेरी वात सुनी और बोले—कि श्रीपद्माजी के श्रीजयदेवजी को पूछते हो, प्रथम तो सव परिचय वतलाया और रोकर कहने लगे कि श्रीवृन्दावन के सघन गंभीर वन में वे अन्तर्ध्यान हो गये । इतना कह वे ब्राह्मण भी अन्तर्हित हो गए मैं विस्मित होकर रोने लगा ।।३।।

दुःख में अत्यन्त दु'ख आने से अधीर होगया, किन्तु धीरज ने बचा लिया और रोता हुआ लाहौर आगया । श्रीमाताजी मेरे कथन से सब कुछ समझगई और उन्होंने ज्ञाति को प्रिय लगने वाली ब्राह्मण भोजनादि क्रिया करवाई, अब मैं व्याकुल हुआ श्रीगीतगोविन्द के पाठ में मन लगाकर श्रीराधामाधव मन्दिर में रह रहा हूँ ।।४।।

विक्रम सम्वत् १२४२ माघ शुक्ला पञ्चमी के उपलक्ष में श्रीपितृ-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चरण श्रीजयदेव महाप्रभु प्रसन्न हों इसके लिये श्रीकृष्णदेव गोस्वामी ने यह सिद्धान्त शतक निर्माण किया ।।५।।

भारत की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी उस काल में अनंगपाल ही दिल्ली पति थे। उनकी दो पुत्रियाँ कन्नौज और अजमेर की महारानियाँ थीं । उन्हीं के दो पुत्र कन्नौज के जयचन्द अजमेर के पृथ्वीराज थे।

महाराज अनंगपाल ने मरते समय बड़े दोहते जयचन्द को राज न देकर पराक्रमी जान पृथ्वीराज को दिल्लीपति बना दिया। जिसका परिणाम दोनों में विरोध हो गया, जयचन्द की पुत्री सयोगिता पृथ्वीराज को चाहती थी, इसके विपरीत संयोगिता के स्वयंवर में अपमान करने के लिये पृथ्वीराज चौहान की मिट्टी की मूर्ति बनाकर द्वारपाल की जगह खड़ी कर दी। क्षुब्ध होकर चौहान ने स्वयंवर में जाकर संयोगिता की वरमाला पहिनी इसका परिणाम भारत के हित में अच्छा नहीं हुआ।

जब मोहम्मद गोरी ने भारत पर प्रथम आक्रमण किया तब राजपूताने के संगठन के कारण सम्वत् ११८१ में पृथ्वीराज ने उसे हरा दिया, गोरी फिर से बड़ी सेना लेकर आया। उस समय जयचन्द ने दिल्ली के राज के लोभ में उसे सहायता दी—इस युद्ध में पृथ्वीराज मारे गये। दो वर्ष में जयचन्द भी समाप्त कर दिये गये।

गोरी ने गुजरात के राजा भीमदेव से पराजय पायी। पीछे से गोरी का सेनापति कुतुबुद्दीन ऐवक बड़ी सेना लाया और सं० १२५१ में राजा भीमदेव समाप्त हुए। इस विजय से प्रसन्न हो ऐवक को गजनी बुलाकर गोरी ने दिल्लोपति वना दिया। कुतुबुद्दीन के सरदार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

वाराणसी-5

इल्लियारुद्दीन ने सं० १२५३ में पाल वंश से विहार और ५७ में सेन वंश से बंगाल हस्तगत किया। १२५८ में बुन्देलखण्ड पर भी अधिकार कर लिया।

अब सेन बंश का इतिहास लिखते हैं क्योंकि श्रीजयदेवजी का इसीसे सम्वन्ध था।

सेन वंश

दक्षिण भारत में विद्वानों का सेवक प्रसिद्ध सम्राट् राजराजा था। उन्होंने तञ्जौर में राजराजेश्वर शिव मन्दिर वनवाया। उसकी सेवा में वीरचन्द्र ब्राह्मण को रख दिया और कुलपुरोहित बना लिया।

वीरचन्द्र स्वयं पाकी थे। शिवाराधन तो करते थे पर किसी के घर भोजन को नहीं जाते थे। एक दिन अपने पिता के श्राद्ध कर्म कराने को राजराजा ने इन्हें बुलाया। श्राद्ध कर्म तो विधि पूर्वक कराया परन्तु भोजन को साफ नाहीं कर दी। राजा ने कुपित होकर इन्हें देश छोड़ने की आज्ञा दे दी। जव यह चले तो शिवजी से रोकर कहा—प्रभो ! मैं सेवा तो नहीं कर सका पर आज आपको छोड़कर जा रहा हूँ। शिवजी ने स्वप्न में वरदान दिया कि तेरी सन्तान बंगाल में राजा वनेगी।

अपने सामन्त नाम पुत्र को लेकर सस्त्रीक बंगाल आगये। सामन्त वड़ा हुआ उसमें वही राज-भावना जागृत हुई। वीरचन्द्र ने मरते समय पुत्र से कहा—बेटा, किसी के साथ अन्याय नहीं करना और चल बसे, पिता के साथ माता सती होगई।

सं० १०५५ में सामन्त सेन ने एक छोटा-सा राज्य स्थापित किया। उसका नाम शिवपुरी रखा जो मयूरभंज के अन्तर्गत था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सनातनधर्म प्रीति का परिचय देवपारा शिलालेख में विद्यमान है, सामन्त का पुत्र हेमन्त और हेमन्त का बेटा विजयसेन हुआ, विजयसेन ने सर्व प्रथम सूर लोगों से मित्रता की फिर पालवंश को पराजितकर बंगाल उत्तरीविहार, आसाम, उड़ीसा सब पर अधिकार कर लिया।

पश्चिम बंगाल में विजयपुर और श्रीवाड़ी (सिउड़ी) नगर बसाकर राजधानी स्थापित की। फिर विक्रमपुर (वाँकुड़ा) बसाया। सेन वंश का सितारा चमका दिया। और अपने पूर्वजों के नाम से वीरभूमि विख्यात की। सं० ११३६ इस्वी० १०८० में विजय सेन का पुत्र बल्लाल सेन हुआ। यह भारी भक्तिमान्, विद्वान्, वीर था। इसने कुलीन प्रथा के अनुसार अपरिचित जातियों का नया संगठन कराया। गौड़देश और लखनौती की पुनः स्थापना की।

ढाका जिले में रामपालभवन के निकट एक राजमहल बनवाया तथा वीरभूमि में अजया नदी के किनारे कन्दविल्व नाम का उत्कृष्ट उद्यान तैयार कराकर उसमें सुन्दर निवास स्थान स्थापन किया।

बल्लाल सेन ने दानसागर, अद्भुत सागर संस्कृत के दो ग्रन्थ बनाये, सं० ११७४ में मिथिला के राजा नान्यदेव को हराया। कई स्थानों पर विजय की। श्रीजयदेव प्रभुकी कृपा से घर में पुत्र जन्म हुआ। हर्ष से पुत्र का नाम लक्ष्मण सेन रखा उसीके नाम से नया सम्वत् चालू किया जो अभी भी बंगाल में उसका प्रचार है। इनकी राजधानी बाकुड़ा नवद्वीप त्रिकूटाचल में थी, महाराज बल्लाल सेन के सामने जो विद्वान् रहते थे उनका प्रभाव लक्ष्मण सेन पर पड़ा। लक्ष्मण सेन ने विद्या के साथ श्रीहरि कीर्त्तन का प्रचार श्रीगुरुदेव जयदेव की आज्ञा से किया जो आज भी है। लक्ष्मण सेन के जयस्तम्भ प्रयाग काशी में थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजयदेव महाप्रभु की आज्ञा से पुत्र को राज दे लक्ष्मण नवद्वीप में गङ्गातट सेवन करने चले गये अन्त में ढाका में इनकी मृत्यु हुई। तीन पुत्र थे जिनमें से माधव, केशव पिता के सामने ही युद्ध में समाप्त हुए विश्वरूप सेन ने यवनों से बहुत समय संग्राम किया और तेरहवीं शताब्दि में सेनवंश समाप्त हुआ, किन्तु उनकी कीर्ति उनके गुरुदेव श्रीजयदेव महाप्रभु के गीतगोविन्द से जब तक आकाश में सूर्य चन्द्रमा हैं स्थिर रहेगी।

॥ श्रीवृन्दावन की उपासना का मूल ॥

(कुण्डलियाँ)

निधुवन सेवाकुंज वन जीवन गीत गोविन्द।
रंग महल की टहल बल राधा पद अरविन्द॥
राधापद अरविन्द द्वंद श्रीगौरचन्द धन।
यमुनावल्लभ विपुल जीव भट रूप सनातन॥
स्वामी श्री हरिदास हंस हरिवंश उपासन।
व्यास प्रबोधानन्द चन्द गोपाल प्रबल पन॥
अष्ट सखा श्रीरामराय के द्वादश पीयो अधर सिंधु।
श्रीजयदेव रसाब्धि में गोता वृन्दाविपिन निधु॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ श्रीराधाकुंजविहारिणे नमः ॥

श्रीजयदेव-लीला

पण्डित भोजदेव सारस्वत पंजाब के प्रसिद्ध लाहौर नगर से अपनी धर्मपत्नी वामाजी के साथ तीर्थयात्रा करते श्रीजगन्नाथ पुरी पधारे। तीन वर्ष के अनुष्ठान से प्रसन्न हो भगवान् ने अपना प्रकाश उनमें स्थापन कर दिया और वे मूर्छित हो गये।

वहाँ के प्रबन्धक राजा वल्लालसेन ने उनका उपचार कराया, इस आश्चर्य घटना से पता लगा कि जगदीश इनके पुत्र बनेंगे। राजा के महल बंगाल के नवद्वीप बांकुड़ा, ढाका और कन्दविल्व वर्द्धमान में थे, प्रार्थनाकर प्रेमी भक्त को कन्दविल्व वाटिका में रख दिया।

कन्दविल्वं महातीर्थं यत्र श्री जगदीश्वरः।
जयदेव स्वरूपेण प्रादुर्भूतो रसार्णवः ॥१॥

वि० सम्वत् ११६५ माघ सुदो वसन्त पञ्चमी को श्रीजयदेव महाप्रभु का प्रादुर्भाव हुआ, जयन्ती महोत्सव के पश्चात् यज्ञोपवीत संस्कार तक रानी-राजा ने आपकी सेवा की। जब भोजदेव पंजाब जाने को तैयार हुए, तभी विधि का विधान उनका देहान्त हो गया और वामादेवी सती हो गई।

राजा-रानी को अपनी सेवा में निमग्न देख श्रीजयदेव भगवान् ने रानी को प्रसादी पान दिया जिससे सं० ११७६ में लक्ष्मणसेन कुमार उत्पन्न हुए, जनता का जयदेव में ईश्वर भाव हो गया, आपकी सेवा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में बहुत से सेवक रहते थे, आपके भोलेपन के कारण वे चोरी करने लगे आप उन्हें देखकर हँस जाते थे। वहाँ पर दर्शनार्थियों की भीड़ से खूब भेंट आती जिसे जो चाहे ले जाता कभी कभी राजा भी आते जाते थे। आपके चरित्रों से प्रसन्न होते थे।

वहीं पर एक दुष्ट ब्राह्मण रहता था उसने कहा तुम्हारे पिताजी पर हमारे हजार रुपये थे लाइये, आपने कहा सामान ले जाओ तुम्हारे रुपये भर जायेंगे। उसकी लाई हुई बैलगाड़ी में आपने भी अपने हाथों से बहुत सी चीजें भरवा दीं, जब वह ले जा रहा था तभी सामने से उसकी लड़की रोती आई बोली घर में आँच लग गई है निरंजन घबड़ा गया उसके बच्चे बहू अग्नि से जल रहे थे। उनकी करुणा भरी पुकार सुनकर भगवान ने अग्नि पीकर दावानल पान लीला दिखलाई गाँव भर तो भक्त बन ही गया किन्तु निरंजन तो चरणों में पड़ गया, आपकी कृपा से निरंजन एक श्रीशंकराचार्य पीठ का महन्त बना दिया।

एक दिन आप बिना सूचना कन्दविल्व से पुरुषोत्तमपुरी चले गये। राजा ने खोज कराई किन्तु जिन्हें विधाता नहीं पाता उन्हें राजा कैसे पा सकता था आप गूदरी कमंडल मात्र रखते थे। यहाँ पुरी के पुजारी ने जगन्नाथ से कहा था, मेरे कोई भी सन्तान होगी आपको भेंट करूँगा, उसके यहाँ पुत्री पद्मावती पैदा हुई, युवती होने पर नृत्य गान कला गान्धर्वा को श्रीहरि के चरणों में अर्पण किया, आपने आज्ञा दी जयदेव मैं ही हूं उनके साथ विवाह कर दो, श्रीजयदेव राजी नहीं थे किन्तु पिता ने पुत्री को उनके पास छोड़ दिया और कह दिया यही तुम्हारे पति हैं आपने कहा तुम भी जगन्नाथ जी को बदनाम करते हो वे भले ही सोलह हजार विवाह करें मैं नहीं करूँगा चलो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उनके सामने कह दूं। भोग के समय निर्णय के लिये मन्दिर में घुस गये पंडाओं ने आपको मारा वह मार श्री जगदीश के शरीर में ऐसो लगी रक्त बहने लगा तभी दर्शन कर राजा ने पंडाओं को डाटा, पुजारी बोले हमने आपको कब मारा, आपने कहा श्री जयदेव मैं हो हूँ।

पुरी नरेश ने श्रोपद्माजी सहित अभिषेक कराकर आपको भोजन कराया और नगर में सवारी निकालो। वैशाख मास में ब्रह्मा जी ने आपका विवाह कराया योगमाया ने पुरी के घर२ में मिठाई बाँटी ब्राह्मणों ने राजा से कहा यह जयदेव का विवाह अवैध है, राजा तो आपसे परिचित था किन्तु पण्डित मंडल को प्रभु का ज्ञान हो जाय इसके लिये शास्त्र विधान के अनुसार वेद धर्म की रक्षा करने को जयदेव आज ही रथयात्रा में रथ के पहिये के नीचे कुचलवा दिये जायँ। यह पंडितों ने कहा।

श्रोजयदेव बुलाये गये दंड सुनाया गया, पद्माजी रोष करने लगी, किन्तु सब के साथ आप रथ के आगे खड़े हो गये और आपने गान किया। वह स्वयं प्रभु का गान था।

प्रलय पयोधिजले धृतवानसि वेदम् ।
विहितवहित्रचरित्रमखेदम् ॥
केशवधृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ॥

गाते ही समुद्र उमड़ा सबने दश अवतारों का दर्शन किया जल में डूबते ब्राह्मण आपके चरणों में पड़ गये और बोले हे जयदेव हे कृष्ण हम आपकी शरण हैं हमको बचाइये आपने क्षमा कर सबकी प्राण रक्षा की।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीपद्माजी को श्रीराधा विरह के भाव से कन्दविल्व में रखकर स्वयं मथुरा चले गये केशवदेव जी को दशावतार स्तोत्र गाकर सुनाया श्रीवृन्दावन के धीर समीर यमुनातीर में श्रीयमुनाजी ने आप को स्नान कराया और अपने किनारों के भाव से कुंकुम के दो दण्डा आकार वाले तिलक में अपने श्याम स्वरूप की रेखा बनाई "श्रीहरिचरण शरण जयदेव कवि भारती-गीतगोविन्द में है" श्रीराधा-माधव जी ने आपको अष्टादशाक्षर श्रीगोपाल मंत्र दिया ।

आपने ब्रजयात्रा की यवनों ने सैकड़ों मन्दिर तोड़कर उनकी मूर्ति यमुनाजी में कुंओं में फेंकदी आपको वे ही मिली जो भक्तोंको देदी रावल में मिले श्रीजी को नित्य सेवा में लिया, मथुरा में श्रीयमुना तट के निकट प्रभु की सेवा करने लगे मथुरा वासिनी प्रभु को भोगराग से नित्य नया सम्मान करने लगीं ।

❋ द्वितीय विवाह ❋

उसी समय लहौर के सारस्वत ब्राह्मण पं० पूर्णचन्द्र श्री ब्रज यात्रा को पधारे उनकी स्त्री सत्यभामा पुत्री रोहिणी तथा पुत्र पराशर और एक भृत्य साथ था, सभी आपके शिष्य होकर श्रीजी का सेवा करने लगे । एक दिन प्रसन्न होकर आपने तीन बार कहा पूरनचन्द कुछ माँगो, पूरनचन्द ने कहा नाथ मेरी पुत्री का पाणिग्रहण करियें, श्रीराधामाधव जी ने भी सेवा के लिये सन्तान होगी—इससे विवाह का अनुमोदन कर दिया, तब मथुरा के महामान्य देवलमुनि के द्वारा मार्गशीर्ष शुक्ला पंचमी को आपने श्री रोहिणी जी के साथ विवाह किया, पूरनचन्द ने अपना चतुर्थ पुत्र पराशर भक्त होने के कारण आपकी सेवा में समर्पण कर दिया । महाप्रभु से लाहौर पधारने के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लिये भी आग्रह किया आपने आज्ञा दी तुम्हारी पुत्री की सन्तान होगी वह लाहौर आवेगी, भगवान् की वाणी तो सत्य है सुनकर वे पौष मास से पहिले ही लाहौर चले गये।

॥ स्वरूप दर्शन ॥

आमेर के राजा समरसिंह मथुरा आये आपके शिष्य हुए आग्रहकर रोहिणी पराशर को श्रीजी की सेवामें ही रखा और आपको मारवाड़ ले गये, वहाँ दर्शनार्थियों ने सुना कि महाराज के गुरु साक्षात् जगन्नाथ जी है किसी ने कहा कि जगन्नाथजी के तो हाथ पैर के पंजे नहीं हैं, आप सुनकर चुप हो गये, तभी राजा के कुटुम्बी वैशाख की एकादशी का जागरण उत्सव कराने के लिए आपको दोसा गाँव में ले गये, वहाँ भेट में बहुत सा धन आया, चार बजे रात में सबको सोया हुआ देख धन लेकर आप आमेर को चल दिये।

मार्ग में चोरों ने आपके हाथ पैर काटकर एक गर्त में डाल दिया और धन लेकर भाग गये। सवेरे वायु सेवन को आये हुए राजा ने आपकी यह दशा देख बड़ा दुःख माना और प्राण त्याग को तैयार हो गये। आपने कहा मेरी दवा सन्त-सेवा है वही की गई, वे चोर भी सन्त बनकर धन लेने आये आपको देखकर लौटने लगे, तब आप की आज्ञा से उन्हें सेवक लिवा लाये वे काँपने लगे, आपने अपना गुरुभाई बताकर उनकी सेवा के लिये राजा से बहुत सा धन दिलवाया विदा होकर नगर से बाहर उन्होंने आपकी निन्दा की, वहाँ की भूमि फट गई वे इसी में समा गये, सिपाहियों ने राजा के सामने आपसे सब हाल कहा, तब आपने दुःखित हो डुंडे हाथ-पैर मींजे तत्काल पंजे निकल आये, इस जगन्नाथ स्वरूप दर्शन की लीला में आपकी सेवा के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भाव से बुलाये, रोहिणी पराशर बड़े प्रसन्न हुए, सन्त-सेवा हुई, राजा ने बहुत बड़ा ब्रह्मभोज कराया। कुटुम्बियों को क्षमा कर दिया।

※ श्रीपद्मा जी की देवी पूजा ※

कन्दविल्व की कदम्ब-खण्डी में किसी ज्योतिषी के कहने से श्रीपद्माजी ने साम्ब-कुशेश्वर महादेव की चालीस दिन तक प्रार्थना-पूजा की। उन्होंने श्रीजयदेवजी से स्वप्न में कहा कन्दविल्व पधारिये, आप सस्त्रीक कन्दविल्व आ गये वहाँ समस्त राज-परिवार आपका सेवक हुआ। सबने श्रीगोपाल मंत्र पाया।

श्रीलक्ष्मण सेन एवं पण्डित मण्डली की प्रार्थना से श्रीवृन्दावन रस का सागर श्रीगीतगोविन्द प्रगट किया। उसमें श्रीराधारानी से श्रीकृष्ण कहने लगे, हे श्रीराधे ! कामरूप कालकूट को खण्डन करने वाला आभूषण रूप अपना श्रीचरण-कमल मेरे मस्तक पर रखिये, यह भाव समझ तो लिया पर लिखा नहीं, गङ्गा नहाने चले गये, पीछे से भगवान् आपका रूप रखकर आये, आपने अपने हाथ से लिखा—

"स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनं देहि पदपल्लवमुदारम्।"

और भोजन कर चले गये, जब रोहिणी पद्मावती को प्रभु ने आप का प्रसादी पाते देखा तब सब बात खुल गई, आपने उनकी झूंठन उसी थाली से लेकर दालभात खा, लिया, यह जगन्नाथ धाम की लीला कन्दविल्व में आज तक चालू है।

गीतगोविन्द में जगदीश के हस्ताक्षर हैं यह सबने सत्य नहीं माना, तब पुरी में भगवान् के सामने इसका गान हुआ। प्रभु ने दूसरी अष्टपदी को गाया, जिसमें 'जय जगदीश हरे' का बदला "जय जयदेव हरे" गाकर दे दिया। रथयात्रा का समय था चारों दिशाओं में ग्रन्थ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को लिखवा कर लोग ले गये। जगन्नाथजी इसे सुनने आते हैं इस कारण घर-घर गान होने लगा, माली की लड़की, पठान मुसलमान तो संकेत मात्र है, किन्तु इसे पढ़ते-गाते समय पास में एक आसन जरूर विछाना चाहिये क्योंकि प्रभु इस गीतगोविन्द ग्रन्थ को सुनने के लिये पधारते हैं। यह सब कथा भक्तमाल में है।

अधिक प्रचार देखकर पुरी के राजा ने नया गीतगोविन्द बनाकर कहा कि असली ग्रन्थ यह है, श्रीजगन्नाथजी ने राजा के ग्रन्थ को चौकी के नीचे डालकर श्रीजयदेव का ग्रन्थ हार में लिपटा लिया राजा मरने चला, तव श्रीजयदेवजी ने उसे रोका और उसके ४ श्लोक अपने ग्रन्थ में लिखा दिये। वह आगे पीछे हैं।

राजा ने क्षुब्ध होकर श्रीजयदेव के भोजन में विष मिला दिया, आप हँसे राजा ने क्षमा माँगी, तव आपने कहा अमृत और विष मेरे ही स्वरूप हैं फिर भी राजा के अङ्ग में कुष्ठ हो गया, जो आपकेचरणामृत से अच्छा हुआ था।

पराशर को लेकर पुरी से कन्दविल्व पधारे मार्ग में भुवनेश्वर ने रातभर कीर्तन कर प्रभु का सत्कार किया, दूसरे दिन श्रीकृष्ण स्वयं भोजन देने आये, आपकी मोहन मुरली रह गई, जो आपके पास सर्वदा वनी रही। वसन्तोत्सव के समय कन्दविल्व में श्रीराधामाधव के द्वादश गायकों ने श्रीजयदेव गीतगोविन्द गाया गायकों के नाम ये हैं वूडन मिश्र गन्धर्वगुरु गंगा सिंह गलित गान्धर्वा विद्युत्प्रभा राघोजी रुद्रवुआ भैयासाहव श्रीलाल पणशीकर श्रीनाथागर्दे।

दुष्ट को दंड—लक्ष्मणसेन के साले ने खजांची होकर मदोन्मत्तता से एक विप्र कन्या के साथ व्यभिचार किया। आपके क्रोध से वह मर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ही गया, उसकी वहू रानी के पास आकर रोयीं। श्रीपद्माजी ने कहा, यह कैसी स्त्री है, यह बात श्रीवल्लभा रानी को बुरी लगी।

* सती पद्मावती *

किसी दिन राजा के साथ श्रीजयदेवजी वगीचे में भोजन करने गये थे। पीछे से रानी ने दासी को सिखाकर श्रीपद्माजी से कहलवाया कि आपके पति को वन में वाघ ने खा लिया, श्रीपद्माजी हाय नाथ कहकर मर गई। लाखों लोग दर्शन करने आये, श्रीजयदेव ने चरणा-मृत देकर जिला दिया, सती का संसार में जय-जयकार हुआ।

'दया:- राजकुमार विश्वरूप भारी बीमार हो गया, तव शाक्त पुरोहित ने कितने ही वालक देवी पर वलिदान के लिये मँगाये वच्चों के पिता-माताओं ने आर्तनाद से प्रभु को पुकारा, श्रीजयदेव स्वयं पधारे। सवके पुत्र सवको दिलाकर श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव ! इस मन्त्र का अखण्ड-कीर्त्तन कराया माँकाली कृष्ण वन गई, राजकुमार अच्छे हो गये।

लक्ष्मणसेन ने सफेद सङ्गमरमर से श्रीजयदेव भगवान् की मूर्ति बनवाई। उसकी पूजा होने लगी, समयानुसार वह मूर्ति पंजाव गई वहां से श्री वृन्दावन आई जो आज भी वृन्दावन के श्रीजयदेव गीत गोविन्द मन्दिर दुशायत मुहल्ले मे आठ सौ वर्ष की प्राचीन मूर्ति श्री राधामाधवजी के साथ सेवा में विराजमान है।

* श्रीगंगाजी का पधारना *

मकर संक्राति पर लोग प्रयाग नहाने जाते थे। अबकी वार यवनों के उत्पातवश नहीं जा सके। श्रीगङ्गाजी ने आपको स्वप्न दिया कल संक्राति है मैं स्वयं अजया में आ जाऊँगी। परिचय के लिये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रभात मयूराक्षी में कमल खिले होंगे, वही हुआ। आज तक आठ सौ वर्ष होते हुए भी मकर संक्रान्ति पर अजया में नहाने के लिये लाख आदमी इकट्ठे होते हैं इस प्रकार श्रीभागीरथी जयदेवी बन गयीं।

※ वंशस्थापन ※

श्रीराधामाधवजी की सेवा के लिये श्रीजगदीश की आज्ञा से वंश स्थापन किया। वि० सं १२१५ होली की रात्रि में पूरनचन्द की पुत्री श्रीरोहिणीजी से श्रीकृष्णदेव प्रभु प्रगट हुए। इसका उत्सव बंगाल में पहिले बहु-व्यापक था, किन्तु चार सौ वर्ष बाद उसी समय में श्री-चैतन्यमहाप्रभु प्रगट हुए। उस उत्सव को इस प्रचार में लोग भूल गये।

※ वंजाबयात्रा ※

वि० सं० १२२२ में श्रीजयदेवजी की आज्ञा से ७ वर्षके श्रीकृष्ण देव अपनी माता श्रीरोहिणी मामा पराशर और श्री जयदेवजी की मूर्ति के साथ श्रीराधामाधवजी को लेकर विशाल सेना के संरक्षण में बंगाल से पंजाब चले गये। आपके वंश में तीन सौ वर्ष बाद उत्पन्न हुए योगीराज श्रीरामरायजी लाहौर से व्रजयात्रा को पधारे। आपने विद्यागुरु श्रीमाधवेन्द्रपुरी गो० की आज्ञा सें सं० १५५५ वैशाख शुक्ला पूर्णिमा के दिन श्रीवृन्दावन की झाड़ी में जाकर वहाँ के हिंसक जीवों को भक्ति मुक्ति देकर श्रीवृन्दावन धाम निर्भय वना दिया, उस समय सिकन्दर लोदी का राज था। सं १५७५ से ८३ तक वावर के बाद हुमायूं ८६ में सवत में शेर शाह सूरी सं० १६०२ से ९ तक इश्लाम शाह १२ तक आदिल सिंकन्दर वीच में छै मास हुमायूं सं १६१२ से ६२ तक अकवर ८४ तक जहांगीर १७२६ में औरंगजेव काराज जव था

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उस समय श्रीजयदेवपीठ में श्रीवृन्दावन चन्द गोस्वामी थे। श्रीरामराय प्रभुजी श्रीपुरी गोस्वामी के कहने से नवद्वीप पधारे, मार्ग में कन्दविल्व का उद्धार कर श्रीजयदेव स्मारक स्थापन किया। श्रीजगदीशपुरी से लौटकर पुनः नवद्वीप आये, तब श्रीचैतन्यमहाप्रभु ने आपके साथ श्रीलोकनाथ भूगर्भ गोस्वामी को भेजा, किन्तु वे ठहरे नहीं बंगाल चले गये।

इधर श्रीमाधवेन्द्रपुरी श्रीगोपाल (श्रीनाथ) जी के लिये चन्दन-कपूर लेने उड़ीसा चले गये और क्षीर चोरा गोपीनाथ में लीन हो गये। आपकी आज्ञानुसार श्रीनाथजी को सेवा श्रीरामरायजी करते रहे, तभी सं० १५७२ में श्रीरामराय प्रभु के लघुभ्राता श्रीचन्द्रगोपालजी सस्त्रीक श्रीराधामाधवजी के साथ श्री जयदेव मूर्ति स्वरूप को लेकर पंजाव से श्रीवृन्दावन पधारे।

वि० सं० १५७३ में श्रीचैतन्य महाप्रभु व्रज पधारे। आपने श्रीचन्द्र गोपाल को नाम दीक्षा दी, व्रज यात्रा कर चलते समय श्रीरामरायजी से कहा कि तुम श्रीराधामाधवजी की सेवा करो, श्रीनाधजी की सेवा श्रीवल्लभदेव को दे देना। श्रीवल्लभाचार्य ने श्रीनाथजी तो ले लिये, किन्तु सेवक के अभाव में श्रीमाधवेन्द्र के बंगाली शिष्यों को ही जैसे सेबा करते थे वैसे ही रहने दिया।

समय पाकर श्रीवल्लभ के पुत्र गोपीनाथ विट्ठलनाथ सेवा में आते जाते थे। वैभव बढ़ने पर कृष्णदास अधिकारी ने बंगाली सेवा से अलग कर दिये। बहुत समय पीछे श्रीरामरायजी जब तीर्थयात्रा से आये, आपने ही बंगाली सेवा में रखे थे। बंगालियों ने अकबर बादशाह के यहाँ प्रार्थना की। बादशाह ने अपने सेनापति राजा

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भारतनिधि, करौली
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मानसिंह के पिता राजा भगवानदास के गुरु श्रीरामरायजी को उसका अन्तिम निर्णय करने को कहा, श्रीरामरायजी ने श्रीपुरी तथा श्रीचैतन्यमहाप्रभु और बादशाह का भाव विचार कर व्रज की पंचायत में श्रीनाथजी की सेवा श्रीवल्लभकुल को देदी ।

बंगालियों ने विरोध कर सम्प्रदाय मूर्धन्य श्रीरामरायजी का नाम गौड़िया ग्रन्थों से निकाल दिया, श्रीजीव गोस्वामी श्रीरामरायजी से प्रसन्न हुए। श्रीवल्लभकुल में भी भारी सम्मान सहन न कर गोकुलनाथ ने आपको २५२ वैष्णववार्ता में गुसाईंजी का शिष्य लिखा, वार्ता तो झूठी हो गई, किन्तु श्रीरामरायजी को यथोचित सम्मान नहीं मिला।

श्रीचन्द्रगोपालजी की सन्तान में श्रीयदुनाथ वृन्दावनचन्द्र समर्थ हुए, उन्होंने कन्दविल्व में गादी स्थापन कर अपने शिष्य-विरक्त राधारमणदास को बैठाया और श्रीचैतन्य महाप्रभु को भी पधराया। कई पीढ़ी चली। भरतदास प्यारे लाल हीरालाल फूलचन्द रामगोपाल सर्वेश्वर, दामोदर दास को चोरों ने मार डाला, तब खबर आने पर भी श्री जयदेवपीठ से कोई नहीं गया। आज एक निम्बार्की साधु वहाँ पर सेवा करते हैं। जमीन जायदाद सब श्रीचैतन्य महाप्रभु के नाम में अभी भी है। औरंगजेब के उत्पात में श्रीवृन्दावन से श्रीराधामाधवजी आमेर पधारे। श्री जयदेव वंशज श्रीवृन्दावन छोड़कर नहीं गये वहाँ सेवा बंगाली लोग करते हैं। वगुडा जिले में भी एक केंदुली ग्राम है। पूर्व पश्चिम में हारावली तुलसी दो नदी है श्रीजयदेव पुष्करिनी है कभी प्रभु यहाँ रहे थे।

वि० सं० १८ सौ में श्रीब्रह्मगोपालजी ने ग्वालियर नरेश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महदाजी सिंधिया से भूमि लेकर ब्रह्मपुरी मुहल्ला बसाया मन्दिर भी बनाया जो अभी तक वंशजों के अधिकार में है।

आपके पश्चात् भागवत सार्वभौम श्रीनन्दकिशोर चन्द्र गोस्वामी हुए आपने दतिया नरेश बिजय बहादुर को शिष्य कर श्रीजयदेवपीठ की प्रधान शाखा का उद्धार कराया, आपके रचित महाकाव्य श्री श्रीगोपाल लीलामृत श्रीगौर प्रेमोल्लास आदि हैं।

श्रीजयदेव महाप्रभू के सेव्य श्रीराधामाधव नाम के १८ स्वरूप थे, कुछ इस समय उपस्थित हैं—

१. श्रीजयदेव गीतगोविन्द मन्दिर में दुशायत श्री वृन्दावन।
२. श्रीराधादामोदरजी के मन्दिर में सिंगारवट के निकट।
३. केशीघाट भरतपुर वाली कुञ्ज के पास।
४. सलेमावाद-परशुराम पुरी-श्रीनिम्बार्कपीठ मारवाड़।
४. आमेर-जयपुर में घाटा के ऊपर आमेर मार्ग जयपुर।
६. कन्दविल्व वर्द्धमान जिला बंगाल।

❀ नित्य-पाठ ❀

दोहा

सतयुग बदरीनाथजी त्रेता राम सतीस।
द्वारकेश द्वापर पुजे कलिमल हर जगदीस॥
चार व्यूह जगदीश कें वासुदेव बलराम।
कामदेव अनिरुद्ध में काम सकल सुखधाम॥
वृन्दावन गोपीश्वरी वंशीवट विश्राम।
ता अप्राकृत काम की लीला कही ललाम॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सारस्वत द्विज भोजवुध लवपुर सोंतिय साथ ।
गये पुरी जगदीश की हरि नें किये सनाथ ।।
ग्यारह सौ पैंसठ सुदी विक्रम माघी पाँच ।
प्रगटे श्रीजयदेव हरि देव सराहत नाँच ।।

चौपाई

जय जय जगन्नाथ हर देवा । तीन लोक लागे जेहि सेवा ।।
श्रीजयदेव सोई अवतारी । पिता भोज भामा महतारी ।।
कन्दविल्व बंगाल प्रगट भये । नृप वल्लाल निहाल करत भये ।।
पान प्रसादी रानी पायो । कृपा सिद्ध लछमन सुत जायो ।।
विप्र निरञ्जन को उद्धारे । अग्नि पान कर पुरी पधारे ।।
पद्मावती विवाह विचित्रा । दरसित दश अवतार चरित्रा ।।
कन्दविल्व गृह पद्मा राखी । ब्रज वियोग गोपीजन साखी ।।
वृन्दावन जमना पटरानी । धीर समीर तिलक सन्मानी ।।
राधामाधव प्रगट पधारे । ते दीक्षा गुरु मन्त्र उचारे ।।
मथुरा श्रीजमना के तीरा । पधराये माधव छवि धीरा ।।
लाहोरी पूरन द्विज आये । पुत्री पुत्र प्रिया संग लाये ।।
हरि आज्ञा रोहिनी विवाई । पुत्र जासु श्रीकृष्ण कन्हाई ।।
पूरन लघु सुत भक्त पराशर । श्रीजयदेव रखे करुनाकर ।।
समर सिंह आमेर नृपाला । आये जहँ जयदेव कृपाला ।।
तिन हरि को गुरु कर मरुदेशा । पधराये जयदेव रमेशा ।।
तहां रूप जगदीश दिखाये । दस्युन सों कर पद दंशाये ।।
कूप परे प्रभु कीर्तन गाये । समर सिंह लखि अति दुखपाये ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चोरन कों गुरु भ्रात बताये। राजा सों बहु द्रव्य दिवाये।।
ते अपनी करनी फल पाये। निन्दा कर भूमध्य समाये।।
तहँ सों कन्दविल्व पुनि आये। पाराशर रोहिनि संग लाये।।
पद्मा रोहिनि राजा रानी। कृपा पात्र सब किये भवानी।।
लछमन भूप विबुध मन भायो। गीतगोविन्द अलौकिक गायो।।
अन्तरंग वहिरंगी लीला। अधिकारी अधिकार सुसीला।।
जगन्नाथ लेखे निज हस्तक। चरन देहु राधे मम मस्तक।।
सुर नर मुनि गन्धर्व गवैया। अष्टपदी चौवीस लिखैया।।
करी प्रतिज्ञा हरि रस भाऊ। गीतगोविन्द सुनत ही आऊ।।
मालो काछी जवन पठाना। गीतगोविन्द सबनि कर गाना।।
पुरी नरेश गीत गोविन्दा। रच्यो ताहि प्रभु कीनो मन्दा।।
प्रभुहित भोजन विष मिलवायो। कुष्ठ भयो नृप तन फल पायो।।
वन में रहे पराशर साथा। वंशी दई कृष्ण निज हाथा।।
दिग्‌विजयी गायक जश हेतू। गीत गोविन्द गान भव सेतू।।
विप्रसुता संग लखि व्यभिचारा। राज श्याल को किय संहारा।।
करी परीक्षा तन विसरायो। पद्मावती सती जस छायो।।
वग जीव हिंसा रुचि टाली। श्रीजयदेव कृष्ण भई काली।।
लछमन नृप जयदेव सरूपा। प्रकट करायो परम अनूपा।।
सो मूरति श्रीचन्द गुसांई। वृन्दावन प्रभु संग पधराई।।
व्रज जुवती मंडल में नटवर। नाचे सोइ जयदेव रसिकवर।।
पौष मकर गंगा की धारा। अजया मिल जय जस विस्तारा।।
कन्दविल्व मेला समदृष्ढि। लाख लोग आवत रसवृष्टि।।
वारह सो पन्द्रह सम्वत्सर। कृष्ण रोहिनी सुत भये सुन्दर।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृष्ण रोहिणी निज पति मूरत। पाराशर राधा माधव गत ॥
बारह सौ बाइस सम्वत्सर। गये सकल पंजाब पूर्व घर ॥
बरस तीन सो बीते लवपुर। रामराय प्रगटे जु कलाधर ॥
पन्द्रह सौ पचपन वृन्दावन। निर्भय कियो राम जन पावन ॥
माधवेन्द्र आज्ञा नवदीपा। मिले गौर हरि रसिक महीपा ॥
रामराय तहाँ सों व्रज आये। लोकनाथ भूगर्भहि लाये ॥
पुनि वृन्दावन गौर सिधाए। चन्द्रगोपालहि नाम सुनाए ॥
पाछे रूप सनातन जीवा। भट्टगोपाल रसामृत सीवा ॥
हित हरिवंश स्वामि हरिदासा। व्यास प्रबोधानन्द निवासा ॥
सब मिल गीत गोविन्द प्रकाशा। केलिमाल चौरासी भासा ॥

दोहा :— बिन खाये परभात जो, पाठ करे चालीस।
कठिन काम ताको बनें, भीतर दिन चालीस ॥१
रामराय वृन्दाविपिन, निर्भय कीनो आय।
तब सब की बस्ती भई, या लीला कों गाय ॥२

❀ श्रीवृन्दावन की उपासना का मूल ❀

निधुवन सेवाकुंज वन जीवन गीतगोविन्द।
रंग महल की टहल श्री राधा पद अरविन्द ॥
राधापद अरविन्द मत्त श्री गौरचन्द धन।
वल्लभ विट्ठल विपुल जीव भट रूप सनातन ॥
स्वामी श्रीहरिदास हंस हरिवंश उपासन।
व्यास प्रबोधानन्द चन्द गोपाल महामन ॥
अष्टसखा श्रीरामराय के द्वादश पीयो अधर सिंधु।
श्रीजयदेव रसाब्धि के गोता वृन्दाविपिन निधु ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

* श्रीराधाकुञ्जविहारिणे नमः *

जगद्गुरु श्रीजयदेव महाप्रभु वंशावलि

संवत्	नाम	मास तिथि
१०८०	श्रीगिरिधारीजी	चैत्र शु० १ नववर्ष
११००	श्रीहरदेवजी	चैत्र शु० पूर्णिमा
११२०	श्रीभोजदेवजी	का० शु० गोपाष्टमी
११६५	गीतगोविन्दकर्ता श्रीश्रीजयदेव महाप्रभु	माघ शु० वसंत ५
१२१५	श्रीकृष्णदेव प्रभुः	फागुन १५ होली
१२४०	श्रीगोविन्द देवाचार्य	वैशाख पूर्णिमा
१२७०	श्रीमुकुन्द देवाचार्य	ज्येष्ठ पूर्णिमा
१२९५	श्रीअनन्य देवाचार्य	भाद्र शु० पंचमी
१३२०	श्रीमाधवाचार्य	वैशाख शु० ५
१३४२	श्रीप्रद्युम्नाचार्य	आश्विन शु० १०
१३६५	श्रीबालकृष्ण प्रभु	जन्माष्टमी
११८०	श्रीमोहनलालजी	शरदपूर्णिमा
१४२५	श्रीनन्दगोपालजी	मार्ग कृ० ८
१४५५	श्रीगोपाललालजी	मार्ग शु० ५
१४९०	श्रीगुरुगोपालजी	गुरुपूर्णिमा
१५१५	श्रीगौरगोपालजी	होली पूर्णिमा
१५४०	योगिराज श्रीरामराय गोस्वामि प्रभु श्रीवृन्दावन के निर्भय कर्ता के छोटे भ्राता ब्रह्मसूत्रभाष्यकर्ता आचार्य	वै० शु० अक्षय तृतीया
१५५२	श्रीचन्द्रगोपाल गोस्वामी	रामनवमी
१५७०	गो० श्रीराधागोपालप्रभु महावाणी उत्त०	श्रीराधाष्टमी
१५९२	गो० केशवाचार्यजी महाराज वड़े ब्रह्मगोपालजी भाष्यटिप्पणीकर्ता	पौष शु० अष्टमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संवत्	नाम	मास तिथि
१६१६	श्रीगोपीलालजी	का० कृ० ३
१६४५	यदुनाथाचार्यजी	मार्ग शु० ५
१६९०	व्रजरायजी उपनाम गिरिधरजी	श्रावण शु० ८
१७२०	श्रीवृन्दावनचन्द्राचार्य	का० शु० ८
१७४५	श्रीव्रजेन्द्रचन्द्रजी	मार्ग शु० १३
१७७०	श्रीराधिकानाथजी	ज्येष्ठ दशहरा
१८०१	छोटे ब्रह्मगोपालजी ब्रह्मपुरी स्थापक	अन्नकूट १
१८३०	श्रीकल्याणरायजी	देव प्रबोधनी ११
१८५०	श्रीचुन्नीलालजी	श्रा० शु० ३
१८७२	श्रीनन्दकिशोरचन्द्रजी	मार्ग शु० ५
१८७५	श्रीव्रजकिशोरजी छोटे भ्राता	भाद्र शु० १२
१९१०	आ० सार्वभौम श्रीवासुदेवजी महा०	श्रा० शु० ३
१९३२	गो० श्रीप्रियतमलाल प्रभुजी	भाद्र शु० ९
१९६०	श्रीयमुनावल्लभाचार्य गो०	मार्ग शु० १३ मं०
१९८९	श्रीदेवकीनन्दन गो० एम०ए० भ्राता ३	माघ शु० ८
१९९४	श्रीगोविन्दवल्लभ गो०	फागुन शु० ८
२००३	डाक्टर श्रीविठ्ठलनाथ गोस्वामी	मार्ग शु० १०
२०१८	श्रीहरिवंशचन्द्र गो० (देवकीनंदन के पुत्र)	मा० शु १५
२०३१	श्रीजयदेव गोस्वामी द्वितीय पुत्र	मार्ग कृ० १२ मं०
२०१९	सुरेश गोस्वामी (गोविंदजी के ३ पुत्र)	आ० शु० पंचमी
२०२२	श्रीहरिव्यास गो० (राजू)	आ० शु० ८ रवि०
२०२९	श्रीबाँकेविहारी गो०	श्रा० कृ० १० शुक्र०

श्रीजयदेव समाधि वाड़ी–दुसायत में नित्य सत्संग होता है ।
कर्ता— गुरुदेव श्रीयमुनावल्लभ गोस्वामीजी महाराज हैं ।

★

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आद्याचार्य श्रीजयदेव महाप्रभु प्रणीत

श्रीगीतगोविन्दम्

टीकाकर्ता

आचार्य श्रीरामराय महाप्रभुजी

श्रीगीतगोविन्दप्रिया

दोहा—श्रीराधामाधव चरन, सेवासुख अधिकार।
सहज दया जयदेव प्रभु, गायो सरस विहार ॥१॥
महामाधुरी तासु जह, ललित गीतगोविन्द।
रामराय तिनकी शरन, गावत पद सुखकन्द ॥२॥
वन्दौं श्रीगुरु गौर पद, जगमग जोति अभंग।
मिल अनंगमंजरि सहित, एक अंग दो रंग ॥३॥

मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै-
र्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय।
इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुञ्जद्रुमं
राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहःकेलयः ॥१॥

कवित्त—घनघिरि आयौ वन सघन तिमिर छायौ—
रैनि में डरैंगे देखि लेखि यों दृगन ते
नन्दनी कहत वृषभानुनन्दिनी सों नन्द-
नन्दनहि घरे जाहु लैकें बेगि वन ते।
सखी के वचन पाइ प्रेम के रचन भरे
चले तरु तीर छाह जमुना पुलिन ते।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रासराय मारगि रहसि रस केलि भरे
ऐसे राधामाधौ बाधा हरें मेरे मन ते ॥१॥

वाग्देवताचरितचित्रितचित्तसद्मा पद्मावतीचरणचारणचक्रवर्ती ।
श्रीवासुदेवरतिकेलिकथासमेतमेतं करोति जयदेवकविः प्रबन्धम् ॥२॥

* सवैया *

वानी के चित्र चरित्र सों चित्त,
निकेतन जासु विचित्र चिन्यौ है ।
देवी श्रीराधिका के पदपंकज,
दासनु में समराजु गिन्यौ है ॥
कुञ्जविहारी के लीला भरे,
रससिंधु सों प्रेम प्रबन्ध जन्यौ है ।
श्रीजयदेव महाप्रभु के,
महिमामृत गीतगोविन्द बन्यौ है ॥२॥

यदि हरिस्मरणे सरसं मनो यदि विलासकलासु कुतूहलम् ।
मधुरकोमलकान्तपदावलीं शृणु तदा जयदेवसरस्वतीम् ॥३॥

जो चित चाहत कुञ्ज विहार रसामृत पान महान सुधाहू ।
कै कमनीय विलासकला कविकाव्य जु कान परै जह चाहू ॥
तौ अति सुन्दर सुन्दर श्याम की लीला उमंग तरंग प्रवाहू ।
श्रीजयदेव महाप्रभु की रचना सुनि गीतगोविन्द उछाहू ॥४॥

वाचः पल्लवयत्युमापतिधरः सन्दर्भशुद्धिं गिरां
जानीते जयदेव एव शरणः श्लाघ्योदुरूहद्रुतेः ।
शृङ्गारोत्तरसत्प्रमेयरचनैराचार्यगोवर्द्धनः
स्पर्धीकोपिनविश्रुतः श्रुतिधरोधोयी कविक्ष्मापतिः ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शब्द आडम्बर में निपुन उमापति धर,
जाकी कविता में अर्थ गौरव न पायौ है ।
क्लिष्ट काव्य कर्ता श्रीशरन गोवर्द्धनजू,
काव्य में सिंगार रस विरस सुनायौ है ।।
धोई नृप सुनते ही धारन कर लेत शीघ्र,
भाव आदि तिनको न ठीक ठहरायौ है ।
प्रेमभरी रचना के संग संदरभ शुद्धि,
रसकौ सरूप जयदेव प्रभु गायौ है ।।४।।

* अष्टपदी *

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदं विहितवहित्रचरित्रमखेदम् ।
केशवधृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ।।१।।
क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे ।
केशवधृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे ।।२।।
वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना, शशिनि कलंककलेव निमग्ना ।
केशवधृत शूकररूप जय जगदीश हरे ।।३।।
तव करकमलवरे नखमद्भुतशृंगं, दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम् ।
केशवधृत नरहरिरूप जय जगदीश हरे ।।४।।
छलयसि विक्रमणे वलिमद्भुतभामन, पदनखनीरजनितजन पावन ।
केशवधृत वामनरूप जय जगदीश हरे ।।५।।
क्षत्रियरुधिरमयेजगदपगतपापं, स्नपयसि पयसि शमित्तभवतापम् ।
केशवधृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ।।६।।
वितरसिदिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयं, दशमुखमौलिवलिं रमणीयम् ।
केशवधृतरघुपतिरूप जय जगदीश हरे ।।७।।
वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं, हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ।
केशवधृतहलधररूप जय जगदीश हरे ।।८।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizaqtion by eGangotri

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं, सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ।
केशवधृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥९॥
म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालं, धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।
केशवधृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे ॥१०॥
श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारं, शृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ।
केशवधृत दशविधरूप जय जगदीश हरे ॥११॥

प्रलय उदधि सों वेद, आपुहि हरि रक्षा करे,
मानें कछुक न खेद, सत्यव्रत मनु सुख भरे ।
केशव अनुपम मीन, जय जगदीश हरे ॥१॥
कठिन सु-पीठ विशाल, गिरि मंडल तापर लसे,
दिव्य सु-दीठ रसाल, लोक चक्र जापर बसे ।
केशव कच्छप रूप, जय जगदीश हरे ॥२॥
दशन शिखर पर वास, सहजु करायौ धरनिकौ,
मनहु चन्द छवि भास, दीखत शोभा वरनिको ।
केशवरूप बराह, जय जगदीश हरे ॥३॥
श्रीकर कमलन बीचु, नख मनु अद्भुत सींग हैं,
हिरन कशिपु को खींचु, फारयो उदर जु धींग हैं ।
केशव श्रीनरसिंह, जय जगदीश हरे ॥४॥
बलि छलिवे के हेत, श्री उपेन्द्र नामहु धरे,
सकल शुद्धि कर देत, जो जल पद नख सों ढरे ।
केशव वामन वेश, जय जगदीश हरे ॥५॥
छत्रिय रुधिर तड़ाग, कितने भर परघट करे,
किये तहाँ पुनि जाग, न्हान करत पापहु हरे ।
केशव परशूराम, जय जगदीश हरे ॥६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लंकेश्वर दशशीश, रन में काटे बान सों,
किये सहायक कीश, दश दिश वलि प्रदान कों।
केशव दशरथ राम, जय जगदीश हरे ॥७॥
रोहिनि नन्दन वीर, नागसुता संग रास किय,
खेंचो जमुना नीर, अवगाहन उल्लास हिय।
केशव हलधर राम, जय जगदीश हरे ॥८॥
पशु हिंसा लखि आप, वेदहु की निंदा करी,
दयासिंधु हर ताप, सुगत विशारद श्री हरी।
केशव बुद्ध शरीर, जय जगदीश हरे ॥९॥
म्लेछ समूह विनाश, हेतु लेंहि तरवार कर,
कलि मल करि हैं नाश, धर्म सनातन धार हर।
केशव कल्कि स्वरूप, जय जगदीश हरे ॥१०॥
श्री जयदेव उदार, रामराय भगवान धन,
देंहि सहज भव तार, होय जोय अनुराग मन।
केशव दश विध रूप, जय जगदीश हरे ॥११॥

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यान् दारयते वलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते,
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥१॥

वेदनु उधार्‍यो पीठ भूधर समार्‍यो भूमि,
मंडल कों दंत धारि हिरना को मार्‍यो है।
बलि के छलैया छत्रीवंश के दलैया,
लंकापति के मिटैया रघुनाथ रूप धार्‍यो है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कालिंदी कर्षन कृपा वर्षन सुदीनन पै,
म्लेच्छ अघमर्ष कलि कल्मष प्रतारयो है।
ऐसे दशरूप धारें हारें सग भूमि भारें,
रसिक बिहारें कृष्णचन्द्र जग तारयो हैं ॥१॥

॥ श्रीजगन्नाथजी के मुख से प्रत्यक्ष गाया हुआ ॥

(द्वितीय प्रबन्ध गुर्जरी राग प्रति म० ताल)

श्रितकमलामुख(कुच)मण्डल धृतकुण्डल ए,
कलित ललित वनमाल, जय जयदेव हरे ॥ध्रु०॥१॥
दिनमणिमण्डलमण्डन भवखण्डन ए,
मुनिजनमानसहंस, जय जयदेव हरे ॥२॥
कालियविषधरगञ्जन जनरञ्जन ए,
यदुकुलनलिनदिनेश, जय जयदेव हरे ॥३॥
मधु-मुर-नरक-विनाशन गरुड़ासन ए,
सुरकुलकेलि निदान, जय जयदेव हरे ॥४॥
अमलकमलदललोचन भवमोचन ए,
त्रिभुवनभवननिधान, जय जयदेव हरे ॥५॥
जनकसुताकृतभूषण, जितदूषण ए,
समरशमितदशकंठ, जय जयदेव हरे ॥६॥
अभिनवजलधरसुन्दर, धृतमन्दर ए,
श्रीमुखचन्द्रचकोर, जय जयदेव हरे ॥७॥
तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए,
कुरु कुशलं प्रणतेषु, जय जयदेव हरे ॥८॥
श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदम्,
मङ्गलमुज्वलगीतं, जय जयदेव हरे ॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(द्वितीय प्रबन्ध अष्टपदी)

श्रीराधिका उरोज रंग रंजित कुण्डल धारु।
जय जयदेव हरे हरे वनमाला उर चारु ॥१॥
दिनमणि मंडल मंडना भवभय करि विध्वंश।
जय जयदेव हरे हरे मुनि जन मानस हंस ॥२॥
कालिय विषधर गंजना जनरंजन प्रिय वेश।
जय जयदेव हरे हरे जदुकुल नलिन दिनेश ॥३॥
मधु मुर नरक विनाशना गरुड़ासन प्रिय प्रान।
जय जयदेव हरे हरे सुर कुल केलि निदान ॥४॥
अमल कमलदल लोचना भवभय मोचन ध्यान।
जय जयदेव हरे हरे त्रिभुवन भुवन निधान ॥५॥
जनक सुता कृत भूषणा जित दूषन खर वीर।
जय जयदेव हरे हरे हत दशकण्ठ शरीर ॥६॥
नव जलधर सुन्दर सुवपु धृतमन्दर वर जोर।
जय जयदेव हरे हरे राधा बदन चकोर ॥७॥
तव पद पल्लव प्रणति हे भक्त भूप घनश्याम।
जय जयदेव हरे हरे कुशल करहु अविराम ॥८॥
श्रीजयदेव कृपालुकृत उज्ज्वल मंगल गीत।
रामराय भगवान हित गावत परम पुनीत ॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जगद्गुरु श्रीजयदेवमहाप्रभुवंशोद्भव
आचार्य श्रीयमुनाबल्लभ गोस्वामीजी कृता–

भावविलासिनी

रसनिधि रस के प्रानधन, कुंजविहारी लाल।
लिखवाई सो लिख दई, लीजे इसे सम्हाल ॥१॥

ब्रह्माण्डों में भारतवर्ष उसमें ब्रजमण्डल व्रज में श्रीवृन्दावन प्रधान है, यहाँ श्रीरासलीला सर्वश्रेष्ठ है, वह योगमाया द्वारा सिद्ध हुई है इसमें छै रितुओं का समागम छै मास की एक रात्रि बनाकर किया है। वह ब्रह्मरात्रि है। हजार बार चार युग बीतने पर ब्रह्माजी का एक दिन होता है उसी की रात्रि को ब्रह्मरात्रि कहा। महारास इसी रात्रि में हुआ था, उसका वर्णन श्रीमद्भागवत में श्रीशुकदेवजी ने किया है किन्तु उसमें केवल शरद का रास है जिसमें रासेश्वरी श्रीराधा का नाम नहीं है, साथ-साथ परीक्षित ने प्रश्न कर दिया कि पर-नारियों के साथ विहार तो धर्म नहीं। श्रीशुकाचार्य ने अग्नि का दृष्टान्त देकर रास समाप्त कर दिया। झूलन होली दान मान सब रह गये तब श्रीजी ने रास को पूरा करने के लिये नन्द नामक वंशी को भेजा वही श्रीजयदेव कवि हैं आपने आधे रास को गीतगोविन्द नाम से पूरा किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।। वंशी के भेदों में नन्द वंशी ।।

दश अंगुल परमान है, महानन्द तेहि नाम।
एकादश अंगुल कहे, नन्द नाम सुख धाम ।।१।।
द्वादश अंगुल की विजय, चौदह की जय जाम।
चार भेद या विधि कहे, रामराय रसखान ।।२।।
पुनि इनके प्रत्येक के, तीन तीन हैं भेद।
वेणु मुरलिका वंशिका, कीचक कनक सुवेद ।।३।।
वांस पोर सो वेणु है, मुरली सुवरन कीन।
रतनजटित वंशी प्रिया, प्रिय इच्छित फल दीन ।।४।।
गोचारन में वेणु है, मुरली धुनि संकेत।
मनमानी जब करत हैं, तब वंशी कर लेत ।।५।।
अत्र गीत गोविन्द में, नन्द नाम रस सेव।
एकादश अंगुल सोई, आचारज जयदेव ।।६।।
आद्य रसिक वृन्दाविपिन, रसिकन के प्रतिपाल।
रामराय फल बीज रस, गीतगोविन्द रसाल ।।७।।

।। प्रथम श्लोक व्याख्या ।।

गोकुल रावल दोनों ग्राम मथुरा के पास ही हैं। श्रीराधाजी के नाना का नाम रावल गोप था उन्हीं के नाम से गाम विख्यात है। श्रीराधाजी की जन्मभूमि यही है, बाल-लीला ननसार में हुई गोकुल से गोकुलचन्द रावल से राधा निकल कर दोनों खेतों में घरुआ पाती खेल खेला करते। एक दिन नन्दबाबा ने खेत पर जाकर बच्चों का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोई ध्यान नहीं दिया और रात हो गई, अब घबराये कि सेवक भी सब चले गये इन बालकों को घर कौन पहुँचायेगा, विचार किया राधा कन्हैया से सयानी है, कन्हैया डरपोक है वह बिल्ली से डरता है। इससे राधा से ही यह काम होगा, बाबा ने कहा देखो बेटी राधा आज घटा घिर रही है, अंधेरी रात है, काले-काले तमाल के तरुवरों की छायासे और भी अधिक अंधेरा हो गया है आधीरात सी लग रही है। राधे यह तुम्हारा मनमोहन भारी भीरु है, इससे तुम इसे सम्हाल कर घर ले जाओ। बावा की बात मानकर मिले-झुले दोनों चल दिये, श्रीयमुना कूल पर जो एकान्त केलि हुई उसकी जय हो ॥१॥

॥ इस श्लोक के भाव में सूरदासजी का पद ॥

गगन गरज घहराई जुरी घटा कारी
पवन झकझोर चपला चमक चहुँ ओर
　सुवन तन चिते नन्द डरत भारी ॥
कह्यो वृषभानु की कुमरि सों बोलकें
　राधिके कान्ह घर लिये जारी ॥
दोऊ घर जाओ संग नभ भयो श्याम रंग
　कुमर कर गह्यो वृषभानु वारी ॥
गये वन सघन ओर नवल नन्द के किशोर
　नवल राधा नये कुञ्ज चारी ॥
अंग पुलकित भये मदन तन मन छये
　सूर प्रभु श्याम श्यामा विहारी ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।। द्वितीय व्याख्या ।।

मेघों से घिरा हुआ आकाश, तमाल वृक्षों से ढकी हुई वन की भूमि एवं रात्रि का समय सभी तो श्याम है। वहुवल्लभ श्रीकृष्ण अपनी प्रियाजी को विश्वास देकर किसी अन्य प्रिया के पास मिलने चले गये वहाँ अधिक समय लग गया जब याद आई तो भयभीत हो गये, अकस्मात् नन्दवंशी वहाँ आगई उन्होंने उससे सब हाल कहा। नन्दवंशी बोली, प्रियतम ! मैं प्यारीजी से आपको इस तरह मिलाऊंगी जो वे आपसे कुछ न कहेंगी। साथ ले जाकर श्रीवृन्दावन की अन्धकार भरी सघन लताओं में आपको खड़ा कर स्वयं श्रीजी की निकुञ्ज में जा पहुँची और कहने लगी, हे लड़ैती ! आप यदि अभयदान दें तो मैं कुछ मांगना चाहती हूँ। सुनकर प्रियाजी वोली, सखी ! जो तुम प्यारे को लाकर हमसे मिलादो तो जो मांगोगी वही पाओगी। वंशी वंशीधर को लिवा लाई और श्रीजी से प्रार्थना करने लगी, प्यारीजी ! प्यारे से कुछ कहना नहीं, देखो ये तुमसे अत्यन्त डर रहे हैं। अब तुम इन्हें घर ले जाओ। नन्दवंशी के प्यार भरे आदेश से मिले हुए श्रीराधामाधव आधीरात के समय कुञ्ज-कुञ्ज में दान-मान, झूलन, मिलन के द्वारा यमुना पुलिन की एकान्त लोला में निमग्न हो गये ।।१।।

पद— कौन हिडोरे डारे निधुवन ।

कौन झुलावत झूलत झुक-झुक, मिले रसिक जन जीवन ।।
चपला चमक दमक दुर बैठी, मिली भामनी मेघन ।
कैसे गावत राग मलारन, रीझे भीजे तन मन ।।
परत फुहार पवन पुरवाई, अचरा उडत झकोरन ।
लाखा सखी लखी छवि भामन, राधामाधव सामन ।।१।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद—भीजन लागे री दोऊ जन। अचरा की ओट करत दोऊ जन अति ऊन्मत्त रहत निश वासर राग ही के रंग रंगे दोऊ जन। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्ज-बिहारी प्रेम परस्पर नृत्य करत दोऊ जन ॥

देख सखी राधा प्रिय केलि ॥
ये दोऊ खोर खिरक गहवर वन विहरत कुमर कंठ भुज मेलि ॥
ये दोऊ नवलकिशोर रूप निधि विटप तमाल कनक मनो वेलि।
अधर अदन चुंवन परि रंभन तन पुलकित आनंद रस झेलि ॥
पट वंधन कंचुकी कुच परसत कोप कपट निरखत कर पेलि।
हित हरिवंश लाल रस लम्पट धाय धरत उर बीच सकेलि ॥

प्रथम श्लोक में एकान्त और अनैकान्त दोनों तरह की लोलाओं का संकेत है। पहिली दो अष्टपदियों में अवतार कथा है और वह मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र पर्यन्त हैं, इतने वर्णन का आशय श्रीकृष्ण को अवतारी सिद्ध करना है सब आपके ही अवतार हैं।

दूसरी अष्टपदी में रसका संचार निगूढ़ रूप से है। यह सर्वत्र संध्या आरती में गाई जाती है प्रचलित है। अष्ट वसुओं में द्रोण नामक वसु देवता नन्द हैं। आपके पुत्र श्री सम्पन्न हुए उन्हीं का नाम श्री वासुदेव है, उनकी रति के लिए कथा समुदाय का वर्णन करना सबका कांम नहीं। तब सरस्वती के चरित्र वाक् सौन्दर्यादि गुणों से चित्र विचित्र चातुर्य चमत्कृत चित्त रूप सदन वाले श्रीपद्मावतीजी के चरण चारन में चक्रवर्ती श्रीजयदेव महाप्रभु हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद—आज सखि प्रिया प्रेम रस घाट।
सब सुख भूलत हिय में फूलत, त्रिभुवन के सम्राट॥
पाय पलोटत नैनन ओटत, जोहत मुश्कन बाट।
सेवा सुख पावत गुन गावत, मानो चारन भाट॥
सकल सहचरी जुगल मद भरी कुञ्जमहल के ठाट।
रामराय अनुराग रसासव, पीवत भर भर माट॥१॥

साक्षात् भक्तावतार श्रीजयदेव महाप्रभु–सरस्वती, महालक्ष्मी दोनों का बल लेकर श्रीवासुदेव की रति केलि कथा से भरे इस गीत-गोविन्द नाम के प्रबन्ध को वर्णन करते हैं।

सरस्वती अविद्या दूर करती है उसी से गोविन्द की रति का लाभ होता है। श्रीवासुदेव की रति में बड़ा भारी खर्चा है इस कारण महालक्ष्मी की याद की दोनों देवियों ने इस प्रबन्ध के प्रबन्ध में सहायता की है, जहाँ लक्ष्मी सरस्वती विद्यमान हैं वहां की रहनी सबको अच्छी कहनी है पंडित गरीब और मूर्ख धनी प्रायः होते हैं यदि पंडित के पास पैसा है और मूर्ख को विद्या मिल गई तब तो सोने का कटोरा दूध से भरा हुआ है, यह प्रबन्ध रत्नों की खान है क्योंकि इसमें सरस्वती लक्ष्मी दोनों का संगम है। यदि श्रीकृष्ण की स्मृति में मन का सरसत्ता प्राप्त होती है यदि विलास कलाओं में कुतूहल हो तो श्रीजयदेव महाकवि रचित मधुर कोमल कमनीय पदावली का श्रवण करो, यह सरस्वती है जैसे गंगा यमुना वाहिर में प्रगट है उसी प्रकार सरस्वती अन्तःसलिला है वे दोनों शरीर को पवित्र करती हैं यह अन्तःकरण को पवित्र करती है, अर्थात् अज्ञानजनित समस्त मन के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मालिन्य को धोकर श्यामाश्याम के शुद्ध रस माधुर्य में निमग्न कर देती है। इन पद्यों में श्रीराधामाधव की एकान्त केलि अभिधेय है, प्रतिपाद्य प्रतिपादक भाव सम्बन्ध है उनकी लीलाओं का अनुमोदन और उससे उत्पन्न हुआ आनन्दानुभव प्रयोजन है तथा इस रस से भावित अन्त:करण जीव अधिकारी कहे है ॥३॥

॥ श्रीव्यासवाणी ॥

श्रीपद्मावति पति पद शरणम् ।

कुंजकेलि कविराज मुकुटमणि रसिक अनन्यनि आभरणम् ।
हित हरिवंश हंसमुख सुखमय वचन रचन दुख जल तरणम्।
श्रीजयदेव व्यासकुल वन्दित व्रजयुवती नट नृत करणम् ॥1

भावार्थ—

एक दिन श्रीहरीराम व्यासजी ने श्रीहित हरिवंश गोस्वामीजी से पूछा कि संसार में अपार दु:ख हैं इनसे कैसे पार हों तब श्रीहित-हरिवंशजी तो नीर क्षीर के विवेक में हंस ही ठहरे उन्होंने कहा—व्यासजी ! श्रीव्रजाङ्गनाओं के मध्य में नटवरवपु धारणकर जिन्होंने रासलीला में नृत्य किया था वे आज अनन्य रसिकों के आभूषण प्रगट-स्वरूप में आये हैं। उनकी कुंजकेलि को उनके बिना कोई भी तो वर्णन नहीं कर सकता है अत: वे श्रीकृष्ण स्वयं ही कविराज मुकुटमणि श्रीपद्मावतीजी के पति श्रीजयदेव महाप्रभु हैं इनकी शरणागति बिना रस का आस्वादन नहीं हो सकता है यह वाक्य श्रीहितजी के मुखार-विन्द से निकले सुखमय थे। श्रीजयदेव महाप्रभु के रस सागर गीत-गोविन्द का गान करने से चित्त की एकाग्रता होगी और सम्पूर्ण दु:खों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से छुटकारा मिल जायगा, यह अपने जीवन का दिव्य लक्ष पाकर श्रीव्यासदासजी ने कहा कि—अब मैं उन श्रीजगद्गुरु श्रीजयदेव भगवान की शरण हो गया हूँ और आज से व्यासकुल के वे सर्वदा वन्दनीय हैं श्रीव्यासजी की उपासना का यही मूल है ॥१॥

श्रीव्यासदासजी ने रसिकाचार्य शिरोमणि का जैसा वर्णन किया है उसकी झाँकी करिये।

॥ पद—श्रीव्यासवाणी ॥

श्रीजयदेव से रसिक न कोई जिन लीला रस गायो।
जाकी जुगति अखंडित मंडित सबही के मन भायो॥
विविध विलास कला कवि मंडन जीवन के भागन ते आयो।
पतित पतत्रे, मुख निसरत ही राधामाधव दर्शन पायो॥
वृन्दावन को रसमय वैभव जिनने सबते प्रथम सुनायो।
ता पाछैं औरन कछु पायो सो रस सबहिं चखायो॥
पद्मावति रोहिणि पद चारण जिन गोविन्द रिझायो।
व्यास न आस करी काहू की कुंजन श्याम बुलायो॥२॥

भावार्थ—

श्रीराधामाधव की नित्यलीला रस के गान करने में श्रीजयदेव महाप्रभुजी के समान कोई नहीं है। आपकी रस उपासना अलौकिक रस से मंडित और तार्किकों की युक्तियों से अखंडित है। इस रस साधना में अनेक विलास कलाओं की सजावट है। संसारी जीवों का भाग्य उदय होगया जो आप भूमण्डल पर प्रगट हुए। प्रभु ने भक्तावतार धारन कर श्रीराधामाधव के दर्शन का मार्ग सभी को प्रत्यक्ष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कराया। प्यारे श्रीश्यामसुन्दर को कैसे बुलाया जाता है उसके लिए २४ अष्टपदी निश्चित कर दी इनसे प्रियतम पास आ जाते हैं। यद्यपि शुकाचार्य श्रीमद्भागवत में सब कुछ कह चुके थे किन्तु फूल की सुगंधि और चन्दा की चाँदनी की तरह रूप उजागरी श्रीराधा नागरी का वर्णन करना छोड़ गये, इसी कारण श्रीवृन्दावन रस अधूरा ही रह गया उसे परिपूर्ण करने को श्रीवृन्दावन का रसमय वैभव, श्रीराधा-माधव की यमुनाकूलकलोल्लिनी लीला के साथ सबसे प्रथम श्रीजयदेव प्रभु ने बतलाया, आपका अनुकरण कर सभी आचार्यों ने उस रस को अपनाया जो चारसौ वर्ष तक एकछत्र बना रहा पश्चात् सूरदास प्रभृति अष्टसखाओं ने पान किया और पिलाया किन्तु हरि चतुष्टयी अर्थात् श्रीहितहरिवंशगोस्वामी श्रीस्वामी हरिदासजी तथा श्रीहरीरामजी व्यास और चौथे श्रीहरिव्यासदेवजी एवं श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती आदि सभी रसिकों ने दृढ़ता से अपनी अपनी सम्प्रदाय का वीज बताकर पल्लवित प्रफुल्लित परिपक्व रस से भरा दिव्यफल सब किसी को चखाया। इस अलौकिक रस का अनधिकारी कोई नहीं है, समझाने वाला चाहिये। श्रीजयदेव महाप्रभु ही श्रीवृन्दावन रस के आद्य पथ प्रदर्शक हैं, आठसौ वर्ष व्यापी श्रीवृन्दावन साहित्य का मूल श्रीगीत-गोविन्द रस है। श्रीरोहिणीजी ने श्रीपद्मावतीजी के साथ भावाविष्ट होकर श्रीराधागोविन्द को वश में कर लिया। श्रीव्यासदासजी कहते हैं कि सर्वतन्त्र स्वतंत्र जगद्गुरु श्रीजयदेव महाप्रभुजी ने किसी सन्त या शास्त्र की आशा न करके निधुवनमें रस भरे प्यारसे प्यारे श्यामसुन्दर को बुला लिया जिस पद से आपने भगवान् का आह्वान किया था तथा जिससे दर्शन पाया था वह पद पंचम सर्ग अष्टपदी श्रीगीतगोविन्द में है। "रतिसुखसारेगतमभिसारे" है॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।। अद्भुत रसलीला का वर्णन ।।

बैठे सेवाकुंज में श्रीराधा घनश्याम ।
सकल सहचरी संग में शोभा अति अभिराम ।।१२।।
ललिता सखी स्वरूप में श्रीस्वामी हरिदास ।
सखी विशाखा भाव में हरीरामजी व्यास ।।१३।।
वंशी हितहरिवंशजी चित्रा चन्द्रगोपाल ।
रामराय रति मंजरी रूप मंजरी वाल ।।१४।।
सखी तुंगविद्या चरित ललित प्रवोधानन्द ।
सबको जीवनधन तहाँ एक गीत गोविन्द ।।१५।।
बोल उठीं श्रीविशाखा सो पद भाव विलास ।
अपने हियसों प्रगट किय व्यासदास सुखरास ।।१६।।

।। पद व्यासवाणी ।।१८।।

श्रीराधावल्लभ नव कीरति वरनत नांहि विघात ।
भरतखंड की सुकवि मण्डली गावत हूँ न अघात ।।
बड़े रसिक जयदेव बखानी लीला अमृत चुचात ।
वृन्दावन हरिवंश प्रसंसित सुनि गोरी मुसिकात ।।
राग सहित हरिदास जु गाई नदी बही न बहात ।
रसिक अनन्यनकी झूंठिनकों व्याससखी रुचि सुचिकें खात ।।

भावार्थ

एक समय श्रीनारद सनकादिकों ने श्रीब्रह्माजी से कहा कि आप श्रीराधावल्लभलाल की कीर्ति का गान कीजिये। ब्रह्माजी ने कहा—भक्तवृन्दो ! मुझे तो सृष्टि के कार्यों से ही अवकाश नहीं है,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तब सबने श्रीकृष्णद्वैपायन व्यासजी से प्रार्थना की, उन्होंने श्रीमद्भागवत महापुराण द्वारा उसे मन भरके गाया परन्तु उसमें मर्यादा मिली हुई थी। यह वार्ता सेवाकुञ्ज में श्रीप्रियाप्रियतम के सामने हो रही थी। श्रीहित सहचरीजी बोलीं कि आपके प्यारे बड़े रसिक हैं उन्होंने जो गाया है उसमें से अमृत चुचाता है। प्रियतम की इस प्रकार की प्रशंसा को सुनकर श्रीकिशोरीजी हँसने लगीं, श्रीहित सखीजी ने समझा कि श्रीलाड़िलीजी हमारी चर्चा की हँसी उड़ाती हैं। आपने अपने लक्ष को पुष्ट करने के लिये श्रीललिताजी से कहा कि आप श्रीप्यारीजी की शंका दूर करने के लिये थोड़ा-सा गीतगोविन्द गानकर सुना दीजिये। श्रीस्वामी हरिदासजी ने देशराग में भरकर यह अष्टपदी गान की—श्रीगीतगोविन्द सर्ग १० प्रबन्ध १६ ॥

॥ अष्टपदी ॥

बदसि यदि किंचिदपि दन्तरुचिकौमुदी
हरति दरतिमिरमतिघोरम् ।
स्फुरदधरसीधवे तव बदनचन्द्रमा
रोचयति लोचनचकोरम् ॥ इत्यादि

अर्थात् लालजी प्यारीजी से कहते हैं कि हे प्रिये ! जब आप कुछ भी बोलती हो तो आपकी दन्तावली की कान्ति अन्धकार को दूर कर प्रकाश कर देती है।

भावार्थ—

बात यह थी कि स्वामिनीजी प्यारे से गुस्से में थीं इन सबका लक्ष उन्हें प्रसन्न करना था तभी यह प्रसंग छेड़ा उसमें सफलता मिली वह क्या कि इस गायन को सुनकर प्रवाहित रसरूपा श्रीयमुनाजी का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रवाह रुक गया, श्रीयमुनाजी के अनुराग को देख श्रीजी ने कहा सखियो यथार्थ में बड़े रसिक की वाणी बड़े रस से ही भरी हुई है। ऐसे अनन्य रसिकों की प्रसादी व्यास सखी स्वादपूर्वक पाती हैं ॥२॥

अब श्रीजयदेव महाप्रभुजी की वंशावली कहते हैं।

॥ मंगल बधाई का अंश ॥

जयदेवसुत श्रीकृष्ण तिनके पुत्र गोविंदजू भये।
तिनके मुकुन्द अनन्य तिन माधव सुवन प्रद्युम्न ये॥
तिनबाल मोहनलाल नंदगोपाल तिन आत्मज लये।
तिन तनुज गुरुगोपाल तिनके रामराय सुचन्द ये॥
भगवानभूपविनीत मंगल गावत करि पद वन्दना।
जय जय श्रीजयदेव कृष्ण मत मण्डना ॥४॥
श्रीजयदेव दयालु ते वर्ष चारसौ शेष।
प्रगटे लवपुर धाम में रामराय योगेश ॥१७॥
विक्रम संवत प्रगट भये पन्द्रहसौ चालीस।
माधव सुद एकादशी रामराय वागीश ॥१८॥
तीन बरस के हे तबहि निज दो रूप दिखाय।
भये बरस दश के जबै विप्र सहस्र जिमाय ॥१९॥
योग प्रतापी देखके चली व्याह की बात।
ताही रात विदा भये हरिद्वार परभात ॥२०॥
आशुधीर नाना मिले गंगातट संग जोर।
आये परसादी सदन अचल तीर व्रज कोर ॥२१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तहाँ पधारे अचल सों निकसे सुन्दर श्याम।
दई मुद्रिका दैन्य हर पधराये द्विजधाम ॥२२॥
व्रज यात्रा श्रीमधुपुरी कितने विप्र जिमाय।
मानसि सेवा चमत्कृत व्रजवासी समुदाय ॥२३॥
संवत सोलह सो करी आज्ञा सहज सुभाव।
श्रीवृन्दावन जस कहो रसना को सुख पाव ॥२४॥
अब में सबते प्रथम ही "वृन्दावन परकाश"।
कहत कियो गुरुदेव ने व्रजवासी अभिलास ॥२५॥
पिता तथा माधवपुरी नित्यानन्द सुभाग।
रामराय के तीन गुरु मंत्र शास्त्र वैराग ॥२६॥
माधवेन्द्र संकेत किय विद्या शिष्य बनाय।
रामराय निज योगबल करो अभय वनराय ॥२७॥
हिंसक जन्तु अनेक हैं तिन भय कोउ न बसाय।
झाड़ी गाढी अन्धेरी सूरज धूप न जाय ॥२८॥
व्रजवासी सब दूर ते कर अंगुलि निर्देश।
कहत तहाँ नहिं जाइये हिंसक जन्तु विशेस ॥२९॥
नित्य सिद्ध वंशीकुलज अतुलित बल श्रीराम।
योगिराज वृन्दाटवी कियो सहज विश्राम ॥३०॥
संवत् पन्द्रह सौ सुभग पचपन माधौ मास।
श्री वासन्ती पूर्णिमा मिले जुगल सुख रास ॥३१॥
रस सेवा प्रमुदित भये जेठ मास वद दूज।
परिकरमा संग ले करी नूपुर मुरली गूंज ॥३२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृन्दावन के कीशकुल शुक पिक मोर चकोर।
चक्रवाक कलहंस मृग खग कपोत प्रिय मोर ॥३३॥
राधामाधव क्रीडनक जान प्रसन्न करेजु।
मधुर मधुर भोजन दिये मानस भोग धरेजु ॥३४॥
वृश्चिक रिक्ष सु तीख विष कीट कटुक बहुव्याल।
नर तन दे सन्मुख किये सूकर सिंह शृगाल ॥३५॥
पूछी बोलो चाहना जोय तुमारी होय।
जीवन के कल्याण पथ भक्ति मुक्ति हैं दोय ॥३६॥
जिनको भक्ति उपासना दिये विपिन रज मेल।
मुक्ति पथिक करि शून्यलय कीनो अद्भुत खेल ॥३७॥
वृन्दावन निर्भय कियो रामराय गुरुराय।
सन्तन कह्यो अनेक विध मोय सुनाय सुनाय ॥३८॥
अग्रदास सतसंग करि श्रीगुरु महिमा गान।
जैसें कीनों कहत हों तिनके वचन प्रमान ॥३९॥

पद– पुरी गुसांई आज्ञा पाय।
नित्य सिद्ध योगी वंशीकुल रामराय वृन्दावन आय ॥
मोर चकोर परावत शुक पिक मृग मर्कट चटकन्हिं मिलाय।
रक्षा किये दिये रस पोसन जुगलकिशोर खेलने भाय ॥
बाघ बराह ब्याल वृक वृश्चिक भालू हिंसक लिये बुलाय।
नरतन दे पूछो कहा चाहो भक्ति मुक्ति में कौन सुहाय ॥
दई भक्ति जिनकों देखत ते वृन्दावन द्रुम रहे समाय।
मुक्ति पथिक नभ मंडल मेले निर्भय भयो विपिन समुदाय ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पन्द्रह सौ पचपन माधव सुद पूनम अनुपम चरित दिखाय।
श्रीवन की परिकरमा दीनी वनविहार दुतिया निशि माय ।।
श्रीराधामाधव हँसि भेटे ऋतु वसन्त आनंद न समाय।
धीर समीर तीर जमना के केलि कदम्ब कदम्ब सिहाय ।।
सबहि देत सन्मान मान मन मिले खिले हियसों हरषाय।
सम्प्रदाय हरि मिलन मार्ग है हरिसम इनकों निजी बताय ।।
श्यामा श्याम जानकी रामहि वरनत करत एक समुझाय।
अग्रअली श्रीरामराय की कीरति शतमुख कही न जाय ।।

दोहा—श्रीजी की सेवा करत व्रजवासिन के पास।
माधवेन्द्र प्रभु की कृपा नित्य सिद्ध बलरास ।।४०।।
पन्द्रह सौ पैंसठ सुदी पौष मास के शेष।
कन्दविल्व होते गये नवद्वीप रवि मेष ।।४१।।
माधवेन्द्र भेजे हते श्रीगौराङ्ग निवास।
कही तहाँ रस की कथा माधव जेठ दुमास ।।४२।।
जगन्नाथ यात्रा करी आये पुनि नवद्वीप।
वृन्दावन निर्भय चरित कहत रखे सु समीप ।।४३।।
वृन्दावन निर्भय भयो सुनत मुदित श्रीगौर।
माधवेन्द्र पद ध्यान कर श्रीगोवर्द्धन ठौर ।।४४।।
रामराय जयदेव कुल सरस गीतगोविन्द।
सुनत गान विस्मित भये गौरचन्द सुखकन्द ।।४५।।
विदा भये जब भक्तगन तजि नवद्वीप रसाल।
रामराय संग रसिक कछु भेजे शचीदुलाल ।।४६।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोकनाथ भूगर्भ कों श्रीचैतन्यादेश।
लाये वृन्दाविपिन में रामराय रसिकेश ॥४७॥
उतमें हरि सन्यास लिय समाचार जह पाय।
रहे न वृन्दाविपिन में दोनों गये पराय ॥४८॥
जह वार्ता माधवपुरी निकट कही प्रभुपाद।
श्रीगौराङ्ग मिलाप के कहे सकल संवाद ॥४९॥
अब वृन्दावन रस भ्रमर आये निर्भय पाय।
कछुक नाम तिनके कहूँ जो अति बड़े कहांय ॥५०॥
पन्द्रह सो शुभ बहत्तर चैत कठिन मग चाल।
सपत्नीक निज इष्ट सह आये चन्द्रगोपाल ॥५१॥
वर्ष तिहत्तर क्वार सुद चौदस गौर किशोर।
आये निवसे ब्रह्मह्रद रसिक भक्त घितचोर ॥५२॥
रामराय पटये तिन्हे लावन चन्द्रगोपाल।
पधराये निज कुंज जहँ राधामाधवलाल ॥५३॥
निरखि सेव्य जयदेव के राधामाधवलाल।
मूर्छित ह्वै धरनी परे श्रीगौराङ्ग दयाल ॥५४॥
चरण दवाये चन्द्र प्रभु कमला ब्यजन ढुरात।
रामराय जयदेव को अष्टपदी जु सुनात ॥५५॥
भये जवै चैतन्य हरि बोले इच्छा जोय।
मांगहु मैं तुमको दऊँ रामराय रसभोय ॥५६॥
पदरति मांगी राम ने दियो चन्द्र को नाम।
कमला को आशीष दिय पुत्र होय सुखधाम ॥५७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कार्तिक भर यात्रा करी ब्रज की श्रीचैतन्य ।
लखि गोवर्द्धननाथ को पुलकित भये अनन्य ॥५८॥
विक्रम पन्द्रह चौहत्तर श्रीवल्लभ आचार ।
पठये श्रीचैतन्य ने तिन किय भक्ति प्रचार ॥५९॥
रूप सनातन भट्ट हित जीव चन्द्र मधु सन्त ।
स्वामी व्यास सरस्वती वृन्दावन विकसन्त ॥६०॥
पन्द्रहसौ नव्वै विसें कृष्णदास कविराज ।
श्रीनारायणभट्टजी सौलह सै दो साज ॥६१॥
निम्बार्की श्रीभट्टजी सोलह सौ चालीस ।
मथुरामध्य निवास तिन वृन्दावन आशीस ॥६२॥

* श्रीनाथजी का प्रसङ्ग *

विक्रम पन्द्रह बहत्तर चैतमास के अन्त ।
माधवेन्द्र उत्कल गये चन्दन लेन बसन्त ॥६३॥
रामराय को दै गये सेवा श्रीगोपाल ।
आये नहिं पुनि लौट के सेवक आये चाल ॥६४॥
माधवेन्द्र के शिष्य हैं बंगाली दो भ्रात ।
रामराय सेवा करन राखे अतिहि सिहात ॥६५॥
श्रीचैतन्य महाप्रभु पठये बल्लभ देव ।
सब तजि के अब कीजिये श्रीगोपालक सेव ॥६६॥
श्रीवल्लभ आचार्य महाप्रभु कों दे श्रीनाथ ।
रामराय प्रभु मुदित भये किये अनाथ सनाथ ॥६७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

※ पद श्रीआदिवाणीजी ※

जय श्रीमाधव सतगुरु देवा ।
भक्ति शास्त्र को मर्म पढ़ायो दीनी गिरिधर सेवा ।।
मंगल सों लें सैन अवधि जे भोग पदारथ मेवा ।
नित नैमित्तिक लाडलडावत नन्दभवन सुख जेवा ।।
सत्य सनेही मनु व्रजगेही भवसागर के खेवा ।
वन्दत पद मुहि त्याग सिखायो हरि अनुराग कलेवा ।।
गीतगोविन्द गान किये चित्रित कोकिल मोर परेवा ।
श्रीगोपाल होय वश जिनके ग्रीषम कहो लगेवा ।।
चन्दन हित जगदीश पुरी गये गोपीनाथ मिलेवा ।
खीर चोर राखी संग साखी सेवकवृन्द जनेवा ।।
इन आज्ञा अनुसार दई में बल्लभ विट्ठल सेवा ।
रामराय के पुरी गुसांई यति समदर्शी टेवा ।।६।।

बल्लभ बंगाली तहाँ रहवे दिये सुसेव ।
विठ्ठल गोपीनाथ हू आवत गिरिधर सेव ।।६८।।
कृष्णदास झगड़ो कियो तिनकी कुटी जराय ।
बंगाली बाहिर किये सेवा रहे सहाय ।।६९।।
माधवेन्द्र चैतन्य हरि अकबर नरपति भाव ।
बल्लभकुल श्रीनाथ लिय रामराय परभाव ।।७०।।
बंगाली क्रोधित भये रामराय कर्तव्य ।
ग्रन्थन सों तिन नाम मिल दूर किये निजकव्य ।।७१।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामराय प्रभु सदा सों त्यागी अति निर्व्याज ।
इनके चरनन कों किते सेवत नृपति समाज ॥७२॥
श्रीवृन्दावन भावना श्रीवृन्दावन वास ।
सबही रसिकन कों दियो अभयदान सुखरास ॥७३॥
सोलह सौ सत्तावना अन्त समय पर्यन्त ।
नाभा सेवे विपिन के सुरसिक सन्त महन्त ॥७४॥
सोलह सो उन्चास में आये तुलसीदास ।
नाभाजी ते मिल भये मुदित भक्तजन आस ॥७५॥
विक्रम सोलह साठ में रामराय मति धीर ।
मेरे श्रीगुरु चरण ने वन में तजो शरीर ॥७६॥
श्रीवृन्दावन राधिका श्रीवृन्दावन श्याम ।
यमुना श्रीवृन्दाविपिन गोवर्द्धन अभिराम ॥७७॥
श्रीवृन्दावन रज परस सरस हरस सुखमूल ।
श्रीवृन्दावन वास करि श्रीयमुना के कूल ॥७८॥
आठ पुरुष जाके करें उत्तम दान महान ।
नौमी सो आवे विपिन जह कछु नेंक न जान ॥७९॥
राज तजो घरके तजे राधामाधव सेव ।
रामराय से गुरु मिले जिन पूर्वज जयदेव ॥८०॥
श्रीवृन्दावन रस सुधा सिंधु निमज्जत जोय ।
ताको तीनो ताप को कबहु ताप नहिं होय ॥८१॥
छोड़ बहाने लोक के कुटुम कबीले त्याग ।
जीवन को फल पाइले वृन्दावन अनुराग ॥८२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराधामाधव विपिन रस को बड़ो निकेत।
प्यास बुझै हिय जो सदां बनी रहत जल लेत ॥८३॥
तन वृन्दावन वास कर धन वृन्दावन वास।
मन वृन्दावन लीन कर वृन्दावन रसरास ॥८४॥
वृन्दावन की याद जो आवत है मन मांहि।
तबही राधा नागरी पति संग ताहि सरांहि ॥८५॥
वृन्दावन ही बीज है वृन्दावन ही फूल।
वृन्दावन ही कल्पतरु वृन्दावन रसमूल ॥८६॥
वृन्दावन को नाम ले भज वृन्दावन धाम।
श्रीवृन्दावन सो नहीं तीनलोक विश्राम ॥८७॥
रूख कल्पतरु तें अधिक जीव सच्चिदानंद।
जल थल पाहन भूमि रज चिन्तामणि कियमंद ॥८८॥
श्रीवृन्दावन गाइये नाइय नित नति शीश।
श्रीवृन्दावन ध्याइये साधन साध्य गिरीश ॥८९॥
राधाकुंड तमाल तरु श्रीहरदेव ललाम।
गंग मानसी दान की घाटी कर विश्राम ॥९०॥

—*—

पद्मापयोधरतटीपरिरंभलग्न-
काश्मीरमुद्रितमुरोमधुसूदनस्य।
व्यक्तानुरागमिव खेलदनङ्गखेद-
स्वेदाम्बुपूरमनु पूरयतु प्रियं वः ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्यारी पयोधर केशर कीच लगी हिय बीच आलिंगन कीयें,
मानों किशोरी के प्रेमपराग महाअनुराग की मुद्रा कों दीये।
गाढ़ मिलाप पसीना भये तिनके कछु बिन्दु विराजत हीये,
ऐसे मदोन्मद मत्त श्रीमाधवलाल करें जनरंजन जीये ॥१॥

रानी रमा के उरोज को कुंकुम काम कला परिरंभन ते।
श्रमस्वेद भयो अति खेद ते लाग्यो पिया के हिया में तिया तन ते ॥
रंग जागि उठ्यो अनुराग को मानो न टारी टरे छवि सो मन ते।
सुख शोभा की खानि कल्यान करो तुमकों उर सों उरह्यो मन ते ॥

वसन्ते वासन्तीकुसुमसुकुमारैरवयवै-
भ्रमन्ती कान्तारे बहुविहितकृष्णानुसरणाम्।
अमन्दं कन्दर्पज्वरजनितचिन्ताकुलतया,
चलद्बाधां राधां सरसमिदमूचे सहचरी ॥२॥

वासन्तो कुसुमन समान सुकुमार अङ्ग,
विन्दावन भूमि में भमत कृष्ण अनुसरें।
पीड़ित अमन्द कन्दर्प के प्रचंड वेग,
चिन्ता अति चिन्तित विचित्र जुर कों धरें ॥
आई सखिपास सुखराश की विलास कथा,
कहि के किशोरी के दुरन्त दुख को हरें।
सोई जयदेव हरि राधा तन बाधा दरें,
वरनन सों आनंद उमंग झरना झरें ॥२॥

नासिका नवीन तिल फूल के समान बनी,
दन्त दुति दामनी कपोल गोल आरसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधर धरे हैं सब मधुर मधुर जेते,
चिवुक चुनी है चैन सुधामयी सारसी ॥
श्रवण सरोज औ उरोज श्रीफल के सदृश,
शोभित सिर बीच खींच सेंदुर की धारसी।
बाँकी वनारसो बनी ये शशी की हँसी।
सोहत वसन्ती ऋतु फूली फली डारसी ॥१॥

माधुरी ते अति माधुरी कोमल अंगन की छवि सोहत सो।
वन वीथिन डोले न बोले कछू पिय के गुन में मन मोहत सो॥
रितुराज समें रतिराज दहे अति व्याकुल के मग जोहत सो।
वृषभानु दुलारी सों प्यारी सखी रसकी कहके मनमोहत सो॥

(तृतीय प्रवन्ध वसन्त राग रूपक ताले)

ललितलवङ्गलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे,
मधुकरनिकरकरम्बितकोकिलकूजितकुञ्जकुटीरे,
विहरति हरिरिह सरसबसन्ते।
नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरंते ॥ध्रुव॥१
उन्मदमदनमनोरथपथिकवधूजनजनितविलापे ।
अलिकुलसंकुलकुसुमसमूहनिराकुलबकुलकलापे ॥२॥
मृगमदसौरभरभसवशंवदनवदलमालतमाले ।
युवजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले ॥३॥
मदनमहीपतिकनकदण्डरुचिकेशरकुसुमविकाशे ।
मिलितशिलीमुखपाटलपटलकृतस्मरतूणविलासे ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणवरुणकृतहासे ।
विरहिनिकृन्तनकुन्तमुखाकृतिकेतकिदन्तुरिताशे ॥५॥
माधविकापरिमलललिते नवमालतिजातिसुगन्धौ ।
मुनिमनसामपि मोहनकारिणि तरुणाकारणबन्धौ ॥६॥
स्फुरदतिमुक्तलतापरिरंभणमुकुलितपुलकितचूते ।
वृन्दावनविपिने परिसर परिगतयमुना जलपूते ॥७॥
श्रीजयदेवभणितमिदमुदयतु हरिचरणस्मृतिसारम् ।
सरसबसन्तसमयबनवर्णनमनुगतमदनविकारम् ॥८॥

ललित लवङ्गलता मिली कोमल मलय समीर,
मधुकर सहचरि कोकिला कूजत-कुञ्ज कुटीर,
ऋतु-वसन्त विहरत गिरधारी ।
विरही-विरह हरणकर्ता हरि चलु वृषभानु दुलारी ॥१॥
उन्मद-मदन मनोरथ डूबी पथिक वधूजन जनित विलाप ।
अलिकुल संकुल कुसुमावलि जहाँ व्याकुल दीखत बकुल-कलाप ॥२॥
कस्तूरीसम सुरभित सोभित नवल-नवल दल माल तमाल ।
जुबजन हृदय विदारन कारण काम नखाकृति किंशुक जाल ॥३॥
मदन मही-पति छत्र तनायो सो जह केशर कुसुम विकाश ।
पुहप गुलाव मिले भौंरामनु कामदेव के तरकस पास ॥४॥
करुन वृच्छ के कुसुम करत हैं खिलि-खिलि निर्लज्जनुको हास ।
कुन्त शस्त्र सम दीखत केतकी कुसुम-वसन्त वने वनुवास ॥५॥
ललित सुगन्ध माधवी-लतिका मालति जाति अनूपम पास ।
मुनि जन मनकी मोहनि कारी सहज मित्र जुवजन अभिलास ॥६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वासन्ती के मिलत भयो हैं मंजरिमनु रोमांच रसाल।
चहुँदिश पुलिन उछाह मचो है श्रीविन्दावन जमुना नाल ॥७॥
श्रीजयदेव बसन्त सुनायो राधामाधव सुमिरन सार।
रामराय अद्भुत सुख पायो जुगल सिंगार अनंग बिहार ॥८॥

दरविदलितमल्लीबल्लिचञ्चत्पराग
प्रकटितपटवासैर्वासयन् काननानि,
इहहि दहति चेतः केतकीगन्धबन्धु
प्रसरदसमबाणप्राणवद्गन्धवाहः ॥१॥

आधी खिली नव मल्ली की वल्ली को सोंध लियें जह वायु पधारी,
हाथ नहीं कछु आवै सखी विरहीजन की कुल-जाति विगारी।
केतकी सों कर हेत की बात समात नहीं हियमें छलधारी,
कामके बान समान बसन्त में जानपरी दुखदाई दुधारी ॥१॥

मालती खिलन मकरन्दन मिलन,
परिमल की चलनले सुगंध वन छाये हैं।
पंचबान प्रान के समान सब कानन में,
पवन गवन विरहीजन सताये हैं॥
झपत मधुप मोर कम्पत रसालनके,
कोकिला कलाप के अलाप ताप ताये हैं।
मधु के विकास ध्यान आसरे विलास नीके,
पथिक प्रयास रैन औसर विताये हैं॥

अद्योत्सङ्गवसद्भुजङ्गकवलक्लेशादिवेशाचलं
प्रालेयप्लवनेच्छयानुसरति श्रीखण्डशैलानिलः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किञ्च स्निग्धरसालमौलिमुकुलान्यालोक्य हर्षोदया-
दुन्मीलन्ति कुहूः कुहूरिति कलोत्तालाः पिकानां गिरः ॥२॥

राधे वसन्त की वायु बहे मलयाचल सों हिम सैल सिधारी ।
मानों भुजङ्ग विषाक्त भई दुखिया सुख हेतुही जाति बिचारो ॥
कोकिल वाल रसाल की मंजुल मंजरी देखि भई मतवारी ।
मीठी मनोहर वोलत बाँनी छिपै नहीं प्रानी सुखारी-दुखारी ॥२॥

अहिग्राम के त्रास वयार भले मलयाचल वासो प्रवास लियो ।
तन ताप मिटावन आस चल्यो तुहिनाचल जाय नहाय जियो ।
लखि फूले रसाल के मौलि पै मोर ह्वै मोदित कोकिल कूक कियो ।
तिनकी कल कोमल मन्द महा मधुरी धुनि वानी में कान दियो ॥

उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्याधूतचूतांकुर
क्रीडत्कोकिलकाकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः ।
नीयन्ते पथिकैः कथं कथमपि ध्यानावधानक्षण
प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमी बासरा ॥३॥

आमकी मंजरी कामकी खंजरी गूँज रही अलि आवलि पाये ।
मोहिनी मीठी सी तान कमान चलावत कोकिल काकली गाये ॥
पावत ताप प्रताप महापथ पांथ न साथ जौं प्यारी कों लाये ।
कैसें बितावत हैं दिन आली ज्यों राधा विना वनमाली कहाये ॥३॥

अनेकनारीपरिरम्भसम्भ्रमस्फुरन्मनोहारिविलासलालसम् ।
मुरारिमारादुपदर्शयन्त्यसौसखीसमक्षं पुनराह राधिकाम् ॥४

केतिक प्यारीनु प्यार लियें तौहू चैन हिये न परे जेहि प्यारी ।
काहू सों वात करें अरु काहू के मन्दिर जात सिहात मुरारी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देखौ समीप सों जाइ रहे पर ध्यान में आनही राजदुलारी।
केवल लाल विलास के लालची दूजौ कछू न चहें श्रीविहारी ॥४॥

(चतुर्थ प्रबन्ध रामकली रागेण रूपक तालेन गीयते)

चन्दन-चर्चित-नील-कलेवर-पीत-बसन-बनमाली,
केलि-चलन्मणि-कुण्डल-मण्डित-गण्ड-युगस्मित-शाली।
हरिरिह मुग्धवधूनिकरे, विलासिनि विलसति केलिपरे।ध्रु०१
पीन-पयोधर-भार-भरेण-हरिं परिरभ्य-सरागम्,
गोपबधूरनुगायति काचिदुदंचितपंचमरागम् ॥२॥
कापि विलासविलोलविलोचनखेलनजनितमनोजम्,
ध्यायति मुग्धवधूरधिकं मधुसूदनवदनसरोजम् ॥३॥
कापि कपोलतले मिलिता लपितुं किमपि श्रुतिमूले,
चारु चुचुम्ब नितम्बवती दयितं पुलकैरनुकूले ॥४॥
केलिकलाकुतुकेन च काचिदमुं यमुनाजलकूले,
मंजुल-वंजुलकुञ्जगतं विचकर्ष करेण दुकूले ॥५॥
करतलताल तरलवलयावलिकलितकलस्वनवंशे,
रासरसे सहनृत्यपरा हरिणा युवतिः प्रशशंसे ॥६॥
श्लिष्यति कामपि चुम्बति कामपि कामपि रमयति रामाम्,
पश्यति सस्मितचारुतरामपरामनुगच्छति बामाम् ॥७॥
श्रीजयदेवकवेरिदमद्भुतकेशवकेलिरहस्यम्,
वृन्दावनविपिने ललितं वितनोतु शुभानि यशस्यम् ॥८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

* राग रामकली *

वने आजु नन्दलाल सखी प्रेम मादक पियें,
संग ललना लियें जमुना तीरे।
फूली केशर कमल मालती,
सघन वन मन्द सुगन्ध शीतल समीरे ॥१॥
नील मनि वरन तन कनक मण्डित बसन,
परम सुन्दर चरन परस माला।
मधुर मृदुहास परकास दशनावली,
छबि भरे इतरात दृग विशाला ॥२॥
किये चन्दन खोर बदनारबिन्द,
मकरन्द लुब्ध भ्रमर कुटिल अलकें।
हलत कुण्डल लटक चलत जव श्यामघन,
मणिन की कांति कल गण्ड झलकें ॥३॥
एक चम्पक तनी कृष्ण रस मत्तनी,
करे राग पञ्चम लागि सोहै।
एक हरि मुख निरखि धर रही ध्यान मनु,
चित्र सम भई हरि हिये मोहै ॥४॥
एक दामिनी-सी भुजमेलि ग्रीवा,
बात कहन मिस मुखसों जु मुख मिलायो।
एक नवकुञ्ज में खेंचि रही कटिबन्ध,
अपनों लाल चित्त चोर पायो ॥५॥
एक श्यामहि हेरि सुभग लोचन फेरि,
बिहँसि बोली भले कान्ह कपटी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक सोंधे भरी छुटे वारन खरी,
एक बिनु कंचुकी रीझि लपटी ॥६॥
एक श्यामा कनक कञ्ज वदनी,
प्रेम मकरन्द भरी हरि निरखि विकसी।
ताके रसलुब्ध रहे लपट भामरो भ्रमर,
प्रान प्यारी भुजन बीच जु लसी ॥७॥
रसिक मनि रंग भरे विहरत विन्दाविपिन,
संग सखी मण्डल प्रेम पागी।
कहै भगवान हित श्रीरामराय प्रभु,
सोई जाने जाहि लगन लागी ॥८॥

विश्वेषामनुरंजनेन जनयन्नानन्दमिन्दीवर-
श्रेणीश्यामलकोमलैरुपनयन्नङ्गैरनङ्गोत्सवम्।
स्वच्छन्दं व्रजसुन्दरीभिरभितः प्रत्यङ्गमालिङ्गितः
शृङ्गारः सखि मूर्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति॥१

मूरतिधार सिंगार सने सुकुमार कुमार सों प्यार बढ़ावें।
अङ्ग अनङ्ग के रङ्ग भरे कों व्रजाङ्गना प्रेम उछंग चढ़ावें॥
ए ऋतुराज वसन्त लसन्त हसन्त अनन्त-सी लीला दृढ़ावें।
नील सरोरुह श्याम किशोर कों जोर भरी मदमत्त लड़ावें ॥१॥

सबके मन रंजन मंजु मनोहर कंज से अंग अनंग उछाहन।
संग व्रजांगना के प्रति अंग अलिंगन रंग भरे चित चाहन॥
मूरतिवन्त सखी रसराज विराजत आज घनी छवि छाहन।
यों विहरें मधु में हरि मुग्ध पै वारिये कोटिकरी रति नाहन॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रासोल्लासभरेण विभ्रमभृतामाभीरवामभ्रुवा-
मभ्यर्णें परिरभ्य निर्भरमुरः प्रेमान्धया राधया ।
साधुत्वद्वदनं सुधामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुति-
व्याजादुद्भटचुम्बितः स्मितमनोहारी हरिः पातुवः ॥२॥

भीर आभीर कुमारीन की तहाँ धीरज नेक न चित्त में धारें।
प्रेम मदान्ध श्रीराधिका रास में अद्भुत काम की केलि विचारें ॥
प्यारे सुधानिधि आनन आपु औ गीतहू तैसीही शोभाकों धारें।
यों कहि चुम्बित तृप्त करे मुसक्यान भरे हरि रच्छा कों पारें ॥२॥

रास विलास हुलास भरी ढिंग गोपवधू तन की सुधि डारी।
प्रेम असाधिका राधिका माधवै अंक भरै अति आनंद भारी ॥
रूप तिहारो सुधामय यों गुनगान के व्याज समीप सिधारी।
चुम्वन कीनो हँसे हरिमोहन रावरी तेई करें रखवारी ॥

अथ—द्वितीयः सर्गः

(अक्लेश केशवः)

विहरति वने राधा साधारणप्रणये हरौ
विगलितनिजोत्कर्षादीर्ष्या वशेन गतान्यतः,
क्वचिदपि लताकुंजे गुञ्जन्मधुव्रतमण्डली—
मुखरशिखरे लीना दीनाप्युवाच रहः सखीम् ॥१॥

कृष्ण कौ प्रेम समान सभी व्रज गोपिन में जव रास रचायो।
श्रीवृन्दावन कुञ्ज लताबलि पुञ्ज मधुव्रत गुञ्ज मचायो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ईरखा प्यारी के चित्त भई पिय प्यार न अन्य के संग सुहायो।
जाइ छिपी तजि कुञ्जन में निज ताप सो आपु सखी कों सुनायो ॥१॥
श्रीहरिजू को विहार निहार समान महारस गोपलनीन सों।
मान मनें अपमान चली वृषभानु लली मन मान मलीन सों॥
दीन भई न सुहात कछू अब लागत चित्त न आन थलीन सों।
कुंजगलीन में लीन भई सुनि गुंज अलीन की बोली अलीन सों॥

(पंचम प्रबन्ध गुर्जरी राग रूपक ताल)

सञ्चरदधरसुधामधुरध्वनिमुखरितमोहनवंशम्।
चलितदृगञ्चलचञ्चलमौलिकपोलविलोलवतंसम् ॥१॥
रासे हरिमिह विहितविलासम्
स्मरति मनोमम कृतपरिहासम् ॥ध्रु०॥२॥
चन्द्रकचारुमयूरशिखण्डकमण्डलबलयितकेशम्।
प्रचुरपुरन्दरधनुरनुरञ्जितमेदुरमुदितसुवेशम् ॥३॥
गोपकदम्बनितम्ववतीमुखचुम्बनलम्भितलोभम्।
बन्धुजीवमधुराधरपल्लवमुल्लसितस्मितशोभम् ॥३॥
विपुलपुलकभुजपल्लववलयितबल्लवयुवतिसहस्रम्।
करचरणोरसि मणिगणभूषणकिरणविभिन्नतमिस्रम् ॥४
जलदपटलचलदिन्दुविनिन्दकचन्दनतिलकललाटम्।
पीनपयोधरपरिसरमर्दननिर्दयहृदयकपाटम् ॥६॥
मणिमयमकरमनोहरकुण्डलमण्डितगण्डमुदारम्।
पीतबसनमनुगतमुनिमनुजसुरासुरबरपरिवारम् ॥७॥
विशदकदम्बतले मिलितं कलिकलुषभयं शमयन्तम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मामपि तरल तरङ्गदनङ्गदृशा मनसा रमयन्तम् ॥८॥
श्रीजयदेवभणितमतिसुन्दरमोहनमधुरिपुरूपम् ।
हरिचरणस्मरणं प्रति सम्प्रति पुण्यवतामनुरूपम् ॥९॥

पद—

बंशीवारे को ध्यान लग्यो मन भारी ।
अधरामृत सों बढ़ी माधुरी धुनि पूरित दिश चारी ।
सकल लोक को मोहन कर्ता चञ्चल नैन वजावै भर्ता ।
चपल कपोल ललित कुंडल शिर-मुकट हंसी मुखन्यारी ॥१॥
सुन्दर मोर पंख कंकन छवि, केश पाश गूँथे निज माधव ।
इन्द्र धनुष ज्यों श्यामघटा में तैसें लगत विहारी ॥२॥
व्रज रमनी मुख-चुम्बन लोभी, विम्बाधर कोमल दल छोभी ।
मन्द-मन्द मुसक्यान प्रानधान जीवन कृष्ण मुरारी ॥३॥
नवल वसन्त कल्प पल्लव से, गोपी आलिंगन कर हरसे ।
तन आभूषन मनि किरनन सों अन्धकार भय हारी ॥४॥
नवघन श्यामघटा चल-चन्दा माथे मलयज चन्दन बिंदा ।
विस्तृत हिये पुष्ट कुच मर्दन निर्दय करत सुधारी ॥५॥
मनिमकराकृत कुंडल मोहें भगत मनोरथ पूरक सोहें ।
मुनि मनुष्य सुर-असुर चराचर पति पीताम्बर धारी ॥६॥
कोमल कदम तले मिल पाये हृदय । नैनसों मोहि रमाये ।
कलि कलमसनस इन्द्र दमन प्रभु ब्रजरच्छक गिरिधारी ॥७॥
श्री जयदेव रचित सुन्दरतर कृष्ण केलि लीलारस सागर ।
रामराय पद सुमिरन कर्ता सन्त सेव्य सुखकारी ॥८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गणयति गुणग्रामं भ्रामं भ्रमादपि नेहते
बहति च परीतोषं दोषं विमुञ्चति दूरतः
युवतिषु बलत्तृष्णे कृष्णे विहारिणि मां बिना
पुनिरपि मनोवामं कामं करोति करोमि किम् ॥१॥

रास मिली वनिता अभिलाष लखे मनमें अति दुःखहू पाऊँ ।
तौहू पिया सुख चाहत हों अपराध भयेपैंहू नाहि रिसाऊँ ॥
मोहि तजी तिनआन भजी अपमान कौ ध्यान न चित्त बसाऊँ ।
किन्तु प्रसन्न भई मुखसों निज कुञ्जविहारी गुनावलि गाऊँ ॥१॥
सौ गुन ग्राम गिनें दिन रैंन पै औगुन एकहू भूलि न चाहै ।
दूरि उठाय धरै सब दोष संतोष सों तोय नदी अवगाहे ॥
आन तिया रति लालची मोविन एतेहू पैं अति चाहत नाहै ।
मो मन वाम के काम निहार कहा करों वीर कहों कहि काहै ॥

(मालब रागेण एकताली ताले गीयते)

निभृतनिकुंजगृहं गतया निशि रहसि निलीय बसन्तम् ॥
चकितविलोकितसकल दिशा रतिरभसभरेण हसन्तम् ॥

सखि हे केशि (केशी) मथनमुदारम् ॥
रमय मया सह मदनमनोरथभावितया साविकारम् ॥१॥
प्रथमसमागमलज्जितया पटुचाटुशतैरनुकूलम् ।
मृदुमधुरस्मितभासितया शिथिलीकृतजघनदुकूलम् ॥२॥
किशलयशयननिवेशितया चिरमुरसि ममैव शयानम् ।
कृतपरिरम्भणचुम्बनया परिरभ्य कृताधरपानम् ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अलसनिमीलितलोचनया पुलकावलिललितकपोलम् ।
श्रमजलसिक्तकलेवरया वर मदन मदादतिलोलम् ॥४॥
कोकिलकलरवकूजितया जितमनसिजतन्त्रविचारम् ।
श्लथकुसुमाकुलकुन्तलया नखलिखितघनस्तनभारम् ॥५॥
चरणरणितमणिनूपुरया परिपूरितसुरतवितानम् ।
मुखरविशृंखलमेखलया सकचग्रहचुम्बनदानम् ॥६॥
रतिसुखसमयरसालसया दरमुकुलितनयनसरोजम् ।
निःसहनिपतिततनुलतया मधुसूदनमुदितमनोजम् ॥७॥
श्रीजयदेवभणितमिदमतिशयमधुरिपु–निधुवनशीलम् ।
सुखमुत्कण्ठितराधिकया कथितं वितनोतु सलीलम् ॥८॥

मिलाओ सखी श्रीकुञ्जबिहारी संग ।
मदन मनोरथ मधुर हास केशीमर्दन नवरंग ॥

मौन निकुञ्ज भवनु में आई छिपकरि तिनु एकान्त रमाई ।
मन्द हसन बोलन विलास बस लज्जा प्रथम प्रसंग ॥१॥
चतुर शिरोमनि करत प्रसंसा जघन दुकूल हटावन मंसा ।
कोमल दल सिज्जा मुख चुम्वन आलिंगन रस जंग ॥२॥
अधिक समें वच्छस्थल ऊपर सोंवत पीवत घूंट सुधाधर ।
मदनानन्द वन्द भये लोचन आलस भयो अनंग ॥३॥
तेहि श्रम स्वेदविन्द भीजोतन पुलकित गोल कपोल-लोल मन ।
नवमद मदन अमन्द चन्दमुख सुख पावत जु सुधंग ॥४॥
कोकिल सम अस्फुट रतिवानी बैनी सिथिल पुहुप श्रम जानी ।
कुच कठोर नख चिह्न करैया कोक कला उत्संग ॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पग नूपुर कटि किंकिनि वाजे, केलिकलह परि-पूरन गाजे।
केश पाश कर पकर अधरधर सुधापान अरधंग ॥६॥
रति सुख रस आलस मुरझाई मनोतमाल बेल अरुझाई।
प्रेमानन्द ध्यान जोगी सम निधुवन रस प्रत्यंग ॥७॥
श्रीजयदेव महाप्रभु गायो श्रीराधे के मुख कहिवायो।
रामराय उत्कंठित रति को गीत रीत सर्वाङ्ग ॥८॥ मिलावो ॥

हस्तस्रस्तविलासवंशमनृजुभ्रूवल्लिमद्वल्लवी
वृन्दोत्सारिदृगंतबीक्षितमतिश्वेदार्द्र गण्डस्थलम्।
मामुद्वीक्ष्य विलज्जितस्मितसुधामुग्धाननं कानने
गोविन्दं व्रजसुन्दरीगणवृतं पश्यामि हृष्यामि च ॥१॥

मोहि लखे जिनके करसों मुरली लकुटी दोउ भूमि गिरी री,
भौंहें कमान-सी वान कटाच्छ सुदच्छ ब्रजाँगना देखें खरीरी।
भीजे कपोल पसीना की बूंद अहो जहलाज सुहास भरी री,
कृष्ण मुखांवुजदेखि सखी डूबी आनन्द सिंधु की प्रेम झरी री,॥१॥

सोहनी सुखद वंक मोहनी दृगन्त तन्त,
जोहन ते मोहन यों लीने लुभाइकें।
तऊ वे निहारि मोहि दीनों मन हरि रही,
देहकी समारि न सलज्ज सकुचाइके ॥
करते निकर परी वांसुरी सुधासों भरी,
छायोमद सब तन अतन सुभाइकें,
चन्द्रमुखी वृन्द घेरयो नन्द नन्द हरयो कीनो,
आनंदित मन मेरो मन्द मुसकाइकें ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुरालोकःस्तोकस्तवकनवकाशोकलतिका—
विकाशःकासारोपवनपवनोपि व्यथयति ।
अपिभ्राम्यद्भृङ्गीरणित रमणीया न मुकुल-
प्रसूतिश्चूतानां सखि शिखरिणीयं सुखयति ॥२॥

नश्व्य अशोक लतान के गुच्छ खिले कुसुमो खरके तटपे,
बाग सुहाग भरे तिन वायु सुशीतल मंद सुगंध झपे।
श्री गिरिराज पै आम के वृच्छ अली कुल गान करें तिनपे,
हे सखि कृष्ण वियोग के दुःख में अंग अनंग महान तपे ॥२॥

नैन विलोक अशोक लता नवपल्लव शोक बढावन लागे
लागे शरीर सो शूल से सीरे सुगन्ध समीर सतावन लागे
मंजु रसाल के फूलन पै अलि गूंज भरे तन तावन लागे
काज अकाज सबै सुखसाज विना व्रजराज दुखावन लागे

साकूतस्मितमाकुलाकुलगलद्धम्मिल्लमुल्लासित
भ्रू वल्लीकमलीकदर्शितभुजावालार्द्ध हस्तस्तनम्
गोपीनां निभृतं निरीक्ष्य ललिताकाड्क्षश्चिरं चिन्तयन्
नन्तर्मुग्धमनोहरो हरतु वःक्लेशं नवःकेशवः ॥४॥

(इति श्रीगीतगोविन्दे अक्लेशकेशवोनाम द्वितीयः सर्गः)

भाव भरी मुसकान सों देखत गोपवधू कुच हाथ औ बैनी,
ताही समैंसो धरीहिये ध्यान में सुन्दरि राधिका खञ्जन नैनी ।
नाहि प्रियासम कोहू तिलोकी में मोहत ध्यावत है पिकवैनी,
भक्तन कौ सब क्लेश हरें वे ही कृष्ण किशोर जू मूरतिमैनो ॥३॥

श्रीदेव देव जयदेव कवीश गायौ,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकृष्णचन्द्र महिमामृत सिंधु जायो।
श्रीरामराय तिनके पदकञ्ज पूजौ,
अक्लेश केशव भयौ जह सर्ग दूजौ ॥४॥

गोपिन को सानंद मधुर मुसकान चारु,
वार छवि मारनते फूल विथरत देखि।
उरज उचोहे भुज मूलन ते दरसोहें,
नैन भोंह भाइन ते मैन सों झगत देखि।
सुधिहि विसारीसाध देखवे की हारीचित्त,
चिन्तन विहारी व्रजनारी विहरत देखि।
कलि मल हारी नव वय वनवारी छवि,
हियते विसारी क्यों हुं टारी न टरत देखि।

इति श्रीकविराजराजेश्वर श्रीजयदेवमहाप्रभु वंशोद्भव श्रीरामराय गोस्वामि प्रभुप्रणीतायां श्रीगीतगोविन्द प्रियायां द्वितीयः सर्गः समाप्तः

—

अथ तृतीय सर्गः
(मुग्धमधुसूदनः)

कंसारिरपि संसारवासनाबद्धशृंखलाम्
राधामाधाय हृदये तत्याज व्रजसुन्दरीः ॥१॥
इतस्ततस्तामनुसृत्य राधिकामनङ्गबाणव्रणखिन्नमानसः।
कृतानुतापः सकलिन्दनन्दिनीतटांतकुञ्जे निषसाद माधवः॥२॥

जगत वासना बांधिवे हित जगके करतार।
त्यागदई वृज सुन्दरी श्री राधाके प्यार ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री राधेकों खोजते पीड़ित विरह कलाप।
जमुना तीर निकुञ्ज में माधव करत विलाप ॥२॥

(सप्तमप्रबन्धो गुर्जरी रागेण गीयते)

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन
सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन ॥१॥
हरिहरि हतादरतया गता सा कुपितेव (ध्रु०)
किंकरिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विहरेण।
किं धनेन जनेन किं मम जीवितेन गृहेण ॥२॥
चिन्तयामि तदाननं कुटिलभ्रुरोषभरेण।
शोणपद्ममिवोपरि भ्रमताकुलं भ्रमरेण ॥३॥
तामहं हृदि संगतामनिशं भृशं रमयामि।
किं वनेनुसरामि तामिह किं वृथा विलपामि ॥४॥
तन्वि खिन्नमसूयया हृदयं तवाकलयामि।
तन्न वेद्मि कुतो गतासि नतेन तेऽनुनयामि ॥५॥
दृश्यसे पुरतो गतागतमेव मे विदधासि।
किं पुरेव ससंभ्रमं परिरम्भणं न ददासि ॥६॥
क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि।
देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि ॥७॥
वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रवणेन।
कन्दविल्व समुद्रसम्भव – रोहिणीरमणेन ॥८॥

मोकों कहां गई तजि प्यारी।
सखिन समूह मध्य वैठ्यो लखि निजु अपमानु विचारी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जा कर्तव में हों अपराधी भय सों रोकिन सक्यो विसादी।
महा मानिनी कहा सहेगी क्रोंधानल चिनगारी ॥१॥
अवतिन विनान धनजन भावे भवन प्रानवन सघन सतावे।
मूलगये पुनि डार-पातकी बात होइ बेकारी ॥२॥
लाल कमल दल अलि जो गाजे ध्याऊँ बंक भृकुटि मुखराजे।
हिये विराजी कों जो भोगू तो वन विलप वृथारी ॥३॥
हे तन्वंगि जिही अनुमानूँ ईर्षा दुखित चित्त तुव जानूं।
और आप अपनी जानत हों विनै सुनों सुकुमारी ॥४॥
सन्मुख इत-उत देत दिखाई मिलौ न क्यों पहिले की नांई।
छिमा करो अव न करूँ ऐसो रति पीड़ित लखि भारी ॥५॥
कन्दविल्व वासी जयदेवा करत रोहिनी जिनकी सेवा।
रामराय जह दूजी नारी कृष्णदेव महतारी (मो०) ॥६॥

हृदि विसलताहारो नायं भुजङ्गमनायकः।
कुवलयदलश्रेणी कण्ठे न सा गरलद्युतिः॥
मलयजरजो नेदं भस्म प्रियारहिते मयि।
प्रहर न हरभ्रान्त्याऽनङ्ग क्रुधा किमु धावसि ॥१॥

हार मृडाल जि सर्प नहीं गल नील सरोज हलाहल नांई।
प्यारी बियोगकी शान्तिके हेतु है चन्दन पंक न भस्म रमाई।
वैरु पुरानो निकारनि कों भ्रम सों तुम मोपै करी है चढ़ाई।
शंकर योगी न जानों हमें पर कृष्ण श्रीराधा वियोगी हूँ भाई ॥१॥

उर फूल हार ताहि अहि न निहार कण्ठ।
कुवलय कंठी जिन जहर विचारे तू॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विरह संताप तन तापे तू तचन हित ।
मलयज अङ्ग न भसम निरधारे तू ।।
प्राण ते पियारी भई जव ते नियारी वाढी ।
व्याकुता भारी ऐसे जिन जारे तू ।।
हर प्रान्त हर भ्रम भूलि विनु काम काम ।
मार मान पाय हाहा मोहि मत मारे तू ।।

पाणौ माकुरु चूतशायकममुं मा चापमारोपय
क्रीडानिर्जितविश्वमूर्छितजनाघातेन किंपौरुषम् ।
तस्या एव मृगीदृशो मनसिजप्रेङ्खत्कटाक्षानिल-
ज्वालाजर्जरितं मनागपि मनो नाद्यापि संधुक्षते ।।२।।

खेल सों विश्वविजेता हे काम न आमकी मंजरी वान चलाओ ।
मूर्छित मारन में न बली तुम तासों दयाकर प्रान बचाओ ।।
राधिका चञ्चल नैन कटाच्छ की अग्नि शिखाके जरेकों जराओ ।
चित्त न सुस्थ है मेरो सखे करो शीतल ताप न नेंकु वढ़ाओ ।।२।।
साधिकें वानन तान कमानन हाथन ये हथियार गहै ।
जग जीतन हार विहार ही में मनुहार करों न वृथा यों दहै ।।
पौरुष कौन मरे भए मारिवो लात गिरे पर योग नहै ।
अजहू मृगनैनी की सैन विंध्यो हिय मैन न नैकहू चैन चहै ।।

भ्रूपल्लवो—धनुरपाङ्गतरङ्गितानि
वाणा—गुणःश्रवणपालिरिति स्मरेण,
तस्यामनङ्ग—जयजङ्गमदेवताया—
मस्त्राणि निर्जितजगन्ति किमर्पितानि ।।३।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे रतिनाथ कहो जो न मेरो कछू अपराध प्रियाजी को जानों ।
क्यों तुम शस्त्र दिये उनकों भृकुटी धनुवान कटाच्छ बखानों ॥
कानकी पोर वनी धनु डोर जो जोरसों विश्व-विजै हित वानों ।
खेल हमारे वताय रहे बिन अञ्जन वीर कोई पहिचानों ॥३॥

भोंहे कमान समान वनी अलकें झलकें गुनयों अनुमानों,
वंक विलोकन वाणन को अपमान कियो अभिमान हिरानो ।
अंगन की छवि राधिका जी त्यो अनंग थक्यो नहिं जात पलानो,
जीतन हार हथ्यार दिये जगके हरि के अरि हारिके मानों ।

भ्रूचापे निहितः कटाक्षविशिखो निर्मातु मर्मव्यथाँ
श्यामात्मा कुटिलःकरोतु कवरीभारोऽपि मारोद्यमम्,
मोहं तावदयं च तन्वि तनुताँ विम्बाधरो रागवान्
सद्वृत्त-स्तनमण्डलस्तव कथं प्राणैर्मम क्रीडति ॥४॥

वान सुभाव लगे दुखदेत कटाच्छ धनू भृकुटी पै नचाओ ।
ऊपर भीतर कारे औ टेडे ये केशके पास हू काम जगाओ ॥
रागी तथा विषई जह मोह बढ़ामें विमाधर सोह बढ़ाओ ।
किन्तु सुजान कुचारस सान क्यों प्रान हमारे हरे ये वताओ ॥४॥

तीखन कटाक्ष वांण वेधे उर आनि भले,
भृकुटी कमान जे कुटिलता धरत हैं ।
वार तम भार भरे बार वार मोहें मोहि,
इन्हें न निवारिये सुभाइ उघरत हैं ।
विम्व फल लों अति रोस के वरन लाल,
करे जे विहाल अचरज न भरत हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुवृत सुडौल अनडोल गोरी गोरे तेरे,
उरज अमोल मेरे प्रान क्यों हरत हैं।

तानि स्पर्शसुखानि ते च तरलाः स्निग्धा दृशोर्विभ्रमा
स्तद्वक्त्राम्बुजसौरभं सचसुधास्यन्दी गिराँ वक्रिमा
साविम्वाधरमाधुरीति विषयासङ्गेपि चेन्मानसं
तस्यां लग्नसमाधि हंत दिरहव्याधिः कथं वर्तते ॥५॥

कवित्त—

सुन्दरी के संग होंय वेही जो परम सुख
चंचल कटाच्छ मुख पंकज सुगन्ध है।
अमृत परिपूर्ण व्यंग वानी अधर लाल
माधुरी में रूप-रस स्पर्श ओंर गन्ध है॥
मेरो मन विषयन की ओर जोर लागतेहू।
प्रानप्यारी राधेजू के ध्यानमें अमंद है।
जोगी ध्यान वेदना न पावत समाधि बिचु।
मोकों बार-बार क्यों ये भारी दुख द्वन्द है ॥५॥

आवन मरत मन रुधत उसास प्रेम,
नेम अनुमान ध्यान धीरना धरत यों।
अंक भरि भेटन को सुख संग लेटन को,
आनंद समेटन को चिन्तन करत यो।
सुधाभरी वातन कों वंक दृग घातन कों,
सुख जलजात को सुवासन झरत ज्यों।
राधिका संयोग योग साधन समाधि माधो,
विरह उपाधि आधि व्याधि न टरत क्यों।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तिर्यक्कण्ठविलोलमौलितरलोत्तंसस्य वंशोच्चरद्
गीतिस्थानकृतावधानललनालक्षैर्न संलक्षिताः।
सम्मुग्धे मधुसूदनस्य मधुरे राधामुखेन्दौ मृदु-
स्पन्दं कन्दलिताश्चिरं दधतु वः क्षेमं कटाक्षोर्मयः ॥६॥

[इतिश्रीमदाचार्य गोस्वामी श्रीजयदेवप्रणीते तृतीयः सर्गः]

बाजत बांसुरी गान पदावलि चित्त लगे नहिं गोपी निहारे,
सुन्दर राधिका श्रीमुखचन्द को गुप्त सरूपसों भाव में धारें।
ग्रीवा कों टेड़ी करेंते सुमोर के पिच्छ औ चंचल कुण्डल चारें,
कृष्ण कटाच्छ की पांति सौ भाँति सभी निजु भक्तनु मंगल सारें ॥३

छन्द—कविराज नृप महाराज श्रीजयदेव कविता रस भरी,
महिमा कहेगो कौन श्री जगदीश की बानी खरी।
जिह सर्ग तीजो है गयो श्रीराम राय सुधा झरी,
श्रीमुग्ध मधुसूदन धरयो एहि नाम भर कैं माधुरी ॥७॥

दोहा—नेह नेह सब कोउ कहें नेह करो मत कोय।
मिले दुखी बिछुरे दुखी नेही सुखी न होय ॥
नेह स्वर्ग ते ऊतरो भूपर कीनो गौन।
गली गली ढूंढत फिरे बिनसिर को धर कौन ॥

गोल कपोल पै कुंडल लोल अमोल किरीट विलोकत मोहत।
ग्रीव नवाय के बंशी बजाय सुधा बरसाय तिया मन मोहत ॥
राधे सुधाधर आनन सों अति प्रेम कटाक्षन ताछन जोहत।
सो सुख छेम सबै सुख हेत हैं रंग अनंग तरंग के बोहत ॥

इति श्रीदार्शनिकसार्वभौम श्रीरामरायगोस्वामिप्रभुप्रणीतायां
श्रीगीतगोविन्दप्रियायां श्रीमुग्धमधुसूदनो- नाम तृतीयः सर्ग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ–चतुर्थः सर्गः

यमुनानीरवातीर–निकुञ्जे मन्दमास्थितम्
प्राह प्रेमभरोद्भ्रान्तं माधवं राधिका सखी ॥१॥

उदासीन बैठे भये कुंज कलिन्दी तीर
प्रेम वेग उद्विग्न मन माधौ महा गम्भीर।
ताही बेतस लतागृह आई अति अभिराम,
कहत राधिका की सखी सुनिए सुन्दर श्याम।

(अष्टम प्रबन्धः कर्णाटक रागे एकताली तालेन)

निन्दति चन्दनमिन्दुकिरणमनु विन्दति खेदमधीरम्
व्यालनिलयमिलनेन गरलमिव कलयति मलयसमीरम् ॥१॥
सा विरहे तव दीना।

माधव मनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयि लीना।
अविरल निपतित मदनशरादिव भवदवनाय विशालम्।
स्वहृदयमर्मणि वर्म करोति सजलनलिनीदलजालम् ॥२॥

कुसुमविशिखशरतल्पमनल्पविलासकलाकमनीयम्।
व्रतमिव तव परिरंभसुखाय करोति कुसुमशयनीयम् ॥३॥

वहति च चलितविलोचनजलधरमाननकमलमुदारम्।
विधुमिव विकट विधुन्तुददन्तदलनगलितामृतधारम् ॥४॥

विलिखति रहसि कुरङ्गमदेन भवन्तमसमशरभूतम्।
प्रणमति मकरमधोविनिधाय करे च शरं नवचूतम् ॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रतिपदमिदमपि निगदति माधव तव चरणेपतिताहम् ।
त्वयिविमुखेमयि सपदि सुधानिधिरपि तनुते तनुदाहम् ॥६॥
ध्यानलयेन पुनःपरिकल्प्य भवन्तमतीवदुरापम् ।
विलपति हसति विसीदति रोदिति चञ्चति मुञ्चति तापम्॥७॥
श्रीजयदेवभणितमिदमधिकं यदि मनसा नटनीयम् ।
हरिविरहाकुलवल्लवयुवतिसखीवचनं पठनीयम् ॥८॥

हे माधव तव बिरह किशोरी ।
मदन वान भय करन भावना मनहूँ कृष्ण रसवोरी ॥ध्रु०॥
चन्दन की भाखत है निन्दा, शीतल किरन तेई विधि चन्दा ।
सर्प श्वास विष मिली मलय की पवन देत दुख घोरी ॥१॥
रतिपति के तीखे शर भयसों, चाहति लाग्यो तुम्हें हृदयसो ।
मर्म कवच सम कमल दलन कों जल भिजोइ रख भोरी ॥२॥
आलिंगन सुख बहुविधि जोवत, काम नाम शर सिज्जा सोवत ।
व्रत कर रही महा जोगिन तनु विरह अगिनि नहिं थोरी ॥३॥
राहु दन्तसों दलित चन्द्रमा, राधामुख शशि बिरह सान्द्रमा ।
सुधा धार सम अश्रु झरतु हैं जिह दुख कठिनु कठोरी ॥४॥
मदन रूप तुव मृगमद चित्रा, आम मंजरी हाथ विचित्रा ।
व्याकुल हैं ध्वज की मकराकृति नीचे लिख कर जोरी ॥५॥
इत उत भ्रमत कहति हे माधो, परी चरन तल ममहित साधो ।
विमुख भये तब अमरत चन्दा जारत तनु बरजोरी ॥६॥
तुव मुनि दुर्लभ ध्यान जु धरिकें, मूरतिमान कल्पना करिकें ।
हँसत विखाद भरी पुनि रोवत आलिंगन सुख गोरी ॥७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजयदेव काव्य रस चाहो, तौ जिह विरह सुधा अवगाहो।
व्याकुल राधा सखी वचन पढ़ि रामराय ब्रजखोरी ॥८॥

आवासो विपिनायते प्रियसखीमालापि जालायते
तापोपि श्वसितेन दावदहनज्वाला–कलापायते
सापि त्वद्विरहेण हन्त हरिणीरूपायते हा कथं
कन्दर्पोपि यमायते विरचयन् शार्दूलविक्रीडितम् ॥१॥

कवित्त—

आपके बियोग मनि मन्दिर बिजन वन
प्यारी सखी जाल के समानु लगती रहै,
कन्दरप सिंह ओरु जम के सादृश्य लगे
श्वासनु की गरमीसो दावागिन झकती रहैं,
राधा भै हिरनी सो बचावै प्रान कौन रूप
ध्यान बोचू सन्मुख तुम्हीं को रखती रहै,
प्यारे मिलि लेहु जो भलाई कछु चाहो निजु
प्यारी प्रान त्यागेगी न जामें नेकु भीर है ॥१॥

सुखद सदन ते दुःखद वनरूप भये,
अलि माल जाल जिमि चहुँ ओर छाई है।
ऊरध उसास निशवासर हिये सों लागि,
तपत दवागि की विपत नित नई है।
जहर लहर सिय के केहरी के हर ढिग,
काम आठो जाम जम जोनि जानो लई है।
वरनी न जात मन हारिनी तिहारी हरि,
नीके चलि देखो हरिनी के रूप भई है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(नवम प्रबन्ध देश रागेण एकताली तालेन गीयते)

स्तनविनिहितमपि हारमुदारं. सा मनुते कृशतनुरिव भारम्॥१

राधिका तव विरहे केशव ॥ध्रु०॥

सरसमसृणमपि मलयजपङ्कम् ।

पश्यति विषमिव वपुषि सशङ्कम् ॥२॥

श्वसितपवनमनुपमपरिणाहम् ।

मदनदहनमिव बहति सदाहम् ॥३॥

दिशि दिशि किरति सजलकणजालम् ।

नयननलिनमिवविगलितनालम् ॥४॥

नयनविषयमपि किसलयतल्पम् ।

कलयति विहितहुताशविकल्पम् ॥५॥

त्यजति न पाणितलेन कपोलम् ।

बालशशिनमिव सायमलोलम् ॥६॥

हरिरिति हरिरिति जपति सकामम् ।

विरहविहितमरणेव निकामम् ॥७॥

श्रीजयदेवभणितमिति गीतम् ।

सुखयतु केशवपदमुपनीतम् ॥८॥

पद— सुनहु असाध्य दशा सुकुमारी

छीन शरीर वियोग तिहारे हीरहार उरजनु पर भारे।

सरस मलय चन्दन शीतलता विख समान तजि डारी ॥१॥

श्वास पवन कामानल बारे नाल बिना चखि कञ्जु करारे।

आँसू बहत करत तुव आशा, आवत नांहि बिहारी ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लाल कमल दलु कोमल शैया होत संदेह अंगार बिछैंया।
करतलगोल कपोल वाल शशि, राखि विचिन्तित भारी ॥३॥
अन्त समें जेहिजपु तेहि पावै। जह जिय जानि कृष्णहरि गावै।
जातनु नांहि जनम दूजेमें, मोहिं मिलहिं गिरधारी ॥४॥
कृष्ण पदाब्ज निवेदन कीनों। सुखद भगत जनकों रसभीनों।
श्री जयदेव महाप्रभु करुना, रामराय बलिहारी ॥५॥

सा रोमाञ्चति सीत्करोति विलपत्युत्कम्पते ताम्यति
ध्यायत्युद्भ्रमति प्रमीलति पतत्युद्याति मूर्च्छत्यपि।
एतावत्यतनुज्वरे वरतनुर्जीवेन्न किं ते रसात्
स्ववैंद्यप्रतिम प्रसीदसि यदि त्यक्तोन्यथा हस्तकः ॥१॥

स्वर्ग के बैद समान बिहारीजू रोगिनि राधा कौ हाल सुनाऊँ।
कामको ताप बढ्यौ है विलाप करे मुख शीशीकभूसुन पाऊँ॥
कंपित गात भयो पुलकात भ्रमात है ध्यान गलानि बताऊँ।
नैनन मूंदिगिरै धरनी उठि मूर्छित होति हों हात उठाऊँ॥
लच्छिन जेते त्रिदोस के हैं सबुही है दवाई में जानति नाऊँ।
बोलत नांहि संकेत करे सोहू थोरीसी बारमें दीखे मिटाऊँ॥
आप पधारो करो उपचार हे काम रसेस जनाओ न काऊँ।
दीजिये दर्शन राधिका जीवै जुसो रस केवल प्रान बचाऊँ॥

उठत शरीर रोम परि में अधीर अति,
पीरी परिगई जात सीरी है जो पाइये।
तकत चकित चित बकत सकत नांहि,
जकत चकत चवि छाक छोभ छाइये।
देखन अतन तन तापकी तपन तन,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विलपन दृग झपन कपन वाकी जाइये।
सुरवेद हैकें चलि सरस जु रस देकें,
बेदन वितैके वाहि मरत जिवाइये।

स्मरातुरां दैवतवैद्यहृद्य त्वदङ्गसङ्गामृतमात्रसाध्याम्।
विमुक्तबाधां कुरुसे न राधामुपेन्द्रबज्रादपि दारुणोसि ॥२॥

दोहा—अङ्ग आलिङ्गन साध्य जो जीवन राधाप्रान।
जोन जिवावो वैद तुम कठिन बज्र पाखान ॥२॥

मारते सुमार भई वलनव कुमार ताइ,
अश्विनी कुमार करिसके कहा जोई है।
विलपति रैन दिन तपन न जात अति,
तलफत विपति न जात अवगोई है।
रावरे सुदरशन परसन विना वाहि,
जीवन की मूर और दूसरी न सोई है।
जोपे राधा वाधा न हरत हरि ऐते पर,
तुमते निठुर कठोर कहां कोई है।

कन्दर्पज्वरसंज्वरातुरतनोराश्चर्यमस्याश्चिरं
चेतश्चन्दनचन्द्रमः कमलिनीचिन्तासु संताम्यति।
किन्तु क्षान्तिवशेन शीतलतनुं त्वामेवमेकं प्रियं
ध्यायन्ती रहसि स्थिता कथमपि क्षीणाक्षणंप्राणिति ॥३॥

दोहा—रति ज्वर चन्दन-चन्द्रमा कमलिन ध्यान दुखात।
प्रेम अलौकिक आस तब सुमरन प्रान बचात ॥३॥

काम ज्वर ज्वाल जाल जरति विहाल तापै,
मालसी रसाल फूली डाल दुख देत है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

चन्दन के चांदनी के चन्द्र के चितौति होत,
चारु चन्द्रमुखी चित चौगुनी अचेत है।
सुखद संयोग में निमिख की अनख होत,
सोई सुख अव सव दुख को निकेत है।
रावरेई ध्यान प्रान अवलों वचे हैं नातो,
जह अनुमान कही जीवन के हेत है।

क्षणमपि विरहःपुरान सेहे नयननिमीलनखिन्नया ययाते।
श्वसितिकथमसौरसालशाखांचिरविरहेणविलोक्य पुष्पिताग्राम्

दोहा—कलन परत पलु पलक लगि बिनु देखें मुखचन्द्र।
लखि बसन्त ऋतु मंजरी पिया विरह दुखदुन्द ॥४॥

बृष्टिव्याकुलगोकुलावनरसादुद्धृत्य गोवर्द्धनं
विभ्रद्वल्लववल्लभाभिरधिकानन्दाच्चिरं चुम्बितः।
दर्पेणैव तर्दर्पिताधरतटी–सिंदूरमुद्राङ्कितो
वाहुर्गोपतनोस्तनोतु भवतां श्रेयांसि कंसद्विषः ॥५॥

[इति श्री गीतगोविन्दे स्निग्धमाधवोनाम चतुर्थः सर्गः]

वर्षा सों व्याकुल गोकुल राखिवे श्रीगिरिराज धर्यो गिरधारी।
हाथनु चुम्बत गोपी सबै तिनु होठको लालो भली जय कारी।
कंस विध्वंस प्रशंसित श्री ब्रजराज किशोर विपत्ति निवारी।
रच्छा करें सबु भक्तन की भव भीतिके भंजन कुञ्ज बिहारी॥

श्री देव-देव जयदेव कवीश गायो।
गोविन्द गीत रस सागर सों बहायो॥
श्री रामराय कछु भाव कनैक धायो।
सुस्निग्ध माधव चतुर्थं जु सर्गं गायो ॥७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोहा—विरह असी जा उर धसी, लसी रसीली प्रीति।
ता व्रण पै मरहम न दे, जिहि प्रेमिन की रीति ॥१॥
प्रेम कठिन संसार में, नहिं कीजे जगदीश।
जो कीजे तो दीजियो, तन मन धन संग शीश ॥२॥

इति श्रीजयदेवभगवद्वंशोद्भव श्रीरामरायगोस्वामिप्रणीत
श्रीगीतगोविन्दप्रियायां सुस्निग्धमाधवो
नाम चतुर्थः सर्गः

अथ—पंचमः सर्गः

अहमिह निवसामि याहि राधामनुनय मद्वचनेनचानयेथाः।
इतिमधुरिपुणासखीनियुक्ता स्वयमिदमेत्यपुनर्जगादराधाम्॥१॥

हे सखी तुम जाइ प्यारी सों कहो समुझाय कें।
में रहू जा कुञ्ज में लावहु तिन्हैं पधराय कें॥
जा विधि विहारी की पठाई दूतिका नें आय कें।
श्रीकृष्ण के सन्देश राधे सों कहे समुझाय कें॥१॥

(दशम प्रबन्धो बराडी रागेण रूपक ताले गीयते)

वहति मलय—समीरे मदन—मुपनिधाय
स्फुटति कुसुमनिकरे विरहिहृदय-दलनाय ॥१॥
तव विरहे वनमाली सखि सीदति (ध्रु०)
दहति शिशिर—मयूखे मरणमनु—करोति।
पतति मदन-विशिखे विलपति विकलतरोति ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्वनति-मधुपसमूहे श्रवणमपि दधाति ।
मनसि वलित-विरहे निशि निशि रुजमुपयाति ॥३॥
वसति विपिन विताने त्यजति ललितधाम ।
लुठति धरणिशयने बहु विलपति तव नाम ॥४॥
रणति पिकसमुदाये प्रतिदिशमनुयाति ।
हसति मनुजनिचये विरहमपलपति नेति ॥५॥
स्फुरति कलरवरावे स्मरति भणितमेव ।
तव रतिसुखविभवे बहुगणयति सुगुणमतीव ॥६॥
त्वदभिध शुभदमासं वदति नरि श्रृणोति ।
तमति जपति सरसं परयुवयिषु न रतिमुपैति ॥७॥
भणति कविजयदेवे विरह—विलसितेन ।
मनसि रभसविभवे हरिरुदयतु सुकृतेन ॥८॥

श्री राधे तव वियोग वनमाली ।
काम सहाय बनाय मलय की वायु बहति दुखशाली ॥१॥
विरही हिये बिदारनु कारन, कुसुमकली किलकारी ।
पीरा मरन समान दै रही, चन्द किरन चिनगारी ॥२॥
भ्रमरगुञ्ज नहिं सुनत विरह में, निशतन दशा बिसारी ।
गहवर वन में बास करत हरि, धरनि सैन गिरधारी ॥३॥
राधे राधे बोलत विलपत, सुन जीवन धन प्यारी ।
बिरह बान बरसत ऊपरसों, विकल विलाप विहारी ॥४॥
कोकिल कूक सुनत चहुँदिशि में, जानत तव मुखवानी ।
हँसत लोग जिह दशा देखि तब, पुनि लाजत मनमानी ॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बोध भये रति सबद सुनत, सुन्दर पच्छिन की भासा ।
सुरतानन्द होत अनुभव तब, करत तासु अभिलासा ॥६॥
राधे राधे नाम कोऊ तिनु, सन्मुख सहज वखाने ।
तवु सबुसों तजि प्रीति पियारो, सुनत ताहि दे काने ॥७॥
श्रीजयदेव महाप्रभु हरि के, विरह विलास उचारे ।
रामराय जा पुण्य तिन्हीं के, प्रकट होंय पिय प्यारे ॥८॥

पूर्वं यत्र समं त्वया रतिपतेरासादिताः सिद्धय-
स्तस्मिन्नेव निकुञ्जमन्मथमहातीर्थे पुनर्माधवः ।
ध्यायंस्त्वामनिशं जपन्नपि तवैवालापमन्त्राक्षरं
भूयस्त्वत्कुचकुम्भनिर्भरपरीरम्भामृतं वाञ्छति ॥१॥

सवैया—

जा नबकुञ्ज चलीं पहिलें रति संगर सिद्धि मिली ही सुखारी ।
ता रति तीरथराज विराज निशादिन नाम जपें बनवारी ॥
चाहतु कंचन कुम्भ कुचा परिरंभन रूप सुधा रसधारी ।
ज्यों मुनि ईश्वर ध्यान धरें अनिमादिक आठकी चाह विचारी॥१॥

जाही बीच वसिके विलास अभिलास किये ।
साँचे मन साचनि में पूरी प्रीति ढारी है ॥
ताही कुञ्ज विपिन वितनराज तीरथ में ।
आज व्रजराज व्रत सों जुरचौ सवारी है ॥
ध्यान धर तेरो नाम मंत्र ही जपत तप ।
तन की तपन पंच अगनि सुधारी है ॥
उरज सरोज उर अंक भरि भेटिबे की ।
श्याम अभिरामें काम कामना तिहारी है ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(एकादश प्रबन्धः केदार रागेण एकताली ताले गीयते)

रति-सुखसारे गतमभिसारे मदन-मनोहरवेशम् ।
न कुरु नितम्बिनि गमन विलम्बनमनुसर तं हृदयेशम् ॥१॥
धीर-समीरे यमुनातीरे बसति वने बनमाली ।
गोपीपीनपयोधरमर्दनचञ्चलकरयुगशाली ॥२॥
नाम-समेतं कृत-संकेतं वादयते मृदुवेणुम् ।
बहु मनुते ननु ते तनुसंगत पवनचलितमपि रेणुम् ॥३॥
पततिपतत्रे विचलति पत्रे शंकितभवदुपयानम् ।
रचयति शयनं सचकितनयनं पश्यति तव पन्थानम् ॥४॥
मुखरमधीरं त्यज मञ्जीरं रिपुमिव केलिसुलोलम् ।
चल सखि कुञ्जं सतिमिरपुञ्जं शीलय नीलनिचोलम् ॥५॥
उरसि मुरारेरुपहितहारे घन इव तरलवलाके ।
तडिदिव पीते रतिविपरीते राजसि सुकृतविपाके ॥६॥
विगलितवसनं परिहृतरसनं घटय जघनमपिधानम् ।
किसलयशयने पङ्कजनयने निधिमिव हर्षनिधानम् ॥७॥
हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम् ।
कुरु मम वचनं सत्वररचनं पूरय मधुरिपु कामम् ॥८॥
श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परमरमणीयम् ।
प्रमुदितहृदयं हरिमतिसदयं नमत सुकृतकमनीयम् ॥९॥

पद चलहु किन मानिनि जमुना तीर ।
सुनहु नितम्बिनि विमल न कीजै, बिलसत धीर समीर ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मदन मनोहर वेश विहारी, प्रानुनाथ तुव श्री गिरधारी।
गोपी पुष्ट कुचन कों मींड़त दोनों हाथ अधीर ॥१॥
राधे नाम जपत मुरली में, मधुर-मधुर मनहर सुर धीमें।
तुव पद पंकज धूरि पवनु संग पाइ होत बेपीर ॥२॥
पंछी उड़त तिन मद उत्कट सों, पातनु की खरखर आहट सों।
जानि आगमनु सैन सँमारत कोमल कुञ्ज कुटीर ॥३॥
करत सवद नूपुर तजि दीजै, शत्रु समान न इनको छीजै।
अँधियारी कुञ्जन में चलिये धारि नील नव चीर ॥४॥
मेघाडम्वर में बगपांती, हीर हार ता विधि हरि छाती।
रति विपरीत बनहु विज्जुत सम श्रीगौरांग शरीर ॥५॥
दल सिज्जा ऊपर हरि संगी, वसन करधनी तजि नवरंगी।
जघन जघन कटितट मिलि भेटौ पियौ रसासबछीर ॥६॥
कृष्णचन्द्र भारी अभिमानीं, रुष्ट होंइ कछु देरी जानी।
वीते रात न हाथ परे कछु मदनु मनोरथ वीर ॥७॥
श्रीराधामाधव सेवा फल, भई दया मो ऊपर उज्जल।
श्रीजयदेव भनित अति सुन्दर गायौ गीत गंभीर ॥८॥
परम प्रसन्न प्राणपति लीला, पुण्य किये पावत नहिं हीला।
रामराय भगवान सखी हित गावत धारत धीर ॥९॥

विकिरति मुहुः श्वासानाशाः पुरोमुहुरीक्ष्यते
प्रविशति मुहुः कुञ्जं गुञ्जन् मुहुर्बहुताम्यति।
रचयति मुहुः शय्यां पर्याकुलं मुहुरीक्षते
मदनकदनक्लान्तः कान्ते प्रियस्तव वर्तते ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काम की पीड़ासों पीड़ित माधव श्वास लिये दिश देश निहारें,
कुञ्जसों बाहिर आवत जात सुहोंठन में कछु बात उचारें।
दुःखित है पुनि आश करैं पुनि भीतरु है पर्जंक समारें,
व्याकुलता की कहा कहिये जिह देखत राधिका वेगी पधारें ॥१॥
ऊंचे उसासन आस बंध्यो मग ताकत बीतत सांझ सवारो।
कुंज में जाइ सुहाइ कछू न फिरे फिर देखिके दौरि दुवारो॥
सेज समार विहारि के हेत निहारि अचेत है जात विचारो।
कामक बानते कातर ऐसो निहारयो पियारी तिहारो पियारो॥

त्वद्वाक्येन समं समग्रमधुना तिग्मांशुरस्तंगतो
गोविन्दस्य मनोरथेन च समं प्राप्तंनभःसान्द्रताम्।
कोकानां करुणस्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना
तन्मुग्धे विफलं विलम्बनमसौ रम्योभिसारक्षणः ॥२॥

राधे जू मानुभरे वचनामृत पाइ दिवाकर अस्त भयो है।
गोविन्द जू के मनोरथ पूरन हेतु चलौजु अभी समयौ है॥
जे चकई चकवा के समान बिनैभर वाक्य को सार गयौ है।
होइ मिलापु मिटें सब तापु जिही हितु में अभिसार कह्यो है॥२॥
वामता तेरी के संग हे वाम पतंग भयो अस्तंगत जैसो।
मैंन मनोरथ मोहन के संग आनि छयो तिमिराकर तैसो॥
बीनती मोरी औ कोक की वानी सुनी अवलंब बिलंबन कैसो।
सार पसार दयो अपनो निशि हार समें अभिसार न ऐसो॥

आश्लेषादनु चुम्बनादनु नखोल्लेखादनु स्वान्तजात्
प्रोद्बोधादनु सम्भ्रमादनु रतारम्भादनु प्रीतयोः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्यार्थं गतयोर्भ्रमान्मिलितयोः सम्भाषणैर्जानतो
दंम्पत्यो र्निशि कोन कोन तमसि व्रीडाविमिश्रोरसः ॥३॥

जात संकेत निकेत के बीचु अन्धेरे में एक अन्धेर नयो है,
चाहति जाइ न सोतो मिल्यो भ्रम अन्यसों अन्य मिलाप भयो है।
प्रेम आलिंगन चुम्बन रेख नखच्छत भोग विलास छयो है,
बोलत बोध पिया पियु को रस कौनसौ लाजु ने नांय दयो है ॥३॥

चाह सों चुम्बन दीने अलिंगन अंगन कीने अनंगमई जस।
प्रीति की रीत सो मीत मिलाप कियो चुपचाप भयो नहि आलस ॥
आनके हेतु गये भ्रमते रतिमान जवे अनुमान भये बस।
वातन दम्पति जान परी तव सम्पति में अति लाज मई रस ॥

सभयचकितं विन्यस्यन्तीं दृशौ तिमिरे पथि
प्रतितरु मुहुःस्थित्वा मन्दं पदानि वितन्वतीम्।
कथमपि रहः प्राप्तामंगैरनङ्ग—तरङ्गिभिः
सुमुखि सुभगः पश्यन् सत्वामुपैतु कृतार्थताम् ॥४॥

राह अन्धेरे डरी कर चञ्चल नैनु निहारति वृक्ष के नीचे,
ठैरत जात चले रतिनाइक अंगु में व्यापि रही रस सींचे।
देखत तोइ सकेत निकेत सने वडुभागु सुहागु की कीचे,
देंर करौ न धरौ पगु बेगि निहारें पिया पिय रंग उलीचे ॥४॥

मीत के मारग जात सभीत है चौंकति-सी तम देख जथारथ।
ठाडी रहे प्रति वृक्षतरे अति मन्द धरें पग चाहती स्वारथ ॥
अंग अनंग तरंग लिये बलि जो पुजवे पियको परमारथ।
राधिके आपनो जीवन मान हैं माधव तोहि निहार कृतारथ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधामुग्धमुखारबिन्दमधुपस्त्रैलोक्यमौलिस्थली
नेपथ्योचितनीलरत्नमवनीभारावतारान्तकः ।
स्वच्छन्दं व्रजसुन्दरी जनमनस्तोषप्रदोषश्चिरं
कंसध्वंसनधूमकेतुरवतु त्वां देवकीनन्दनः ॥५॥

[इतिश्रीगीतगोविन्दे साकाङ्क्षपुण्डरीकाक्षोनाम पञ्चमः सर्गः]

राधिका मुग्ध मुखाम्बुज के अधरामृत पानु भये भ्रमरें।
तीनहुँ लोक के मौलि विन्दावन वेश सो नीलमनी का तरें ॥
भूमि के भार उतारन दच्छ ब्रजाङ्गना मोद प्रदोख करें।
कंस विघंस कों पुच्छल तारे श्रीदेवकीनन्दन रच्छा करें ॥५॥

राधिका आनन कंज अली जग मौल थली मनि नील अनन्दन।
भूमि के भार लिये अवतार तिन्हें जम होइकें कीन्हे निकन्दन ॥
सुन्दरी जो व्रजकी तिनके मन तोष प्रदोष से आनंद कन्दन।
कंस विध्वंसन केत रहो हित हेत तिहारे हैं देवकी नन्दन ॥

दोहा—भगवत श्रीजयदेव के, बचन महारस सिन्धु।
रामराय तिनकी कृपा, तृपित भयो इक बिन्दु ॥१॥
अभिसारक वरनन जु, साकांच्छ पुंडरीकाच्छ।
सरग पाँचमो पूरनो, श्रीहरि कृपा कटाच्छ ॥२॥

इतिश्रीगीतगोविन्दप्रियायां पंचमः सर्गः ।

★

अथ—षष्ठः सर्गः

अथ तां गन्तुमशक्तां चिरमनुरक्तां लतागृहे दृष्ट्वा ।
तच्चरितं गोविंदे मनसिजमन्दे सखी प्राह ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोहा—पंगुभई अनुराग वस, चलन सकति अर दास ।
श्रीराधा कौ चरित सखि, कह्यो कृष्ण पद पास ॥

(द्वादश प्रबन्धो गुर्जरो रागेण रूपक ताले)

पश्यति दिशि दिशि रहसि भवन्तम् ।
त्वदधर-मधुर-मधूनि पिवन्तम् ॥१॥

नाथ हरे श्रीनाथ हरे. सीदति राधाऽऽवासगृहे ॥ध्रुव॥

त्वदभिसरण-रभसेन बलन्ती
पतति पदानि कियन्ति चलन्ती ॥२॥

विहितविशदविसकिसलय-बलया
जीवति परमिह तव रतिकलया ॥३॥

मुहुरवलोकित-मण्डन-लीला
मधुरिपुरहमिति भावनशीला ॥४॥

त्वरितमुपैति न कथमभिसारम्
हरिरिति वदति सखीमनुवारम् ॥५॥

श्लिष्यति चुम्बति जलधरकल्पम्
हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम् ॥६॥

भवति विलम्बिनि विगलितलज्जा
विलपति रोदिति वासकसज्जा ॥७॥

श्रीजयदेव-कवेरिद-मुदितम्
रसिकजनं तनुतामति मुदितम् ॥८॥

हे हरि जय-जय होइ तिहारी ।
निजु अधरामृत पीवति देखति तुमहि राधिका प्यारी ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चहुँदिशि देखि निकट तुव आवति गिरि-गिरि परत दुखारी।
दुर्बल विरह वेदना सों भई प्यारे तेरी प्यारी ॥२॥
कमल नालु अरु दलके कंकन धारि रहीजु विचारी।
केवल रतिरस रंगु लालसा आशा जीवनु धारी ॥३॥
निजु आभूषन के विलास लखि बोलति बारम्बारी।
तुव समानु रचि बेख कहति है मैंहूँ कुञ्जविहारी ॥४॥
क्यों नांही संकेत पधारत मेरे मनके हारा।
अन्धकारु कों तुम्हें समझि आलिंगनु चुम्वनु धारी ॥५॥
बासक सज्जा तुमहि न देखति विलपति निलजु पुकारी।
श्रीजयदेव महाप्रभु बाँनी रसिकानन्द प्रचारी ॥६॥

विपुलपुलकपालिः स्फीतसीत्कारमन्त--
र्जनित-जड़िम-काकु-व्याकुलं व्याहरन्ती।
तव कितव विधायामन्द-कन्दर्पचिन्तां
रसजलधिनिमग्ना ध्यानलग्ना मृगाक्षी ॥१॥

किये कामु चिन्ता सों व्याकुल ध्यान मगन भई भारी।
जानति अंगु लग्यो मम प्यारो रोमांचित सुखकारी॥
तेही समें अधर चुम्वन अरु नखछत मनुमें धारी।
शीशी करत भई जड़ विह्वल डूबी रस निधि बारी ॥१॥

कोमल शरीर सब रोम उठि आये सुचि,
सोम से वदन तम तोमहि इतौत है।
ऊरध उसास प्रति सांसत उदास अति,
आसन में आंस भरी आखिन रितौत है॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वकत वितान व्यथा वेदन बिरह भरी,
.. एक बात तेरे हित हेत की हितौत है।
कपट निधान कान रावरे ही ध्यान लगि,
ऐसे प्राण प्यारी निशवासर चितौत है॥

अङ्गेष्वाभरणं करोति वहुशः पत्रेपि संचारिणि
प्राप्तंत्वां परिशङ्कते वितनुते शय्यांचिरंध्यायति।
इत्याकल्प विकल्प तल्प रचना संकल्प लीलाशत
व्यासक्तापि विनात्वया वरतनुर्नैषा निशांनेष्यति॥२॥

पत्तनु की खरबर सुनि राधा समुझि आपुकों आयो।
कर पदु धरि आभूषन सुन्दर पौहपनु सैनु सजायो॥
करि अनेकु संकल्प विकल्पहि कियो मतो मनु भायो।
राति गये जीवे नहि जीवे सो न समझि में आयो॥२॥

अंगन भूषन साज सुधारत सेज समारत मैन की छाकी।
पातन के खरके उचके मनभावन आवन जान पियाकी॥
प्यारे तिहारे बिना अबताकी में ताकी वियोग विथा कुलताकी।
देखके देह दशा अनुमानति नीठ निशा नहि बीतिहै ताकी॥

किं विश्राम्यसि कृष्णभोगिभवने भाण्डीर भूमीरुहि
भ्रातर्याहि न दृष्टिगोचरमितः सानन्दनन्दास्पदम्॥
राधाया वचनं तदध्वगमुखान्नन्दान्तिके गोपतो
गोविन्दस्य जयन्ति सायमतिथि प्राशस्त्यगर्भा गिरः।३।

[इतिश्रीगीतगोविन्दे सोत्कण्ठवैकुण्ठोनामः षष्ठः सर्गः]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुनहु पथिक भाण्डीरभूमि में सर्प रहतु इक कारौ।
जासों श्रीनन्दालय सुन्दर तामें आपु पधारौ॥
जानि गये गोपीजन बल्लभु ताछिनि वचनु उचारौ।
धन्य धन्य महाराजु आपु इहाँ सुखसों समय निकारौ॥३॥

पथिक मवासी इह वास जनि कीजे याही,
तरु तरे कारे की विलास भूमि कहिये।
तेरे नन्दगाम नन्द धाम विसराम ठौर,
और ऐसो दूसरो न वेगि जाइ रहिये॥
राधा के बचन सुन जाय नियराय जब,
नन्द समुहाय सोई चाहे कह्यो चहिये।
बाबा तन घातन तें दीनी बहराय हरि,
होहु ते सहाय जाते दुःख पाइ रहिये॥

दोहा—सोतकंठ बैकुंठ जह, सर्ग भयो भरपूर।
रामराय जयदेव प्रभु, वानी आनन्दमूर॥४॥

दोहा—उत्कंठा की माधुरी, महाधुरीन सुभाव।
अनुपम सुख मीठी लगत, रस सागर मननाव॥१॥
प्यारी कारी निशा में, धारी सारी श्याम।
प्राननाथ की अङ्ग छवि, उत्कंठा की दाम॥२॥

इतिश्रीजगदीशावतार श्रीजयदेवगोस्वामिप्रभुवंशोत्पन्नपरमहंस राजराजेश्वर श्रीरामरायगोस्वामिप्रणीतायां श्रीगीतगोविन्दप्रियायाँ षष्ठः सर्गः।

★

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अधुना चन्द्रोदव्याजेन राधाया विरह व्यथाधिक्यमाह)

अथ—सप्तमः सर्गः

अत्रान्तरे च कुलटा—कुलवर्त्मपात
सञ्जातपातक इव स्फुटलाञ्छनश्रीः
वृन्दावनान्तर—मदीपयदंशुजालै
र्दिक्सुन्दरीवदनचन्दनविन्दुरिन्दुः ॥१॥

इच्छानुसार करें अभिसारि जो नारि तिन्ही के निवारनिको।
शाप लग्यो सो प्रतच्छ जग्यो तनु अंकु कलंकु निशार्तनि को॥
पूर्वदिशा रमनी मुखु पंकजु सोहति विन्दु सुचन्दनि कौ।
अंसु समूह प्रकाशू कियौ अरुनद्युति चन्द विन्दावनि कौ॥१॥

कुलटा कलाप अभिसार बट पार पाप,
पाप तें कलंक अंक छायो जाके इन्द सो।
वृन्दावन बीच जिन जौन जाल छाय दई,
दिगभाल मानो सोई चन्दन की विन्दु सो॥

माधव विलंव विधु विम्व मुखी राधे मुख,
रह्यो मुरझाय कुमलानो अरविन्द सो।
वेदन बढावे मदन गहि जगावे,
विरहिन को सतावे नहीं भावे अति निन्द सो॥

(त्रयोदश प्रबन्धो गौड मालव रागेण प्रतिमठ ताले गीयते)

प्रसरति शशधरविम्बे विहितविलम्बे च माधवे विधुरा
विरचितविविधविलापं सा परितापं चकारोच्चैः ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कथितसमयेपि हरिरहह न ययौ वनम्
मम विफलमेतदनुरूपमपि यौवनम्
यामि हे कमिह शरणं सखीजनवचनवंचिता (ध्रु०)
यदनुगमनाय निशि गहनमपि शीलितम्
तेन मम हृदय--मिदमसमशरकीलितम् ॥२॥
मम मरण--मेव वरमतिवितथकेतना
किमिति विषहामि विरहानलमचेतना ॥३॥
मामहह विधुरयति मधुरमधुयामिनी
कापिहरिमनुभवति कृतसुकृतकामिनी ॥४॥
अहह कलयामि वलयादिमणिभूषणम्
हरि--विरहदहनवहनेन वहुदूषणम् ॥५॥
कुसुमसुकुमार---तनुमतनुशरलीलया
स्रगपि हृदि हन्ति मामतिविषमशीलया ॥६॥
अहमिह निवसामि न गणित---वनवेतसा
स्मरति मधुसूदनो मामपि न चेतसा ॥७॥
हरिचरणशरण--जयदेवकविभारती
वसतु हृदि युवतिरिव कोमलकलावती ॥८॥

दोहा—चन्द छटा ऊपर छई, विलम ब्रजेश मिलापु।
तुव अनुरागु वियोगिनी, राधाकरति विलापु ॥

रे मन वनु न मिले वनुमाली।
अचरजु खेदु जिही मम जोवनु जात विफल दुखु घाली।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आये मोहन कहि कहि मोकों करत वंचना आली ।
अव विश्वासु न काहू कौ मोहि मरूँ डूबि जलि चाली ॥१॥
जा पिय हेतु अंधेरी निशि में बसी सघनु वनु भारी ।
लगे कामु के गाढ वानु हिय तिनु मोहि करी दुखारी ॥२॥
वोधशून भई विरह दवानलु जारति जरी भई कों ।
जिह तनु जाउ भलें सुखु मोकों आन न भावति जी कों ॥३॥
दुख की बात वसन्त रात पिय बिनु विहालि निकरे हैं ।
पुन्नशालिनी गोपवधू कोउ लै आनन्दु करे हैं ॥४॥
हाइ हाइ मनि कंकनु भूखनु दूखनु सम है मोकों ।
महा कटिनु विरहानलु तापित अबु हरि कहाँ विलोकों ॥५॥
कामदेव शर कुसुम माल गल वानु समानु लगे हैं ।
काम उदीपक पुहप अंग तनु तिनसों मदनु जगे हैं ॥६॥
बेतस वनु की लता पता गृह कियो सघनु वन वासा ।
वे पिय याद न करें मोहि अबु दूर आगमनु आसा ॥७॥
सुमधुर कल संगीत कलामय अद्भुत नव रसु रासी ।
श्रीजयदेव महाप्रभु वानी भगति सुधा निधि खासी ॥८॥
रसिकु हिये सोलह सिंगार जुत वसति नाइका जैसें ।
रामराय प्रभु के मनुमन्दिर कलावतीजू तैसे ॥९॥

तत्किं कामपि कामिनीमभिसृतः किंवा कला केलिभि
र्बद्धोवन्धुभिरन्धकारिणि वनोपान्ते किमु भ्राम्यति
कान्तःक्लान्तमना मनागपि पथि प्रस्थातुमेवाक्षमः
संकेतेद्य कृतेऽपि वञ्जुललताकुञ्जेपि यन्नागतः ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केलिकलाकुल कामिनि कोऊ कलंकिनि कृष्ण किशोरु हमारे।
राखे नहीं तो रहे निजु बन्धुन हासु विलासु में नन्ददुलारे॥
या घनघोरु निशा पथिभूलि रहे मोहि खोजु वियोग दुखारे।
मंजुल वंजुल कुञ्ज संकेत बताइ सखो पुनि क्यों न पधारे॥१॥
कामिनी काहू लये विरमाय रमाय किधों न तो कीनो कहारी।
वांधि रखे किधों खेलत खेल में प्रीति के वन्धन काहू सखारी॥
भूलि परे कि थके सघने बनवीथिन में निश पाइ अंध्यारी।
आये नहीं अजहूँ लो कहा भयो मंजुल कुंज में कुंजविहारी॥

अथागतां माधवमन्तरेण सखीमियं वीक्ष्यविषादमूकाम्।
विशंकमाना रमितं कयापि जनार्दनं दृष्टवदेतदाह॥२॥

माधव लेनुगई कोउ दूती बिनाहीं लियें पुनि लौट कें आई।
दुःखित मौनु अकेली लखी तव पूछति प्यारीजु रोसभराई॥
का कोऊ गोपवधू में रमे मोहि बात न भावति ऐसी पराई।
नित्य लखों नहि शंक कछू वे तो ढीठ भये करि पीठ रुखाई॥२॥
आई निहारी विना हरि हारीसी प्यारी सखी सुख साज विसारत।
बूझत हू चुपचाप लजाइ विषाद भरी नहि वैन उचारत॥
शंकित है मन चिन्तत राधिका आनतिया रति चित्त विचारत।
ता तियको निज माथ के साथ यों अच्छन आगे प्रतच्छ निहारत॥

(अथ चतुर्दश प्रबन्धो बसन्त रागेण एकताले गीयते)

स्मर--समरोचित--विरचितवेशा
गलितकुसुमदल--विलुलितकेशा॥१॥
कापि चपला मधुरिपुणा
विलसति युवतिरधिकगुणा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरिपरिरम्भण–वलितविकारा (ध्रु०)
कुचकलशोपरि–-तरलितहारा ॥२॥
विचलदलक---ललिताननचन्द्रा
तदधरपानरभसकृततन्द्रा ॥३॥
चञ्चलकुण्डल--ललितकपोला
मुखरितरसनजघन---गतिलोला ॥४॥
दयितविलोकित---लज्जतहसिता
बहुविधकूजित---रतिरसरसिता ॥५॥
विपुलपुलकपृथु---वेपथुभङ्गा
श्वसितनिमीलित---विकसदनङ्गा ॥६॥
श्रमजलकणभर---सुभगशरीरा
परिपतितोरसि रतिरणधीरा ॥७॥
श्रीजयदेवभणित----हरिरमितम्
कलिकलुषं जनयतु परिशमितम् ॥८॥

हे सखि सुनु मधुसूदन वात।
सौतिनु संगु विलासु करति हैं मो संग कीनी घात॥
मोसों अधिक सरसु गुनवारी सुरति समरु आभूखन धारी।
रति विपरीत कुसुम झरि ढीली वैनी चपला गात॥२॥
हरि आलिंगन कामु विकारा, रतिविपरीति हलति कुचुहारा।
चंचलु मुखुशशि आँचलु अलकैं अधर सुधा अलसात॥३॥
कुंडलु चलनि कपोलु सुहाये हलति किंकिनी नितम चलाये।
हरि कटाच्छ लज्जित रति कूजित, बहुबिधि रसु मुसकात॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रति आनन्दु पुलकि कम्पित तनु गद्गद् सुर गाढ़े आलिङ्गनु ।
कामु भावु प्रफुलित मृगलोचनि मीचति हिये सिहात ॥५॥
सुरतु परिश्रम स्वेदबिन्दु तनु किये कृष्णवक्षस्थल आसनु ।
रति रनुधीर धरें प्यारे मिलि संभोगिनि सुखुपात ॥६॥
कृष्णचन्द संभोगु सुशोला श्रीजयदेव कही जिह लीला ।
श्रोता गाइक कलि कल्मस हरु रामराय जिये भात ॥७॥

विरहपाण्डु—मुरारिमुखाम्बुज--
द्युतिरयं तिरयन्नपि वेदनाम् ।
विधुरतीव तनोति मनोभुवः
सुहृदये हृदये मदनव्यथाम् ॥१॥

हे सखि मेरे वियोग में प्रीतम पीतभये पेवरि छवि धारी ।
श्रीमुख पंकजु कीं समता जिह कामको मित्र करें सुखकारी ॥
मंडल चन्दको राजतु हेतु आनन्द सबै ब्रजमण्डल भारी ।
तौहू न मोहि सुहात जा कामुकी पीड़ा सों पीड़ित चित्त त्रिथारी ॥२॥
विरह व्यथा हरि वदन द्युति पिवरी के अनुहार ।
मनसिज मीत मयङ्क महि मदन बाण मति मार ॥

(पंचदश प्रबन्धो गुर्जरी रागेण एकताले गीयते)

समुदितमदने रमणीवदने चुम्बनवलिताधरे ।
मृगमदतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे ।
रमते यमुनापुलिनवने विजयी मुरारिरधुना । ध्रु०
घनचय रुचिरे रचयति चिकुरे तरलिततरुणानने ।
कुरवककुसुमं चपलासुषमं रतिपति मृग कानने ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घटयति सुघने कुचयुगगगने मृगमदरुचि रूसिते।
मणिसरममलं तारकपटलं नखपदशशिभूषिते ॥३॥
जितविसशकले मृदुभुजयुगले करतलनलिनीदले।
मरकतवलयं मधुकरनिचयं वितरति हिमशीतले ॥४॥
रतिगृह जघने विपुलापघने मनसिजकनकासने।
मणिमयरसनं तोरणहसनं विकिरति कृतवासने ॥५॥
चरणकिसलये कमलानिलये नखमणिगणपूजिते।
वहिरपवरणं यावकभरणं जनयति हृदि योजिते ॥६॥
रमयति सुदृशं काम्पि सदृशं खलहलधर सोदरे।
किमफलमवसं चिरमिह विरसं वद सखि विटपोदरे ॥८॥
इहरसभणने कृतहरिगुणने मधुरिपुपदसेवके।
कलियुगचरितं न वसतु दुरितं कविनृपजयदेवके ॥६॥

वा वनु मोहि चलहु लै प्यारी।

कालिन्दी तट श्री बंशीवट रमन करत जहाँ कृष्ण मुरारी ॥
चुम्वनुसों सकुचित विम्बाधरु मुखपर मृगमद तिलक लिखति कर।
मनहु चन्दमें हरिनु सोंति तनु कामोद्दीपनु कारी ॥१॥
मेघमाल जिमि सोहत सुन्दर जुवजन मन चंचलता आकर।
कामु हरिन गृह वनिता कचरुचि गूंथति कुरव सम्हारी ॥२॥
कस्तूरी लेपनु अकाश से नखछतु मानहु शशि प्रकाश से।
तारागनु सम हीरहार है कुच कठोर सिंगारी ॥३॥
कमल नालु सों अति सै कोमल, नव पाटल पौहपनु से करतल।
हिमु शीतल कर मधुकर मरकत मनि कँकन दिये डारी ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कामदेवजू कौ कनकासन, रति निवास सारी तन सुवसन ।
वन्दनवार समान करधनी सघन जघनु मतवारी ॥५॥
रमानिवास सदृश नख मनिगन सोहति सौतनु के युग चरनन ।
हिय लगाइ जावक निजु हाथनि देति कृष्ण गिरिधारी ॥६॥
हलधरजू के लघुवर भैया कौन सुनयनी सँगु न रमैया ।
रस सिंगार विना किमि बैठी आसा करहु तिहारी ॥७॥
जिह सिंगार कृष्ण गुनगाइक, श्री जयदेव देव प्रभुनाइक ।
रामराय हिय बसैन कलिजुग पापु तापु संसारी ॥८॥

नायातः सखि निर्दयो यदि शठस्त्वं दूति किं दूयसे ।
स्वच्छन्दं बहुवल्लभः स रमते किं तत्र ते दूषणम् ।
पश्याद्य प्रियसङ्गमाय दयितस्याकृष्यमाणं गुणै ।
रुत्कण्ठार्तिभरादिव स्फुटदिदं चेतः स्वयं यास्यति ॥१॥

हे सखि दूति जो निर्दय बंचक कृष्ण हमारे समीपुन आये ।
क्यों तू दुखी मन में इतनी बहुवल्लभ वेतौ सवी सुनिपाये ॥
है वसि सुन्दरतादिक के रति नाइक खेद महा बउराये ।
प्रान तौ प्रानपती सों मिलें मन अन्त-अनन्त कौ ध्यानु लगाये ॥१॥
आयो न नाथ जो साथ तिहारे तो दोष कहा तुहि को दुख छायगो ।
ठौर कुठौर लखै न सुछन्द कठोर हिये को सखै निठुरायगो ॥
तो उनके गुण यौवन रूप फंदानि फस्यो अति ही अकुलायगो ।
मोमन मोहि न मानत मोहन मोहन के ढिग आपुही जायगो ॥

चौपाई

जब पिय आवन आशा छूटी, विकल भई अति नवल वधूटी ॥
देह अदेह दहन अति दही, दीन होय तब अलि सों कही ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्यारी जों मोहि को मरत जिवाओ, जीवन आनहि वेगमिलाओ ॥
मीत मिलाप मनोरथ भरी, यों अभिलाषात सुधि वुधि हरी ॥

(षोडश प्रवन्धो देशांग रागेण रूपक ताले गीयते)

अनिल–तरल–कुवलयनयनेन ।
तपति न सा किसलयशयनेन ।
सखि या रमिता वनमालिना ॥ध्रु०॥
विकसित –सरसिज–ललितमुखेन ।
स्फुटति न सा मनसिजविशिखेन ॥२॥
अमृतमधुर––मृदुतर––वचनेन ।
ज्वलित न सा मलयज–– पवनेन ॥३॥
स्थलजलरुह –– रुचिकरचरणेन ।
लुठति न सा हिमकर––किरणेन ॥४॥
सजल–– जलद––समुदयरुचिरेण ।
दलति न सा हृदि चिरविरहेण ॥५॥
कनकनिकषरुचिशुचि —वसनेन ।
श्वसिति न सा परिजनहसनेन ॥६॥
सकलभुवन ––जनवरतरुणेन ।
वहति न सा रुजमतिकरुणेन ॥७॥
श्रीजयदेव ––भणितवचनेन ।
प्रविशतु हरिरपि हृदयमनेन ॥८॥

वनमाली कौ विरह सतावै ।
जो रमनी तिनु सगु रमी नव दलु सिज्जा सुखपावै ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रफुलित कमल कृष्णमुख सों मिलि रतिपीरा न दुखावै ।।
परम मधुर बचनामृत हरि सँग मलय पवन पहुनावै ।
थल कमलनु सम कर चरणाम्बुज मिले चन्द हरखावै ।
सजल जलद समु श्याम पाइ पुनि विरह न हिये दहावै ।
पीताम्बर सों भोगवती सखि हास श्वास नहिं लावै ।
है विपरीत सवै दुख आवत मिटै न नैकु मिटावै ।
श्री जयदेव महाप्रभु बानी, जो कोई जन गावै ।
रामराय सोई प्यारे कों अपुने हृदय बसावै ।

मनोभवानन्दन चन्दनानिल ।
प्रसीद रे दक्षिण मुञ्च वामताम् ।
क्षणं जगत्प्राण विधाय माधवं ।
पुरोमम प्राणहरो भविष्यसि ।।१।।

काम जगावनु हारे अरे मलयानिल वैन सुनों दुखुभारे ।
होहु प्रसन्न गरीवनु पैं जगप्रानु के नाइक टेढ़ विसारे ।
एक घरी मोहि देखनु दे करि सन्मुख मोहन नन्ददुलारे ।
ता छिनु बीते पै देरी न हो तुम प्रानहरौ सुखसाध्य हमारे ।।१।।

प्रानन्द मनोज ओज आनंद महानद तू,
कान है सुजान सुनि लेके चित धरिये ।
मलय निवास को सुवासी धीरो सीरों हैकें,
लाइ जिन लाइये सहाय पाय परिये ।
दक्षिणता पाइके न वाम होहु श्यामविन,
काम ज्वर जालन ते रैंनि दिन ज्वरिये,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ये तू जग प्रान पौन छन छमा कीजे जोलों,
मिले प्राण प्यारो फेर मेरे प्रान हरिये ॥

रिपुरिव सखीसम्वासोयं शिखीव हिमानिलो ।
विषमिव सुधारश्मिर्दूरं दुनोति मनोगते ।
हृदयमदये तस्मिन्नेवं पुनर्वलते वलात् ।
कुवलयदृशां वामः कामो निकामनिरंकुशः ॥२॥

हे सखि श्यामुके देखे बिना सखि संघु सों शत्रु समानु लगैरी ।
अग्नि के भान भयो मलयानिल चन्द सुधा विखपानु लगैरी ।
कामके टेढे जा मत्त प्रभाव निरंकुश है नहि ध्यान लगैरी ।
प्रानपती के वियोग विखें जुवती जनु शूल प्रमान लगैरी ॥२॥

वासर सुवास निशवासर लगत सखि,
विधु हू बधिक लों करत प्रान घात है ।
सीखी ज्यों सखी समाज सारे सुख साज आज
सालत शरीर सब सोहै न सुहात है ।
अंकुश विहूने माते गजलों न मानें नेंक,
कामिनी को काम बिनु काम उतपात है ।
निठुर कठोर ऐसे हरि मिलवे को मेरो,
वरजेंहू वलकरि मन चलि जात है ॥

बाधां विधेहि मलयानिल पञ्चबाण
प्राणान् गृहाण न गृहं पुनराश्रयिष्ये ।
किं ते कृतान्तभगिनि क्षमया तरङ्गै-
रङ्गानि सिञ्च मम शाम्यतु देहदाहः ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे मलयानिल देहु व्यथा जितनी मन इच्छा तुम्हारे में है जू।
काम करो मम प्रान हरो पुनि प्रान गये मन प्यारे में है जू।।
जमुना तुमहू न करो हो छिमा जमराजु की भैन समारे में है जू।
सींचहु अंगु तरंगनु सों तनु तापु हरो जो हमारे में है जू।।३।।

विधु बाधा सुखेन करो न हमें मलयानिल जारि तुहू गमुना।
किन मार सुमार करे मुहि मार दिखावत सोंह विथा समुना।
अव जाउ न फेरन ल्यों गृह नांउ इतो दुख दाहन को कमुना।
तन ताप तचे जिन तू जल सींच वृथा भगिनी जम की जमुना।।

सान्द्रानन्दपुरन्दरादिदिविषद्वृन्दैरमन्दादरा-
दानम्रैर्मुकुटेन्द्रनीलमणिभिः सन्दर्शितेन्दिन्दिरम्।
स्वच्छन्दं मकरंदसुंदरमिलन्मंदाकिनीमेदुरं
श्रीगोविंदपदारविन्दमशुभस्कंदाय वंदामहे।।४।।

(इतिश्रीगीतगोविन्दे श्रीनागरनारायणोनामसप्तम सर्गः समाप्तः)

धन्य श्री गोविंद पद अरविंद।
अति आदरु-पूर्वक प्रसन्न है नमत सतत सुरवृन्द।
मुकुट समूह नीलमनि मानहु झुके अनेक मलिंद।
जेहि धोवनु गंगाजलु निर्मल न्हात करति सुच्छन्द।
श्री जयदेव पापहरू गायौ सोही गीतगोविंद।
राम राय नागर नारायन सप्तम सर्ग अमन्द।।१।।

इन्द्र आदि अमर अनेक वृन्द वन्दित,
मुकुट इन्द्रनील मणि पायन परत यों।
इन्दीवर मन्दिर में मधु मकरन्द छक्यो,
मधुप अमन्द हुति देत रस हेत ज्यों।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन्दाकिनि जनम आनन्द कन्द छवि छन्द,
मेरी मति मन्द सो वरणि सकत त्यों ।
ऐसे नन्द नन्द चन्द पद अरविन्द दुःख,
दारिद निकंदन कों वन्दन करत त्यों ॥

इति श्रीगीतगोविन्दप्रियायां सप्तमसर्गः समाप्तः

★

(अधुना श्रीराधा प्रातरागतं प्रियं दृष्ट्वा साभ्यसूयमाह)

अथ–अष्टमः सर्गः

अथ कथमपि यामिनीं विनीय
स्मरशरजर्जरितापि सा प्रभाते ।
अनुनयवचनं वदन्तमग्रे—
प्रणतमपि प्रियमाह साभ्यसूयम् ॥१॥

काम बानु विधि राधिका करि दुख रात वितीत ।
प्रनत नम्र पति सों कहति ईर्खांमय जिह गीत ॥१॥

(सप्तदश प्रबन्धो भैरवीरागेण यतिताले गीयते)

रजनिजनितगुरुजागररागकषायितमलसनिमेषम् ।
वहति नयनमनुरागमिव स्फुटमुदितरसाभिनिवेशम् ॥
हरेहरे याहि माधव याहि केशव मा वद कैतववादम् ।
तामनुसर सरसीरुहलोचन या तव हरति विषादम् । ध्रु ॥१॥
कज्जलमलिन विलोचन चुम्बन विरचित नीलिमरूपम् ।
दशनवसनमरुणं तव कृष्ण तनोति तनोरनुरूपम् ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वपुरनुहरति तव स्मरसङ्गरखरनखरक्षतरेखम् ।
मरकत शकल कलितकलधौतलिपेरिव रतिजयलेखम् ॥३॥
चरणकमलगलदलक्तकसिक्तमिदं तव हृदयमुदारम् ।
दर्शयतीव वहिर्मदनद्रुमनवकिसलयपरिवारम् ॥४॥
दशनपदं भवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदम् ।
कथयति कथ मधुनापि मया सह तव वपुरेतदभेदम् ॥५॥
वहिरिव मलिनतरं तव कृष्ण मनोपि भविष्यति नूनम् ।
कथमथ वञ्चयसे जनमनुगतमसमशरज्वरदूनम् ॥६॥
भ्रमति भवानवलाकवलाय बनेषु किमत्र विचित्रम् ।
प्रथयति पूतनिकैव वधूवधनिर्दयवालचरित्रम् ॥७॥
श्रीजयदेवभणितरतिवञ्चितखण्डितयुवतिविलापम् ।
शृणुत सुधामधुरं विवुधा विवुधालयतोपि दुरापम् ॥८॥

केशव माधव अव कहा कहिये ।
जो दुख हरति कमल दलु लोचन ताही के ढिग जइये ॥१॥
कपट वचनु में सुन्यों न चाहति सो मोकों न सुनइये ।
रैन जागरन अरुन नैंन भये अब पुनि कहा वतइये ॥२॥
सौतनि के सिंगार रसासवु पी मनु मत्त वनइये ।
हरे रामु वहु कष्ट विषय जिह कहा तुम्हें जु जनइये ॥३॥
जो वोलो में राति तिहारे हेतु जग्यो तेहि लाली ।
तो काजर कारे विम्वाधर कहाँ भये बनमाली ॥४॥
काम जुद्ध में तीखे नख छत रेख विजय सुख चाखे ।
मानहु नील मनिन की पाटी कनकु वरन लिखि राखे ॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहो कदाचित् तुमहि खोजंते कंटकु लगे निशा में।
काम लता पातनु सम महावर दीसत हृदय दिशा में ॥६॥
ओठनु लगे दन्त छत मेरी सौतिन के घरि प्यारे।
पीडा भई हृदय मेरे में देखहु नन्द दुलारे ॥७॥
तुमरे हेतु कमलु तोरन गयो अधर भमर नें मारे।
अब तुमकों हों समझूँ निहचें तनु कारे मनु कारे ॥८॥
जा वनु में अबला जन मारनु हेतु भ्रमन तुव भारी।
वालु चरित्र पूतना मारी सो जिह वात पुंकारी ॥९॥
श्रीजयदेव रचित सुर दुर्लभ खंडित जुवति विलापहि।
श्रीरामराय हरि चरित हरेंगे भक्त वृन्द भवतापहि ॥१०॥
तन तापन ताप सताप हियो निशि नीद विताय प्रभात गह्यो।
तव आये लजात से लाल लखे अरसात जँभात न जात सह्यो।
कर जोर निहोर करोरिक सोंह करी रहि सोहे न सोहै चह्यो।
अति दीन अधीन सदोष पिया सो सरोष तिया तव ऐसे कह्यो ॥

तवेदं पश्यन्त्याः प्रसरदनुरागं वहिरिव
प्रिया पादालक्तच्छुरितमरुणद्योति हृदयम्।
ममाद्य प्रख्यात––प्रणयभरभंगेन कितव
त्वदालोकःशोकादपि किमपि लज्जां जनयति ॥१॥

हे हरि गोप वधू पद कौ हिये रंगु महावर छाइ रह्यो है।
रागु न भीतर नेंकु कहूँ जिह वात प्रतच्छ बताइ रह्यो है ॥
प्रेमु वनावट में नट सौ मोहि शोक औ लाजु जनाइ रह्यो है।
सो कपटी जनु कौ मिलिवौ न भलौ जिह शास्त्र सिखाइ रह्यो है ॥
तुव उर जावक प्रकट लखि तिय अनुराग समाज।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदपि कपट कीन्हों तऊ मोहि मन छोडत लाज ॥

प्रातर्नीलनिचोलमच्युतमुरः संवीतपीतांशुकं
राधायाश्चकितं विलोक्य हसति स्वैरं सखीमण्डले ।
व्रीडाचञ्चलमञ्चलं नयनयोराधाय राधानने
स्वादुस्मेरमुखोयमस्तु जगदानन्दाय नन्दात्मजः ॥२॥

[इति श्रीभगवत्पूज्यपादरसिकाचार्यं श्रीजयदेवमहाप्रभुप्रणीते
श्रीगीतगोविन्दे खण्डितावर्णनेविलक्ष्यलक्ष्मीपतिर्नामाष्टमः सर्गः]

मांझ—ललित लता मन्दिर के आंगन प्रात समें राजत पिय प्यारी ।
प्रीतम कौ पट पीत प्रिया पै ओढ़े लालु प्रिया की सारी ॥
हंसत सखीजन देखत लज्जित प्रिया दृष्टि कजरारी ।
रामराय सबु जग कों सुख दें श्री राधा कुञ्जविहारी ॥२॥

नील पटी नट नागर के कटि नागरी ले पटपीत सिधाई ।
रैंन परी पलटे लखि प्रात अली मिल आलिन में मुसकाई ॥
छैल छवीली की आपस में लखि ढीली चितौन लजीली सुहाई ।
सो तुमकों वृषभानु की नन्दिनी नन्द के नन्दन होहु सहाई ॥

इति श्री जगन्नाथस्वरूप श्रीजयदेव महाप्रभु वंशोद्भव रसानिधि
श्रीरामरायप्रणीत श्रीगीतगोविन्दप्रियायां अष्टमः सर्गः

अथ--नवमः सर्गः

अथ तां मन्मथखिन्नां रतिरसभिन्नां विषादसम्पन्नाम् ।
अनुचिन्तितहरिचरितां कलहान्तरितामुवाच रहःसखी ॥१॥

कामदेव पीडा सों पीडित रति रस रहित न सोहै ।
अति दुःखित ह्वै तिरस्कार करि पतिकों जो जग मोहै ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरि के चरित चिन्तवनु करि करि कलहन्तरिता जो है ।
लखि एकान्त कहति सखि तासों प्यारी तुम सम को है ॥

(अष्टादशप्रबन्धो गुर्जरीरागेण यतिताले गीयते)

हरिरभिसरति बहति मधु–पवने
किमपरमधिकसुखं सखिभवने ॥१॥
माधवे माकुरु मानिनि मानमये (ध्रु०)
तालफलादपि गुरुमति–सरसम्
किं विफलीकुरुसे कुचकलशम् ॥२॥
कति न कथितमिदमनुपदमचिरम्
मा परिहर हरिमतिशयरुचिरम् ॥३॥
किमिति विषीदसि रोदिषि विकला
विहसति युवतिसभा तव सकला ॥४॥
सजलनलिनीदलशीतलशयने–
हरिमवलोकय सफलय नयने ॥५॥
जनयसि मनसि किमिति गुरुखेदम्
शृणु मम वचनमनीहितभेदम् ॥६॥
हरिरुपयातु वदतु बहुमधुरम्
किमिति करोषि हृदयमतिविधुरम् ॥७॥
श्रीजयदेव–भणित–मतिललितम्
सुखयतु रसिकजनं हरिचरितम् ॥८॥

मान न करु वृषभानु दुलारी ।
माधव सों मधुरे मधु में मिलिये हृदय खोलि सुकुमारी ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऋतु वसन्त में पवन वहन लखि, आये हरि संकेत स्वयं सखि ।
जासों अधिक न सुख कोऊ गृह, जुवती जोवन वारी ॥२॥
इन सम कठिनु ताल के फलु क्यों, ऐसे कुंभकुचा निष्फल क्यों ।
देखति मत्त करति मोहनुकों, आलिगनु करि प्यारी ॥३॥
सुन्दर कृष्ण चन्द्रमा छोड़े, तिरस्कार करि करि मुख मोड़े ।
अव उनके कारन कांदत क्यों, जुवति हँसति दै तारी ॥४॥
मृदुनलिनी दल शीतल शैया, नयन सफलु अवलोकि कन्हैया ।
अधिक विकलु जिन होहु वात मम सुनहु कहूँ हितकारी ॥५॥
हियसों ग्रन्थि कोपुकी खोलौ, मधुर वचनु प्रीतम सों बोलौ ।
विनती मेरी मानहु राधे, कारजु बनहि सुखारी ॥६॥
धीरजु धरि विपदा क्यों पाई, जाको कारन है गरुआई ।
दीनु बने साधन फलु मिलि हैं, प्राननाथ परिवारी ॥७॥
श्रीजयदेव ललित रस वानी, रसिक वृन्द आनन्द विधानी ।
रामराय भगवानदास हितु, कृष्ण कथा अवतारी ॥८॥

स्निग्धे यत्परुषासि यत्प्रणमति स्तब्धासि यद्रागिणि
द्वेषस्थासि यदुन्मुखे विमुखतां यातासि तस्मिन्प्रिये
तद्युक्तं विपरीतकारिणि तव श्रीखण्डचर्चाविषं
शीतांशुस्तपनो हिमं हुतवहः क्रीडामुदोयातनाः ॥१॥

हरि विपरीत न कछु सुख पावो ।

गोपीनाथ मधुर हँस वोलैं तुम कटु वचनु सुनावो ॥
गोकुलनाथ करत विनती जव मूक सदृश वनि जावो ।
प्रेम भरें श्री मदनमोहन तुम वैरभावु झलकावो ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सन्मुख भये आपु मुख फेरी निजु इच्छा हठ लावो।
कृष्ण विरह कौ फलु जिह सामइ सुनें न जाहि सुनावो॥
चन्दनु लेपु दूर चन्दनु की चर्चा विख सम भावो।
रामराय रविशशी हिमानल केलि कलप दुख पावो॥१॥

सोहे कर जोर करि विनय निहोरि अति,
दीनता अधीन है मलीन मन प्यारे हैं।
तासों ऐसी निठुर कठोर है मरोर भोंह,
वैठी पींठ दैकें दीठ जोरत न तारे हैं।
याते चन्द चन्दन चितौन चरचत चित्त,
अतिहि अचेत होत देत दुख भारे हैं।
सुखद पियारे ताहि तू जो दुख देत याते,
तोहि दुख देत जेते सुखद तिहारे हैं।

अन्तर्मोहनमौलिघूर्णनमिलन्मन्दारविस्रंसन
स्तब्धाकर्षणदृष्टिहर्षणमहामन्त्रः कुरङ्गीदृशाम्
दृप्यद्दानवदूयमान–दिविषद्दुर्वारदुःखापदां
भ्रंसःकंसरिपोर्व्यपोहयतु वः श्रेयांसि वंशीरवः॥२॥

ब्रज नव तरुनि विहार कल्प तरु कुसुम मुकुट वरसे हैं।
दृष्टि मात्र थावर जंगम के आकरसन सरसे हैं॥
दानव गर्वं दलित देवन के दीरघ दुख करसे हैं।
रामराय माधव की मुरली सुन सव हिय हरसे है॥

मन मोहन मोहनी मंत्र तियानकी सोहनी गोहन लागी लसै।
मृदु वोल सुनें शिर डोलन ते गिरि फैलन फूलन की सरसै।
सुर संगम ते थिर जंगम होत चलाचल तें सवकों करसे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

असुरारिन के दुख हारि हरी अधरानि धुरी मुरली धुनि सैं ॥

दोहा—रसिक रसिक रस लेहु सब अरसिक रसिक सहाय ।
पाय पाय पथ दीजियो, रामराय वलिजाय ॥

इतिश्रीरसिकसम्प्रदायाद्याचार्य श्रीजयदेवमहाप्रभुप्रणीत-
श्रीगीतगोविन्दे मुग्धमुकुन्दोनाम नवमः सर्गः

* * *

(अथ चतुरचतुर्भुजो नाम दशमः सर्गः प्रारभ्यते)

अत्रान्तरे मसृणरोषवशादसीम–
निःस्वास निःसहमुखीं सुमुखीमुपेत्य ।
सव्रीडमीक्षितसखीवचनं दिनान्ते
सानन्दगद्गदपदं हरिरित्युवाच ॥१॥

रोषु भरी तेहि रोषु के कारन स्वासु न लेत भली विधि सों ।
साँझु समें निज लाल सखी मुख देखि रही जो भली विधि सों ॥
ऐसे सुभाबु के भावु भरी जिय प्यारी के पास भली विधि सों ।
श्रीमुरलीधर राधिका सों विनती करि जोर भली विधि सों ॥१॥
लखि प्यारी अति रोष मय सिसकत लेत उसासु ।
सखि सों है लखि हरि कहत गद्गद सजल गिरासु ॥

(एकोनविंशः प्रबन्धो देश वराडो रागेण अष्टताले गीयते)

वदसि यदि किञ्चिदपि दन्तरुचिकौमुदी
हरति दरतिमिरमतिघोरम् ।
स्फुरदधरसीधवे तववदनचन्द्रमा
रोचयति लोचनचकोरम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बोलत बोल अहो रस घोल अमोल तमोल कपोल लुनाई ।
या दशना बलि पै बलि जाऊँ निहारत धारत उज्जलताई ।।
लोचन कोर चकोर सुरोचन चोरन चित्त सुवित्त की नाई ।
देर अन्धेर न बाकी रहे मुखचन्द अमन्द जो देत दिखाई ।।१।।

प्रिये चारुशीले मुंच मयि मानमनिदानम् ।।
सपदि मदनानलो दहति मम मानसं ।
देहि मुखकमलमधुपानम् ।।ध्रु०।।१।।

सुन्दर शील सुभाव प्रभाव के भाव को भाव भयो भर भारी ।
कारन कौन जो मौन गह्यो मन मान निदान बतावो दुलारी ।
वलवान महा मदनानल वेकल मानस में वडवानल जारी ।
रक्षा करो मुख कंज सुधा मधुपान पिवाय जिवावन हारी ।।१।।

सत्यमेवासि यदि सुदति मयि, कोपिनी
देहि खरनखरशरघातम् ।
घटय भुजबन्धनं जनय रदखण्डनं,
येन वा भवति सुखजातम् ।।२।।

यदि सांचे ही रोष प्रदोष छली मुसकान उफान सों जाय ढली ।
मदनांगुलि के नख तीखे किये शरके फर घात करे सो भली ।।
इतने पैहू चित्त न चैन परे भुज दंडन मंडन बाँधि वली ।
रद सों मम गंडन खंडन को सुख लीजे अहो वृषभानु लली ।।२।।

त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनं
त्वमसि मम भवजलधिरत्नम् ।
भवतु भवतीह मयि सततमनुरोधिनी,
तत्र मम हृदयमतियत्नम् ।।३।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मम जीवन हो मम भूषन हो भव सागर पोत औ रत्न सही।
मम प्रान वसो सब भांति कसो सरसो दरशो रुचि यत्न लही॥
अनुरोध विरोध न कोऊ जहाँ निज वांछित पूर्ण करो अवही।
तन हो, मन हो, धन हो, कवहो, जवहो, तवहो, तुमही तुमही ॥३॥

नीलनलिनाभमपि तन्वि तव लोचनं,
धारयति कोकनदरूपम् ।
कुमशरबाणभावेन यदि रञ्जयसि
कुसुमष्णमिदमेतदनुरूपम् ॥४॥

ये मतवारे तुमारे प्रिये दृग नील जलोद्भव ओज भरे।
भये लाल प्रवाल सरोरुह हाल विहाल सुपाल मनोज धरे॥
मन वान प्रमान सुमान इन्हें तिय तान चलान की खोजखरे।
अनुमान सुजान प्रयोग करो निज प्रान के ऊपर जान परे॥४॥

स्फुरतु कुचकुम्भयोरुपरि मणिमंजरी,
रंजयतु तव हृदयदेशम् ।
रसतु रसनापि तव घनजघनमण्डले,
घोषयतु मन्मथनिदेशम् ॥५॥

कलसा-कुच कंचन के सुचिहार सो हीरन के हिय प्यार भरे।
दिवि देश रसेश अशेष रमा सुषमा की मंजरि मंजु गरे॥
रसना नव भाव प्रभाव भरी घन जंघन घोष सुढार ढरे।
तिहुँ लोक को शोक विजै करनी जह प्रेम कौ पंथ प्रचार करे॥५॥

स्थलकमलगंजनं मम हृदयरंजनं
जनितरतिरङ्गपरभागम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भण मसृणवाणि करवाणि चरणद्वयं,
सरसलसदलक्तकरागम् ॥६॥

रति रंग अनंग सुधंग महा सतसंग ब्रजांगना वृन्द धरू ।
नव बेलि लतावलि केलि सकेलि सुमेलि सुचित्रित चित्त हरूँ ॥
थल कंजन को कर गंजन जो मन रंजन कुंजन मध्य भरूँ ।
पिक वानि अहो निज पानिन सों पद द्वंद्व महाबर रंग करूँ ॥६॥

स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनं
देहि पदपल्लवमुदारम् ।
ज्वलति मयि दारुणो मदनकदनानलो,
हरतु तदुपाहितविकारम् ॥७॥

मन मन्दिर प्रेम को ताप तपे जहाँ विश्व विखानल मापियेजू ।
तेहि खण्डन मंडन चंड प्रचंड अखण्ड वड़े उपचापियेजू ॥
लव मात्र लगायेते लाभ मिले अहो लाडिली सो कर धापियेजू ।
सुर दुर्लभ श्रीपद पल्लव कों निज वल्लभ मस्तक थापियेजू ॥७॥

इति चटुलचाटुपटुचारुमुरवैरिणो,
राधिकामधिवचनजातम् ।
जयति जयदेवकविभारतीभूषितं,
मानिनीजनजनितशातम् ॥८॥

पिय राधा सुधानिधि मानिनिकों सुख शान्ति सदा सरसावन हो ।
पटु चाटुल चारु मुरारि कहे वचनामृत श्रीमन भावन हो ॥
जयदेव महाप्रभु भाव भरी रस भारती भूषित गावन हो ।
कमनीय कहाय श्रीराम के राय सिहाय सवै पद पावन हो ॥८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिहर कृतातङ्के शङ्कां त्वया सततं घन-
स्तनजघनयाऽऽक्रान्ते स्वान्ते परानवकाशिनि ।
विशति वितनोरन्यो धन्यो न कोऽपि ममान्तरं
स्तनभरपरीरम्भारम्भे विधेहि विधेयताम् ॥१॥

शंक विहाय निशंक बनों नहीं मेरे है तो विनु दूजी दुलारी,
कुम्भ समानु कठोर कुचा जघनस्थल चित्त बसे तजि सारी,
केवल काम कूं छोड़ कोउ मनमन्दिर वासू नहीं अधिकारी,
दीजे आलिंगन भारी अरी सुन मैं तेरो प्यारौ ओ तू मेरी प्यारी॥१॥

आनतिया भोग भूलि संभ्रम न कीजे तेरो,
मुख लख लीजे सुख दीजै दुख मेटिये ।
तू तो प्रति अङ्ग नख शिख में समानी मेरे,
औरकी न ठौर यह संभव लपेटिये ।
धन्य सो मदन ऐसे तनमें समानो नीठ,
यद्यपि अतन तन तापहि खखेटिये ।
सुखद शशांकमुखी शंक छोडि दैकें है,
निशंक यों अतंक तजि अङ्क भरि भेटिये ॥

कवित्त—जैसे चतुराई प्रेम रसु में विशेषु पगे,
वानी जयदेव जू की शोभा सरसाये हैं ।
मानवती नायिका समूह कों सुखौ ही करें,
त्याग कें कठोरताई हिये में समाये हैं ।
राधिका के तोष कों जो भाखे शिरी रामराय,
कृष्ण चन्द्रमाजू बड़े ऊँचे भावु भाये हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धन्य धन्य लीला जिह कुञ्ज के विहारीजू की,
धन्य जयदेव कविराजु राजु गाये हैं॥

मुग्धे विधेहि मयि निर्दयदन्तदंश–
दोर्वल्लिवन्धनिबिडस्तन पीडनानि।
चण्डि त्वमेव मुदमञ्चय पञ्चवाण–
चण्डालकाण्डदलनादसवः प्रयान्ति॥२॥

दन्त डशो करि निर्दय चित्त जो चूक भई कछु मोसों नवेली।
वन्धनु कीजे भुजा भरिकें दृढ़ बंधन बांधि रखो अलवेली॥
क्रोध तजो अववोधु भजो आनन्द प्रदान करों रस पेली।
कामु न प्रानु हमारे हरे तेहि पूर्व उरोजन देहु ढकेली॥२॥

विन दोषहि रोष कियो तो भले जल सारथ कीजिये धीजिये नाखिन।
भुज बेलिसों बांधिके ताडि हिये अनियारे उरोज न लागिये हा खिन॥
नख दन्त दृगन्तन सों कर धाइ वताइये नातरु जांउ कहीखिन।
मैन के पैने से वाण लगें अंसुआनि रहें अंसुआनिसों आखिन॥

शशिमुखि तव भाति भंगुरभ्रू
र्युवजनमोहकरालकालसर्पी।
तदुदितभयभञ्जनाय यूनां
त्वदधरसीधुसुधैव सिद्धमन्त्रः॥३॥

हे शशिकान्तमुखी सुनहो जिह कैसो अपूरव खेलु भयो।
जोर किशोर अवस्था भई तुव बांकी सी भोंहें कहा न कयो॥
सर्पिन रूप डसे जु हरी नहीं और उपाय कछू उलयो।
मंत्र महा अधरामृत है पुनि क्यों न पिवाओ जो कीर्ति छयो॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुटिल भौंह तेरी प्रिये नागिन लों डसलेत।
अधर सुधाता गरल को सिद्ध मंत्र हित हेत ॥

व्यथयति वृथा मौनं तन्वि प्रपञ्चय पञ्चमं
तरुणि मधुरालापैस्तापं विनोदय दृष्टिभिः।
सुमुखि विमुखीभावं तावद्विमुञ्च न वञ्चय
स्वयमतिशयस्निग्धो मुग्धेप्रियोऽहमुपस्थितः ॥४॥

हे कृश अङ्गि न भावे हमें जिह मौनु तिहारौ सदा रहिवो।
हे तरुणी मधुरे स्वर पंचम में बचनामृत को कहिवो ॥
नैंन प्रतापु जों तापु हरो हिय आनन्द सन्मुखता चहिवो।
वंचनु मोहि करो न प्रिये मैं तो आयो हूँ आप चहूँ गहिवो ॥४॥
मानिनि मान मनायो मयाकरि मौनहिं छाड़िदे तापस हों।
मधुरे स्वर वोल अमोल उचारि कपोलहु सोहैं हौं सोहै चहो ॥
मुर बैठी कहां मुख मोरि चित्तो मुसक्यान भरी दृग कोरन हों।
अति दीनता लीन अधीन है वीनती प्रीतिकी रीति सों तोसों कहों ॥

बन्धूकद्युतिवान्धवोऽयमधरः स्निग्धो मधूकच्छवि–
र्गण्डश्चण्डि चकास्ति नीलनलिनश्रीमोचनं लोचनम्।
नासाभ्येति तिलप्रसूनपदवीं कुन्दाभदन्ति प्रिये
प्रायस्त्वन्मुखसेवया विजयते बिश्वं स पुष्पायुधः ॥५॥

कवित्त—वन्धू वन्धूक के हैं सु अधर अनोखे लाल।
चिक्ने महुआ के फूल सम जे कपोल हैं ॥
श्यामल कमल नैनु नासा तिल पुहप रूप।
कुन्द की कली सी दन्त आवलि अमोल है ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कामु के हू पांच बान वने पांच पौहपन सों ।
तिनु को मुखादि अंगु अंगु सबु टोल है ॥
जाही जगु जीतवे को वलु पायो महा तेरे ।
मुखकंजु सेवा कीये फलति अतोल है ॥५॥

अधरे वंधूक पियूष भरेसे कपोल मधूकहि रूखे करैं ।
दृग नील सरोज से ओज भरे दुति कुन्दकी कुंद करी रद है ।
तिल फूल के तूल घनी अनुकूल बनी तुव नासिका देत धवै ।
कुसुमा युध जीत लई जगती जुवती तुव आनन आसरो लै ॥

दृशौ तव मदालसे वदनमिन्दुमत्यान्वितं
गतिर्जनमनोरमा विधुतरम्भमूरुद्वयम् ।
रतिस्तव कलावती रुचिर चित्रलेखे भ्रुवा
वहो विबुधयौवतं वहसि तन्वि पृथ्वीगता ॥६॥

यौन मदु मत्त नैन मुख हू सो चन्द्र सैन ।
मनु कों आनन्द देत गमन मराल है ॥
जंघा कदली सुखंभ रति कीड़ा कामरंग ।
चित्ररेखा तुल्य भोंहें सुन्दर विशाल हैं ॥
मदालसा इन्दुमती रंभा औरु कलावती ।
मनोरमा अपछरा जे पूरन गुन वाल है ॥
पृथ्वी पै वासु करि सबु को परिहास करे ।
राजति श्री रामराय स्वामिनी रसाल है ॥६॥

दृग मैन मदालसे भाते महा तन दीपसे दीपन जोति खरो ।
गति राजे रमा की मनोरमा अंसन रंभ के दंभ की शोभा हरी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रति रूप रतीक तिलोत्तमा तूल न चित्रलिखा भल भौहें करी।
विधि भूपै अनूप रची तिय तें सुरभूप सभा गुन रूप भरी ॥

प्रीतिं वस्तनुतां हरिः कुवलयापीडेन सार्धं रणे
राधापीनपयोधरस्मरणकृत्कुम्भेन सम्भेदवान् ।
पत्रे विभ्यति मीलति क्षणमपि क्षिप्रं तदालोकनाद्
व्यामोहेन जितं जितं जितमभूद्व्यालोलकोलाहलः ॥७॥

मांझ—कुवलय पीड़ हस्ति के मस्तक प्रिया उरोजु समारे।
मार्यो कंस प्रशंसा करि सबु व्रजगोपालु पुकारे ॥
श्री जयदेव देव भक्तनु की प्रीति बढ़ावें प्यारे।
रामराय सो चतुर चतुर्भुज दशम सर्ग सुख भारे ॥१॥

जनको जय कीजिये जे रण में कुवलय गज पीडित कुंभ सुता के।
आइ गई हरि कों सुध ता छिन पीन पयोधर प्राण प्रिया के ॥
मोह भयो पुनि स्वेद छयो पुनि चौंकि लये पलमें असुआ के।
कीन्हें वृथा पल में सव जेते कुलाहल हू अति कंस सभा के ॥

इति श्रीजगन्नाथदेवावतार श्री जयदेव महाप्रभु वंशोद्भव-
परमहंसावतंस दार्शनिक सार्वभौम श्रीरामराय
गोस्वामि प्रणीतायां पद्यावल्यां दशमः सर्गः

* * *

॥ अथ सानन्द दामोदरोनाम ॥

एकादशः :सर्गः

सुचिरमनुयेन प्रीणयित्वा मृगाक्षीं
गतवति कृतवेशे केशवे कुञ्जशय्याम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रचितरुचिरभूषां दृष्टिमोषे प्रदोषे
स्फुरति निरवसादां कापि राधां जगाद ॥१॥

कवित्त—प्रेम भरी वोलनि सों करिकें प्रसन्न चित्त।
राधा मृगु नैनी कोसो विधिना संभारे है ॥
अंधकार भरी सांझि अपनो सिंगारु सजि।
केशव हू कुञ्ज केलि सिज्जा में पधारे हैं ॥
ताही छिनु प्यारी जू को मूखन नवीनु धरि।
वसनु विचित्र सखी वृन्द हू सिगारे हैं ॥
ललिता मलूक महा रामराय कहे कहा।
मेरी महारानी जू कों वचन उचारे हैं ॥

रुचि सों रुचि रूप सराह उछाहन वात वनायके चायसों प्रीतिकी।
भौंह चलाय नचायकें नैन करी गुरु दीठि वचाय सुनीति की।
मंजुल कुंजन वेष बनाय सहेट सिधारनि मोहन मीति की।
भूषण भूषित प्रान प्रियासों कह्यो सखि सांझ समय रस रीति की ॥

(अथ विंशः प्रबन्धो वसन्तरागेण रूपताले गीयते)

विरचितचाटुवचनरचनं चरणे रचितप्रणिपातम्।
सम्प्रति मञ्जुलवञ्जुलसीमनि केलिशयनमनुयातम् ॥१॥
मुग्धे मधुमथननुगतमनुसर राधिके ॥ध्रु०॥
घनजघनस्तनभारभरे दरमन्थरचरणविहारम्।
मुखरितमणिमंजीरमुपेहि विधेहि मरालनिकारम् ॥२॥
शृणु रमणीयतरं तरुणीजनमोहनमधुरिपुरावम्।
कुसुमशरासनशासनबन्दिनि पिकनिकरे भज भावम् ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनिलतरलकिसलयनिकरेण करेण लतानिकुरम्बम् ।
प्रेरणमिव करभोरु करोति गतिं प्रति मुञ्च विलम्बम् ॥४॥
स्फुरितमनङ्गतरङ्गवशादिव सूचितहरिपरिरम्भम् ।
पृच्छ मनोहरहारविमलजलधारममुं कुचकुम्भम् ॥५॥
अधिगतमखिलसखीभिरिदं तव वपुरपि रतिरणसज्जम् ।
चण्डि रणितरशनारवडिण्डिममभिसरसरसमलज्जम् ॥६॥
स्मरशरसुभगनखेन करेण सखीमवलंब्य सलीलम् ।
चल वलयक्वणितैरवबोधय हरिमपि निजगतिशीलम् ॥७॥
श्रीजयदेवभणितमधरीकृतहारमुदासितवामम् ।
हरिविनिहितमनसामधितिष्ठतु कण्ठतटीमविरामम् ॥८॥

पद—श्री राधे सुन बात हमारी ।
बहु प्रकार मृदु वचन विलासी, तव पद कंजु नवत सुखराशी ।
शीघ्र निकट तिनके जु पधारो, निधुवन शयन विहारी ॥१॥
हे धनु जघनी पीनइस्तनी, धीरे धीरे पदु धर धरुनी ।
मनि नूपुर धुनि हंसा गमनी, चल पिय पास पियारो ॥२॥
तरुनी जनु मोहनु व्रतु प्यारो, मुरली धुनि गावत मत वारो ।
काम वन्दि कोकिल छवि धारो, बोलहु मधुर उचारी ॥३॥
हे करभोरु सुनों सुखबानो, लता भवन चलु पल्लवु पानी ।
कर संकेत कहत रस खानी, देहु विलम्ब निकारी ॥४॥
जदि विश्वास न मोर सहेली, काम तरंग कंप कुच मेली ।
सूचित हरि आलिंगन केली, हीर हार जल धारी ॥५॥
रति रनु हेतु सजी सबु भाँती, तजि लज्जा किंकिनि धुनि माती ।
क्रोधु छांडि धारहु मनु शान्ती, हम सब सखी तिहारी ॥६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मदनु मत्त मोह् नाहिं सुनावहु, कंकन धुनि आगमनु जनावहु।
कामु बान सम नख के भावहु, चलि सखि हाथ समारी ॥७॥
श्रीजयदेव रचित रत्ना वलि, लज्जाकारी ललित पदावलि।
रामराय जुबती करि घायलि, भक्त गान सुखकारी ॥८॥

सा मां द्रक्ष्यति वक्षति प्रियकथाँ प्रत्यङ्गमालिङ्गनैः
प्रीतिं यास्यति रंस्यते सखि समागत्येति चिंताकुलः।
स त्वां पश्यति वेपते पुलकयत्यानन्दति स्विद्यति
प्रत्युद्गच्छतिमूर्च्छति स्थिरतमः पुञ्जे निकुञ्जे प्रियः।१।

पद—सखि तोहि बात कहों समुझाई।
अन्धकार मय कुञ्जभवनु में बैठे पिय कों चिन्ता छाई।
बिकल बिचारत प्यारी मोकों मधुर वचनु बोलेगी॥
पुनि सबांग करें आलिंगन परिरंभन डोलेंगी।
जा विधि बिविध मनोरथ करि करि तुम्हें देखि कांपे हैं॥
प्यारी मोहि कहा अबु कहि है ध्यानु धरत झाँपे हैं।
अंग परस रोमांच जुक्त है रति रसु बस थकि जावें॥
श्रम जलु विन्दु भयो तर विग्रह ध्यानु मध्य सबु भावें।
कबहुँ खड़े आदर सों देखे अलखु भये सुधि त्यागें।
देर न कर अनुरक्त महा तोहि रामराय अनुरागें॥
हँसि मुसकाय उरलाय कब लेहें बोलि,
रस वरसाय अंग तापन सहत है।
प्रीतिहि वढ़ाय चित चायन रचाय नेह,
कब सुख देहें तन अतन दहत है।
ऐसे अभिलाख लाख भाँति मन छाय न,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुहाय दिन रैन छिन शोचत रहत है।
ध्याय तुव मुख लखि पुलकि सरीर स्वेद,
कम्प मोह तंभ एक बारही दहत है।

अक्ष्णोर्निक्षिपदंजनं श्रवणयोस्तापिच्छगुच्छावलिं
मूर्ध्नि श्यामसरोजदाम कुचयोः कस्तूरिकापत्रकम्।
धूर्तानामभिसारसत्वरहृदां विष्वङ् निकुंजे सखि
ध्वान्तं नीलनिचोलचारु सुदृशां प्रत्यङ्गमालिङ्गति ॥२॥

आनन में जानिये मयंक अंक शंक तजि,
कानन में ठीक अलकावलि जो पेखिये।
वारन में हारन में नील मनि मानें मन,
नैनन में सैनन में काजर की रेखिये।
दन्तन के अन्तन में श्यामता की सन्धि यों,
उरोजन सरोजन में मृगमद लेखिये।
प्रीतम सों मीत मन धरिचल रीति भये,
तेरे तन नीलपट लपट्यो सो देखिये।

काश्मीरगौरवपुषामभिसारिकाणा--
माबद्धरेखमभितो मणिमंजरीभिः।
एतत्तमालदलनीलतमं तमिस्रं
तत्प्रेमहेमनिकषोपलतां तनोति ॥३॥

प्यारी सुनु जिहि विनय विशाला।
कज्जल नैनु तमाल गुच्छ श्रुति पहिरो नील कमल शिरमाला।
नीलु निचोल अन्धेरो कों करि कुच कस्तूरो रचना जाला॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केशर सम जिन गौर वरनु तन तिन को होय कसौटी अन्धाला ।
सुवरन ज्यों त्यों तहाँ परीक्षा सुवरन को निकषी तम माला ।।
सहजु होइ सिंगार सोई जिह विलमु न करहु अशेष रसाला ।
रामराय अभिलाषा भारी भरे बिराज रहे नन्दलाला ।।२-३।।

केशरि से तन घन तिमिर मणिगण भूषण धार ।
कनक कसौटी रेंख सचि अभिसरि एहि अभिसार ।।

हारावलीतरलकाञ्चनकाञ्चिदाम--
केयूरकङ्कणमणिद्युतिदीपितस्य ।
द्वारे निकुंजनिलयस्य हरिं निरीक्ष्य
व्रीडावतीमथ सखी निजगाद राधाम् ।।४।।

रा ह्रीके हार सुवर्ण की किंकिनि मोती के जामें जराव जराये ।
कंकन मंडित नाना मनिन सों ऊपर वाजू के वन्द जुराये ।।
कुञ्ज के द्वार निहार श्री नन्दकुमार कौ लज्जित नैन लजाये ।
ताई समें कोऊ प्यारी सहेली ने प्यारे सों प्यारे जे वैन सुनाये ।।४।।

मणि किंकिणि कंकण नूपुरहार हमेल धरे तनमें दुलही ।
चलि नेम को नेम लिये पिय ओर चकोर लों चंद्रमुखी सुलही ।
हरि मंजुल कुंज के द्वार निहार हरीमति सो पियधारो रही ।
लखि लाज गडो सी वडो अंखियानकी तासों सखी यों विनंति कही ।।

(अथैकविंशतितमः प्रवन्धो वाराडीरागेण आढवताले गीयते)

मंजुतरकुञ्जतलकेलिसदने ।
विलस रतिरभसहसितवदने ।।
प्रविश राधे माधवसमीपमिह ।।१।।ध्रु०।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवभवदशोकदलशयनसारे ।
विलस कुचकलशतरलहारे ॥२॥
कुसुमचयरचितशुचिवासगेहे ।
विलस कुसुमसुकुमारदेहे ॥३॥
मृदुचलमलयपवनसुरभिशीते ।
विलस रसवलितललितगीते ॥४॥
विततबहुवल्लिनवपल्लवघने ।
विलस चिरमिलितपीनजघने ॥५॥
मधुमिलितमधुपकुलकलितरावे ।
विलस मदनरभसरसभावे ॥६॥
मधुरतरपिकनिकरनिनदमुखरे ।
विलस दशनरुचिरुचिरशिखरे ॥७॥
विहितपद्मावतीसुखसमाजे ।
कुरु मुरारे मंगलशतानि,
भणति जयदेवकविराजराजे ॥८॥

श्री राधे भीतर पग धारो ।

सुन्दर कुञ्ज सदन के आंगन केलि भवन भावना विचारो ।
रति क्रीड़ा उत्साह हास जुत मुदित मुखी माधव प्रभु पारो ॥
कनक कलश कुच चञ्चल मुक्ता हारावलि त्रिवली तट धारो ।
कुसुम समूह सुगन्ध लतागृह तुव अङ्ग पुष्प समाना ॥
सरस गीत गान्धर्व मलयज पवनु सदन मन प्राना ।
मदन रसास्वादन के कारन सरस हृदय सुखसाजी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रस पीवन को भये इकत्रित मधुप तहाँ अति राजी ॥
दन्त कान्ति की दमक मनिद्युति जहाँ कोकिला वोलें ॥
ऋतु वसन्त सों चञ्चलु कूजित है रही विविध कलोलें ।
पद्मावति सुखदायक हरि गुन गायक श्री जयदेवा ।
कविराजनु के राजु दीजिए रामराय कों सेवा ॥८॥

त्वां चित्तेन चिरं वहन्नयमतिश्रान्तो भृशं तापितः
कन्दर्पेण च पातुमिच्छति सुधासम्बाधविम्वाधरम् ।
अस्यांकं तदलंकुरु क्षणमिह भ्रूक्षेपलक्ष्मीलव-
क्रीते दास इवोपसेविपतदाम्भोजे कुतः सम्भ्रमः ॥१॥
सा ससाध्वससानन्दं गोविन्दे लोललोचना ।
सिञ्जाना मञ्जुमञ्जीरं प्रविवेश निवेशनम् ॥२॥

श्री राधे सुनु माधवु को हाल ।
प्रेमु पंकु में धसि रसरागी भये तहां वेहाल ॥
वेस अनेक तुम्हें हियु धारत काम ताप सों श्रान्त ।
पीवत चहत सुधा विम्वाधर गोद विठाइ नितान्त ॥१॥
भृकुटि कटाच्छ लच्छ पद सेवक लीने मोहनु मोल ।
अव हिय में संकोच न कीजे मिलौ गांठ सब्रु खोल ॥
श्रीहरि विषय नैन चञ्चलु चलि लज्जा सह आनन्द ।
रामराय नूपुर धुनि करती केलि कुञ्ज निर्द्वन्द ॥२॥

पिय प्यारो तुम्हें चिरलों चितधार थक्यो छविमारन कातर है ।
तन तापर ताप रच्यो अति मंन के प्यास के त्रास ते आतुर है ।
रस पीवो चहै सुख सों अधरान को आनन तेरो सुधा धर हे ।
विन मोल ही मोल लियो सो लसे तिन सों हँस वोल कहा डर है ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भय आनंद युत लाल पै वाल नवाये नैन।
वजत मंजु मंजीर चलि मिली लजावन मैन ॥

(अथ द्वाविंशतितमः प्रबन्धो वराडीरागेण रूपकताले गीयते)

राधावदनविलोकनविकसितविविधविकारविभङ्गम् ।
जलनिधिमिव विधुमण्डलदर्शनतरलिततुङ्गतरङ्गम् ॥
हरिमेकरसं चिरमभिलषितविलासम् ।
सा ददर्श गुरुहर्षवशंवदवदनमनंगविकाशम् ॥१॥ध्रु०॥
हारममलतरतारमुरसि दधतं परिलम्बितदूरम् ।
स्फुटतरफेनकदम्बकरम्बितमिव यमुनाजलपूरम् ॥२॥
श्यामलमृदुलकलेवरमण्डनमधिगतगौरदुकूलम् ।
नीलनलिनमिव पीतपरागपटलभरवलयितमूलम् ॥३॥
तरलदृगञ्चलचलनमनोहरवदनजनितरतिरागम् ।
स्फुटकमलोदरखेलितखञ्जनयुगमिवशरदि तडागम् ॥४॥
वदनकमलपरिशीलनमीलितमिहिरसमकुण्डलशोभम् ।
स्मितरुचिरुचिरसमुल्लसिताधरपल्लवकृतरतिलोभम् ॥५॥
शशिकिरणच्छुरितोदरजलधरसुन्दरकुसुमसुकेशम् ।
तिमिरोदितविधुमण्डलनिर्मलमलयजतिलकनिवेशम् ॥६॥
विपुलपुलकभरदन्तुरितं रतिकेलिकलाभिरधीरम् ।
मणिगणकिरणसमूहसमुज्ज्वलभूषणसुभगशरीरम् ॥७॥
श्रीजयदेवभणितविभवद्विगुणीकृतभूषणभारम् ।
प्रणमत हृदि प्रणिधाय हरिं सुचिरंसुकृतोदयसारम् ॥८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निरखत प्रिया प्रानपति शोभा।
निज मुख चन्द दरश अह्लादित उच्छल निधि सम लोभा ॥
देख चन्द मंडलु कों चञ्चल उज्जवल रस विधि नाना।
केवल प्रिया प्रीति के पोसक तेहि विहार मधि प्राना ॥१॥
काम भावु परिपूर्ण भये वस परमानन्द उपासी।
फेनिल जमुना जलु सम हीरा हारु धारु सुख राशी ॥२॥
पीत पराग समूह पीत पटु नील कमलु तनु राजे।
शरद प्रफुल्ल कमलु मधि क्रीडत खंजन जनु जलु साजे ॥३॥
तरल तडाग तरङ्ग कटाच्छन छोड़त श्री मुख सो है।
रति अभिलाषित भामिन को मन कामु उदय करि मोहै ॥४॥
मुख सरोज दर्शन हित चलु दलु कुण्डलु शोभा साजी।
मृदु मुसकन विम्वाधर लखि रति हेतु भई सवु राजी ॥५॥
चन्द्र किरन शोभित घन अन्तर कुसुम सुशोभित केशी।
तिमिर उदितु विधु मण्डल निर्मल चन्दन तिलक सु वेशी ॥६॥
रोमां चितु तनु आलिंगन मनु मनि भूषित सज्जित तन।
इक टक निरखत हरषित राधा मदनमोहन निजु जीवन ॥७॥
श्री जयदेव महाप्रभु वरननु सों दूने आभुषन।
रामराय रस रत्न पूर्ण निज पुण्य करो हिय धारन ॥८॥

अतिक्रम्यापांगं श्रवणपथपर्यन्तगमन–
प्रयासेनेवाक्ष्णोस्तरलतरतारं पतितयोः।
इदानीं राधायाः प्रियतमसमालोकसमये
पपात स्वेदाम्बुप्रसर इव हर्षाश्रु निकरः ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोहा—प्रीतम के दर्शन समें राधा नैन अपांग।
करन कुहर पर्यन्त भै सीमा सहज उलांघ ।।
प्रेम भरे आनन्द सों वरसावत रसधार।
मनु प्रस्वेद प्रवाह है कौन करे निरधार ।।१।।

आछे कटाच्छ मृगाक्षिन के तजि कान जे कानन लों चलि आये।
तासों भयोश्रम भारी थके दृग चंचल तारे प्रयासन छाये।।
ताहि परिश्रम स्वेद के पूर वढ़े मनो आय खरे सरसाये।
प्यासो निहारिके प्यारी को आँखिन आनंद के अंसुआ भर आये।।

भजन्त्यास्तल्पान्तं कृतकपटकण्डूतिपिहित—
स्मितंयाते गेहाद्बहिरवहितालीपरिजने।
प्रियास्यं पश्यन्त्याः स्मरशरवशाकूतसुभगं
सलज्जा लज्जापि व्यगमदिव दूरं मृगदृशः ।।२।।

कान खुजानो वहानो किये मुंसकानु भरी सगरी सखियाँ।
प्रेमु प्रिया प्रनयी वतियां परजंकु चढ़े रति की अखियां।
कुञ्ज के वाहिर श्रीमतियाँ भई लाजु को लाजु इन्हें लखियां।
श्रीमुख चन्द विलोकि प्रिया पिय कौनु को कौनु कहे सुखियाँ ।।२।।

प्यारी सखि न्यारी भई जव मिस कर मुसिकाय।
मदन तुरत पिय वदन लखि खूटी लाज लजाय ।।

जयश्रीविन्यस्तैर्महित इव मन्दारकुसुमैः
स्वयं सिन्दूरेण द्विपरणमुदामुद्रित इव।
भुजापीडक्रीडाहतकुवलयापीडकरिणः
प्रकीर्णासृग्बिन्दुर्जयति भुजदण्डो मुरजित ।।३।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोहा—हते कुवलया पीड की रुधिर विन्दु संग्राम।
मनों मुदित सिन्दूर रंगु लेपनु कियो ललाम॥
जयलक्ष्मी वरसा किये पारिजात के फूल।
तिन सों पूजित कृष्ण भुज मेटें भक्तन शूल॥
श्रीजयदेव दया करी दरशायो सुख कन्द।
रामराय शिव सर्ग जहं रसानन्द गोविन्द॥

इति श्रीसारस्वत कुलाब्धिकौस्तुभ श्रीजगदीश अवतार श्रीजयदेव महाप्रभु वंशोद्भव दार्शनिक सार्वभौम श्रीरामराय गोस्वामि प्रणीतायां श्रीगीतगोविन्दं प्रियायां सानन्दगोविन्दनामैकादश सर्गः।

★

अथ—द्वादशः सर्गः

गतिवति सखीवृन्देऽमन्दत्रपाभरनिर्भर–
स्मरशरवशाकूतस्फीतस्मितस्नपिताधरम्।
सरसमनसं दृष्ट्वा राधां मुहुर्नवपल्लव–
प्रसवशयने निक्षिप्ताक्षीमुवाच हरिः प्रियाम्॥१॥

दोहा—कुंज भवनु वाहिर भई जब सबु सखी समाजु।
मदन वेग वश हँस रही श्री राधा अति लाज॥१॥
मन्द मन्द मुसक्यान में दिये अधर मनु पाग।
पल्लव सिज्जा दीठ दे बदति कृष्ण अनुराग॥२॥
लहि एकान्त छुटि सकुच कछु मदन मुदित मुसिकात।
अरसौंही तिय मोपिया सोहैं यो वतरात॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अथ त्रयोविंशातितमः प्रबन्धो विभासरागेणएकतालीताले गीयते)

किसलयशयनतले कुरु कामिनि चरणनलिनविनिवेशम्
तव पदपल्लववैरिपराभवमिदमनुभवतु सुवेशम् ।।
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर मां राधिके ।।१।।ध्रु०।।
करकमलेन करोमि चरणमहमागमिताऽसि विदूरम् ।
क्षणमुपकुरु शयनोपरि मामिव नूपूरमनुगतिशूरम् ।।२।।
वदनसुधानिधिगलितममृतमिव रचय वचनमनुकूलम् ।
विरहमिवापनयामि पयोधररोधकमुरसि दुकूलम् ।।३।।
प्रियपरिरम्भणरभसवलितमिव पुलकितमतिदुरवापम् ।
मदुरसि कुचकलशं विनिवेशय शोषय मनसिजतापम् ।।४।।
अधरसुधारसनुपनय भामिनि जीवय मृतमिव दासम् ।
त्वयि विनिहितमनसं विरहानलदग्धवपुषमविलासम् ।।५।।
शशिमुखि मुखरय मणिरशनागुणमनुगुणकंठनिनादम् ।
मम श्रुतियुगले पिकरवविकले शमय चिरादवसादम् ।।६।।
मामतिविफलरुषा विकलीकृतमवलोकितुमधुनेदम् ।
मीलितलज्जितमिवनयनं तव विरम विसृज रतिखेदम् ।।७।।
श्रीजयदेवकवेरिदमनुपदनिगदितमधुरिपुमोदम् ।
जनयतु रसिकजनेषु मनोरमरतिरसभावविनोदम् ।।८।।

सुनु सुन्दर प्रिय पद पल्लव कों पलुभर पल्लव शैया जू ।
पधरावो निजु समता को फलु दीजै जाहि दलैया जू ।।१।।
पगु मगु थकित भई हो तासों निज कर कमल दबाऊं जू ।
गति अति धोर वीर नूपूर श्रम सुख सिज्जा पधराऊं जू ।।२।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वदन सुधानिधि सों रस वतियां पीबत अति हर साऊं जू।
विरह सदृश वक्षस्थल अंचल हठे उरज सरसाऊं जू ॥३॥
मम आलिंगन हित सन्मुख है रोमांचित मेरे सम जू।
और हि अलभु उरोज लागि मोहि दूर करो मदन श्रम जू ॥४॥
विरह दवानल व्याकुल दासहि भामिनि जोवित चाओ जू।
तो आसक्त चित अपने में अधर सुधारस प्याओ जू ॥५॥
चन्द्रमुखी निजु कण्ठ गीत समु किंकिनि शव्द सुनाओ जू।
कोकिल कूक त्रिकल बिरही कों सुखमय शांत वनाओ जू ॥६॥
निष्फल कोप विकल भये मोकों लखि लज्जित सम वंदे जू।
नैनु खोलकरि रमनु संग मम दीजै परमानन्दे जू ॥७॥
पदु पदु में आनन्द रसदाता श्रीजयदेव वनायो जू।
रामराय श्रीकृष्णचन्द्र सुख हित भगवान सुनायो जू ॥८॥

प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निविडाश्लेषे निमेषेण च
क्रीडाकूतविलोकितेऽधरसुधापाने कथाकेलिभिः।
आनन्दाधिगमेन मन्मथकलायुद्धेऽपि यस्मिन्नभू–
दुद्भूतः स तयोर्बभूव सुरतारम्भः प्रियं भावुकः ॥१॥

पद—श्रीराधा माधव सुरतारंभु।

गाढ़ालिंगनु रोमु विघनु सम नैन कटाच्छ दच्छ कों दंभु ॥
अधर सुधा रस पान करन में बचनु रचन भावत न विडंव।
रामराय सोहै न कला कोऊ आनन्द आह्लादिनि परिरंभ ॥१॥
दम्पति रति आरंभ में पुलक निमिष रस वैन।
भेटत मुख देखत अधर पीवत अन्तर दैन ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

दोर्भ्यां संयमितः पयोधरभरेणापीडितः पाणिजै-
राविद्धो दशनैः क्षताधरपुटः श्रोणीतटेनाहतः ।
हस्तेनानमितः कचेऽधरमधुस्यन्देन सम्मोहितः
कान्तः कामपि तृप्तिमाप तदहो कामस्य वामा गतिः ॥२॥
मारांके रतिकेलिसंकुलरणारंभे तया साहस-
प्रायः कान्तजयाय किञ्चिदुपरि प्रारम्भि यत्सम्भ्रमात् ।
निष्पन्दा जघनस्थली शिथिलिता दोर्वल्लिरुत्कम्पितं
वक्षो मीलितमक्षि पौरुषरसः स्त्रीणां कुतः सिद्धयति ॥३॥

रति विपरीत पिया पिय भावे ।
सुरति समरु में सुभट लाडिलो विजय मेलि जिह खेल दिखावे ।
भुज बन्धन में बांधि बिधी कों जुगल उरोजन सों पुनि दावे ।
नखछत करति अधर रस मोहति पकरि केश कटि तटहि नचावे ॥
श्रम सों शिथिलु जघनु वच्छस्थल ढीली भुजा हियो धरकावे ।
नैन वृन्द आनन्द मगनु भई प्यारो पूर्ण तृप्ति सुखु पावे ।
रामराय पौरुष रसभारी ताकों प्यारी निजहि जनावे ॥२-३॥

अधखुली पलक पुलक झलकत तन,
झलक वदन की रदन छवि छाई हैं ।
आलस वलित अंग कलित अनंग रंग,
ललित अभंग द्युति दृगन समाई है ।
उरज उतंग की फरक खरकत हिय,
धरक तियाकी रति आदि अन्त भाई है ।
ऐसी मृगनेनी सुखदेनी धरणी तल में,
धन्य गिरिधर न जिन उरन लगाई है ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तस्याः पाटलपाणिजांकितमुरो निद्राकषाये दृशौ
निर्धूतोऽधरशोणिमा विलुलितस्रस्तस्रजो मूर्धजाः।
काञ्चीदामदरश्लथाञ्चलमिति प्रातर्निखातैर्दृशो–
रेभिः कामशरैस्तदद्भुतमभूत् पत्युर्मनः कीलितम् ॥४॥

रतिरस चिह्न अनोखे मोहै।
प्रिया उरोजु लगीं नख रेखा जनु शिव शीश चन्द्रदलु सोहैं॥
रैन जागरन नैन अरुण भये चुम्बन अरुन लाल सों सेत।
केश पास कुसुमावलि विथकित शिथिल किंकिनी कटी समेत॥
मदन पंचशर लगे प्रिया के वेध्यो मदन मोहनु को जाय।
रामराय जो निरखत वश भये अद्भुत सुख कहते न बनाय॥४॥
साहसिकें हसिके रसके वश प्राणप्रिया विपरीत रची।
हरिमीत से पीतम सीतन हेत संकेत के खेत में युद्ध मची।
थकि जंघथली शिथली भुजकंप हियो दृग झंपिते डीठ लची।
रस पौरुष सिद्ध न होइतिये जिय ढीली लजीली चितौन खची॥

त्वामप्राप्य मयि स्वयम्वरपरां क्षीरोदतीरोदरे
शंके सुन्दरि कालकूटमपिबन्मूढो मृडानीपतिः।
इत्थं पूर्वकथाभिरन्यमनसो विक्षिप्य वामाञ्चलं
राधायाः स्तनकोरकोपरि लसन्नेत्रो हरिः पातु वः ॥५॥

मोहनु को मनु नांहि अँघावे।
प्रिया उरोज सरोज निरखिवे हितु कछु चातुर बात बनावे॥
हे सुन्दरि छीरोदधि तट पर मोहि स्वयं तुमने वर लीनों।
तुम्हें न देखि भवानी पति ने दुख सों विष को भच्छन कीनो॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जा विधि भोरी नवल किशोरी इकटक ठाढ़ी करीं विहारी ।
रामराय नैननु सुख लीनों वसनु हटाय मिटाय चिहारी ॥५॥
छीरनिधि तीर नीरनिधि सुता कीन्हों वर,
वरन स्वयंवर दिगंबर न भायो हैं ।
ताते मोह पाइ छोह छाइ अति कीनो कोह,
द्रोह चितधारि हर काल कूट खायो है ।
ऐसे जह बात सुधि छाइ दई पूरब की,
सुधि बुधि भूलि तिय हिय अकुलायो है ।
घाटी कों उघाटी उर अंचल लखन लागे,
होहु ते सहाय अति आनंद बढायो है ।

व्यालोलः केशपाशस्तरलितमलकैः स्वेदलोलौ कपोलौ
स्पष्टा दष्टाधरश्री कुचकलसरुचा हारिता हारयष्टिः ।
काञ्ची काञ्चिद्गताशां स्तनजघनपदं पाणिनाच्छाद्य सद्यः
पश्यन्ती चात्मरूपं तदपि विलुलितस्त्रग्धरेयं धिनोति ॥६॥

जिह सिंगार न क्यों मनु करसे ।
जाको देखि विश्व को सुन्दर परम तृप्ति मानति अति हरसे ॥
केशपास विलुलित अलकावलि चंचल श्रमकन ललित कपोलु ।
विंधे अधरु पल्लव की शोभा त्रुटित कंचु कुचहारु अमोलु ॥
कटि करधनी चली निज थल सों जघन सघन कर पल्लव दाव ।
दूजे कर आच्छाद उरोजन रमन कमन जह सहज सुभाव ॥
टूटी लर लटकत मोती की चोटी की मर्दित बनमाल ।
रामराय ऐसी प्यारी लखि माधवलाल भये बेहाल ॥६॥
नख अंकित अंक उरोजन के दृग सोहें लसें अरसोंहे खरे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विथुरे छवि भारन वार वड़े सुथरे उर हार ते फूल झरे।
अधरान ते पान के रंग सुधारस संगही पीतम पान करे।
लखि काम के वान लगे दृग आनन जानकें प्रानके वेध हरे॥

ईषन्मीलितदृष्टि मुग्धहसितं सीत्कारधारावशा-
दव्यक्ताकुलकेलिकाकुविकसद्दन्तांशुधौताऽधरम्।
श्वासोत्कम्पिपयोधरोपरि परिष्वङ्गात्कुरङ्गीदृशो
हर्षोत्कर्षविमुक्तनिःसहतनोर्धन्यो धयत्याननम्॥७॥

कौन विहारी सम बड़भागी।

वामु केलि उत्कंठा समुदित श्वास चलित उरजनु अनुरागी॥
आलिगन सों अधिक हर्षवश शिथिल कार्य अच्छम मृगनैनी।
अधखुले नैन मुखाम्बुज मुसकनि सीतकार सों मनु घनु लैनी॥
प्रगट न करे हृदय व्याकुलता किन्तु कछुक बातनु मुख भाखे।
दशन किरन सुख सदन वदन लखि रामराय पूरन तप चाखे॥७॥

गाढे भरि अङ्क है निशंक शंक मेटिवे में,
अङ्क न छुटत देत रोम हरषन ये।
दृग देखवे कों कलप विहाय पल,
कलन परन देत पलक एकन ये।
अधर सुधाधरतें मधुर सुधा सेवन की,
साधन सधत सुनि सरस वचन ये।
पुलक चहै न अङ्ग पलक बनैन नैन,
वैन रस ऐन भये सघन विघन ये।

अथ निर्गतबाधा सा राधा स्वाधीनभर्तृका।
निजगाद रतिक्लान्तं कान्तं मण्डनवाञ्छया॥८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इति सहसा सुप्रीतं सुरतान्ते सा नितान्तखिन्नाङ्गी ।
राधा जगाद सादरमिदमानन्देन गोविन्दम् ॥६॥

दोहा—सुरत अन्त स्वाधीन पति प्यारी सब विधि शान्त ।
प्यारे सों श्रम हरनु हित वदति वचनु एकान्त ॥१॥
हे प्यारे हे प्रानपति हे बल्लभ सुकुमार ।
अब मेरो उपचार करि करु सुन्दर सिंगार ॥२॥

(अथ चतुर्विंशतितमः प्रबन्धो रामकरीरागेण यतिताले गीयते)

कुरु यदुनन्दन चन्दनशिशिरतरेण करेण पयोधरे ।
मृगमदपत्रकमत्र मनोभवमङ्गलकलशसहोदरे ॥१॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने ॥ध्रु०॥
अलिकुलगञ्जनसञ्जनकं रतिनायकसायकमोचने ।
त्वदधरचुम्बनलम्बितकज्जलमुज्ज्वलय प्रिय लोचने ॥२॥
नयनकुरङ्गतरङ्गविलासनिरोधकरे श्रुतिमण्डले ।
मनसिजपाशविलासधरे शुभवेष निवेशय कुण्डले ॥३॥
भ्रमरचयं रचयन्तमुपरि रुचिरं सुचिरं मम सम्मुखे ।
जितकमले विमले परिकर्मणि नर्मजनकमलकं मुखे ॥४॥
मृगमदरसबलितं ललितं कुरु तिलकमलिकरजनीकरे ।
विहितकलंककलं कमलानन विश्रमितश्रमशीकरे ॥५॥
मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद मनसिजध्वजचामरे ।
रतिगलिते ललिते कुसुमानिशिखण्डिशिखण्डकडामरे॥६॥
सरसघने जघने मम शम्बरदारणवारणकन्दरे ।
मणिरशनावसनाभरणानि शुभाशय वासय सुन्दरे ॥७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजयदेववचसि शुभदे हृदयं सदयं कुरु मण्डने।
हरिचरणस्मरणामृतनिर्मितकलिकलुषज्वरखण्डने ॥८॥

हे जदुनन्दन करहु सिंगार।

कामदेव मंगल कुच कलशन, चन्दन शीतल निजु करु कमलन।
केलि लिखो कस्तूरी पत्रक मकरी बेल सुचार ॥१॥
काम कटाच्छ वानु से रोचक, त्वदधर चुम्बन कज्जल मोचक।
मधुप समूह समान बनावहु कज्जल रेखा प्यार ॥२॥
हे शुभ वेष नैन हरिनन के, सुख विलास रोधक श्रवनन के।
मदन मनोहर पास सदृश कुण्डल पहिरावहु सार ॥३॥
अलकावलि अलिकुल सम जोहे, निर्मल मुख मंडल भलि सोहे।
केश पास गूंथहु कंघी ले धीरे धीरु सुधार ॥४॥
रतिश्रम स्वेद बिन्दु के धारक, अर्धचन्द के 'चिह्न' स्मारक।
कमल समान सुकोमल मुख पिया मृग मद तिलक समार ॥५॥
कामदेव ध्वजचौर सहेली, मोर पिच्छ की मानहु वेली।
वैनी ढीले भये फूल फिर दीजै मानु अपार ॥६॥
काम मत्त मद हस्थि मन्दरा, रस सिंगार गम्भीर कन्दरा।
जघन देश मनि किंकिन भूषन वसनु धराउ उदार ॥७॥
कृष्ण ध्यान धारा कलिजुग में, भक्त पाप नाशक जग मग में।
रामराय भूषन सम धारहु, श्री जयदेव उचार ॥८॥

रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयो--
र्धटय जघने काञ्चीमञ्च स्रजा कबरीभरम्।
कलय वलयश्रेणीं पाणौ पदे कुरु नूपुरा--
वितिनिगदितः प्रीतः पीताम्बरोऽपि कथाकरोत् ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ मांझ ॥

कुच फल पत्र कपोल चित्र लिख कटि कांची पहिरावो ।
केश पाश कुसुमनु सों गूथो कर कंकनजु धरावो ॥
चरन कमल नुपूर घन सुन्दर पीताम्वर सुख पावो ।
रामराय प्यारी भाखन सुनि कियो तासु मनभावो ॥१॥

पर्यङ्कीकृतनागनायकफणश्रेणीमणीनां गणे
सङ्क्रान्तेप्रतिबिम्बसङ्कुलनया बिभ्रद्वपुर्विक्रियाम् ।
पादाम्भोरुहधारिवारिधिसुतामक्ष्णां दिदृक्षुः शतैः
कायव्यूहमिवाचरन्नुपचिताकूतो हरिः पातु वः ॥२॥

पलका पन्नग राजु वनायो ताकी मनि परछाँई ।
सेवति चरनु कमलु कों कमला कला अनेक दिखांई ॥
ताही विधि अगनित स्वरूप हरि अगनित नैन निकाई ।
मदनु सदनु श्री जो कों निरखति रामराय सुखदाई ॥२॥

यद्गान्धर्वकलासु कौशलमनुध्यानश्च यद्वैष्णवं
यच्छृङ्गारविवेकतत्त्वरचना काव्येषु लीलायितम् ।
तत्सर्वं जयदेवपण्डितकवेः कृष्णैकतानात्मनः—
सानन्दाः परिशोधयन्तु सुधियः श्रीगीतगोविन्दतः ॥३॥

जो गान्धर्व कला सप्तस्वर राग रंग चतुराई ।
राधामाधव ध्यान धारना नव नव कुञ्ज रचाई ॥
रस सिंगार भेद की रचना श्री जयदेव वनाई ।
राम चित्त इकतान कृष्ण दुइ गीत गोविन्द लखाई ॥३॥

श्रीभोजदेवप्रभवस्य राधादेवीसुतश्रीजयदेवकस्य ।
पराशरादिप्रियवर्गकण्ठे श्रीगीतगोविन्दकवित्वमस्तु ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सारस्वत द्विजवंश प्रशंसित भोज देव गुनु भारी।
श्री राधापत्नी कों संग ले बसे बंग रुचिकारी॥
तहां भये जयदेव रूप धरि श्री जगदीश मुरारी।
रामराय तिन श्यालु पराशर गीत गोविन्द लिखारी॥४॥

साध्वी माध्वीक चिन्ता न भवति भवः शर्करे कर्कशासि
द्राक्षे द्रक्ष्यन्ति के त्वाममृतमृतमसि क्षीर नीरं रसस्ते।
माकन्द क्रन्द कान्ताधर धरणितलं गच्छ यच्छन्तिभावं-
यावच्छृङ्गारसारस्वतमिह जयदेवस्य विष्वग्वचांसि॥५॥

महुआ मत चिन्ता कर शर्कर तो में कर्कश तांई।
दाख तोहि देखेंगे अब को सुधा धरा में नांई॥
खीर नीर रस कान्ताधर तू धरनि रसालु रुवाई।
जब तक श्री जयदेव देव की भूतल पर रसिकाई॥५॥
द्वादश सर्ग कुञ्ज द्वादश सम राधामाधव राई।
कविनृप चक्रवर्ति करुना करि तिनु की लीला गाई॥
जह सु प्रीत पूर्व पीताम्बर नामक सृष्टि वनाई।
रामराय निज कुल की रचना वड़े भागसों पाई॥६॥
संवत सोलह सो वाईसा ऋतु वसन्त सरसाई।
माधव मास राधिका माधव की जह लीला गाई॥
जमुना तट अद्वैत निकट वट मदन गोपाल सहाई।
रामराय श्री वृन्दावन की अति अद्भुत प्रभुताई॥७॥

इति श्रीजगदीशावतार श्रीजयदेवमहाप्रभुवंशोद्भव दार्शनिक-सार्वभौम, रसिकसम्प्रदायाचार्य श्रीरामरायगोस्वामीप्रभु प्रणीतायां श्रीगीतगोविन्द प्रियायांपदावल्या सुप्रीत-पीताम्बरो नामद्वादशसर्गः समाप्तः।

* * *

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

❀ श्रीराधामाधवाष्टकम् ❀

आनन्दः परमानन्दः पूर्णानन्दः परात्परः ।
प्रेमानन्दादिसन्दोहः श्रीराधामाधवो मम ॥१॥
धर्मार्थकामसमोक्षाणां स्मृतिमात्रेण दायकः ।
बुद्धिव्यामोहकः साक्षात् श्रीराधामाधवो मम ॥२॥
राकरोराधिका धाम मकारो माधवेङ्गितः ।
रामनामाधाररूपः श्रीराधामाधवो मम ॥३॥
साकारः सर्वदासोऽयं निराकारो नहि क्वचित् ।
सदा गोलोक निलयः श्रीराधामाधवो मम ॥४॥
सुखनाम्ना स्वयं सर्वान् कर्षति हृदयङ्गमः ।
कृष्णनामावतारी सः श्रीराधामाधवो मम ॥५॥
व्रजवृन्दावनानन्दी नित्यः श्रीनन्दनन्दनः ।
गोपी गोपालकप्रेष्ठः श्रीराधामाधवो मम ॥६॥
जयदेवस्वरूपेण स्वगानकरणोत्सुकः ।
गीतगोविन्दरसधीः श्रीराधामाधवो मम ॥७॥
रावलग्रामसम्प्राप्तस्तातपादकृतादरः ।
कृपासिन्धुः दीनवन्धुः श्रीराधामाधवो मम ॥८॥
जयदेवतनूजेन कृष्णेनाष्टकमद्भुतम् ।
कृतं तेन प्रसन्नोहि श्रीराधामाधवो मम ॥९॥

इति श्रीसारस्वतद्विजकुलाब्धिकौस्तुभ भगवच्छ्री जयदेवमहाप्रभुतनूज रसिकाचार्य श्रीकृष्णदेव गोस्वामिप्रभुप्रणीतं श्रीराधामाधवाष्टकं समाप्तम् ।

—★—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

❀ श्रीजगन्नाथाष्टकम् ❀

कदाचित्कालिन्दीतटविपिनसङ्गीतकरवो
मुदाभीरीनारीवदनकमलास्वादमधुपः
रमा शंभु ब्रह्मा सुरपतिगणेशार्चितपदो-
जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥१॥
भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपुच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्तं सहचरि कटाक्षं विदधते।
सदा श्रीमद्वृन्दावनवसति लीला परिचयो जग०॥२॥
महाम्भोधेस्तीरे कनक रुचिरे नील शिखरे
वसन्प्रासादान्तः सहज बलभद्रेण बलिना।
सुभद्रा मध्यस्थः सकल सुरसेवावसरदो जग० ॥३॥
कथा पारावारः सजल जलद श्रेणि रुचिरो
रमावाणी रामस्फुरदमल पद्मेक्षण मुखैः।
सुरेन्द्रै राराध्यः श्रुतिगण शिखागीत चरितो जग०॥४॥
रथारूढो गच्छन् पथिमिलित भूदेव पटलैः
स्तुतिप्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः।
दयासिन्धुर्बन्धुः सकल जगतां सिन्धुसुतया जग०॥५॥
परब्रह्मापीडः कुवलयदलोत्फुल्लनयनो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निवासिनीलाद्रौ निहित चरणोनन्त शिरसि ।
रसानन्दो राधा सरसवपुरालिङ्गनसुखी ।।जग० ६।।

नवैंप्राथ्यै रज्यं नचकनकतांभोग विभवं
न याचेहं रम्यां निखिल जनकाम्यां वरवधूम् ।
सदा काले-काले प्रमथपतिना गीत चरितः।।जग०७।।

हरत्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते
हरत्वं पापानां विततिमपरां यादवपते ।
दीनोद्धारिन्ननुलतु सुखलाभायभगवन्
जगन्नाथस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।जग० ८।।

प्रभो भोजः श्रीमत्प्रियपदसरोजस्मरणधीः-
सुधी धीरादेशोत्सव विभव सन्दर्शनसुखी ।
तदेवान्तर्यामी विदधदिह सन्तापशमनं
जगन्नाथस्वामी नयनपथगामी भवतुमे ।।जग० ९।।

इति श्रीहरदेवसूनुभोजदेवप्रणीतं सन्ततिदायकं—
श्रीजगन्नाथाष्टकं समाप्तम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकुंजेविहारिभजनाष्टकम्

यो मार्गशीर्ष सित पंचमिका प्रभाते,
जातोवने निधुवने हरिदास भक्त्या ।
नृत्याकृतौ प्रकटितं द्वयमेकरूपं,
कुंजे विहारिपदपद्मयुगं भजेहम् ॥१॥

यंफाल्गुने कुसुम किंशुकरंग रागं,
रागानुगाः परिचरन्ति महानुरागात् ।
चैत्रीयपाटलगृहे परिदोलयन्तं,
कुंजे विहारिपदपद्मयुगं भजेहम् ॥२॥

येनार्चितेन तुलसी दल चन्दनाभ्यां,
प्रत्यक्ष दर्शन कृतेन कृताः कृतार्थाः ।
तं वज्रकेतु कमलांकुश चक्रचिह्नं,
कुंजे विहारिपदपद्मयुगं भजेहम् ॥३॥

यस्मै कदम्ब कदली रचितं सदश्वैः,
संयोजितं रथमकारि सुगोपिकाभिः ।
तीरे यमी जल विहार निषिंचितं तं,
कूंजे विहारिपदपद्मयुगं भजेहम् ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्मात् रसाल तरु मंजुल रज्जु दोलात्,
हिन्दोलयन्ति घनगर्जित केकिनृत्ये ।
मल्लार गान गल कोकिल गोपबाला,
कुंजे विहारिपदपद्मयुगं भजेहम् ॥५॥

यस्यास्ति जन्मनिधनादि विधौ निषेधो,
जन्माष्टमी भवति तस्य महाद्भुतस्य ।
आराधितेन सह राधिकया मिलन्तं,
कुंजे विहारिपदपद्मयुगं भजेहम् ॥६॥

यस्मिन् सुरेन्द्र वसुधेन्द्र नरेन्द्र जाता,
सक्ताः फले विविध जन्म तपोभिरुग्रैः ।
वेणु स्वनेन रमणेन रसे निमग्नाः,
कुंजे विहारिपदपद्मयुगं भजेहम् ॥७॥

हे नाथ वासव सवेन कृताभिषेक,
गोविन्द भुक्तनिज भक्त महान्नकूट ।
नीराजितं गिरिवरे बहुदीपदानैः,
कुंजे विहारिपदपद्मयुगं भजेहम् ॥८॥

वसुश्लोकैं राधापति पद यशोगानमुदितं,
पठेद् गोस्वामि श्रीविबुध यमुनावल्लभकृतम् ।
जगद्भोगान् भुक्त्वा तदनु रसिकेशस्य चरणं,
लभेत् लीला लोलं ललित ललिता लालितमलम् ॥९॥

★

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi